यूरोप

की श्रेष्ठ कहानियाँ

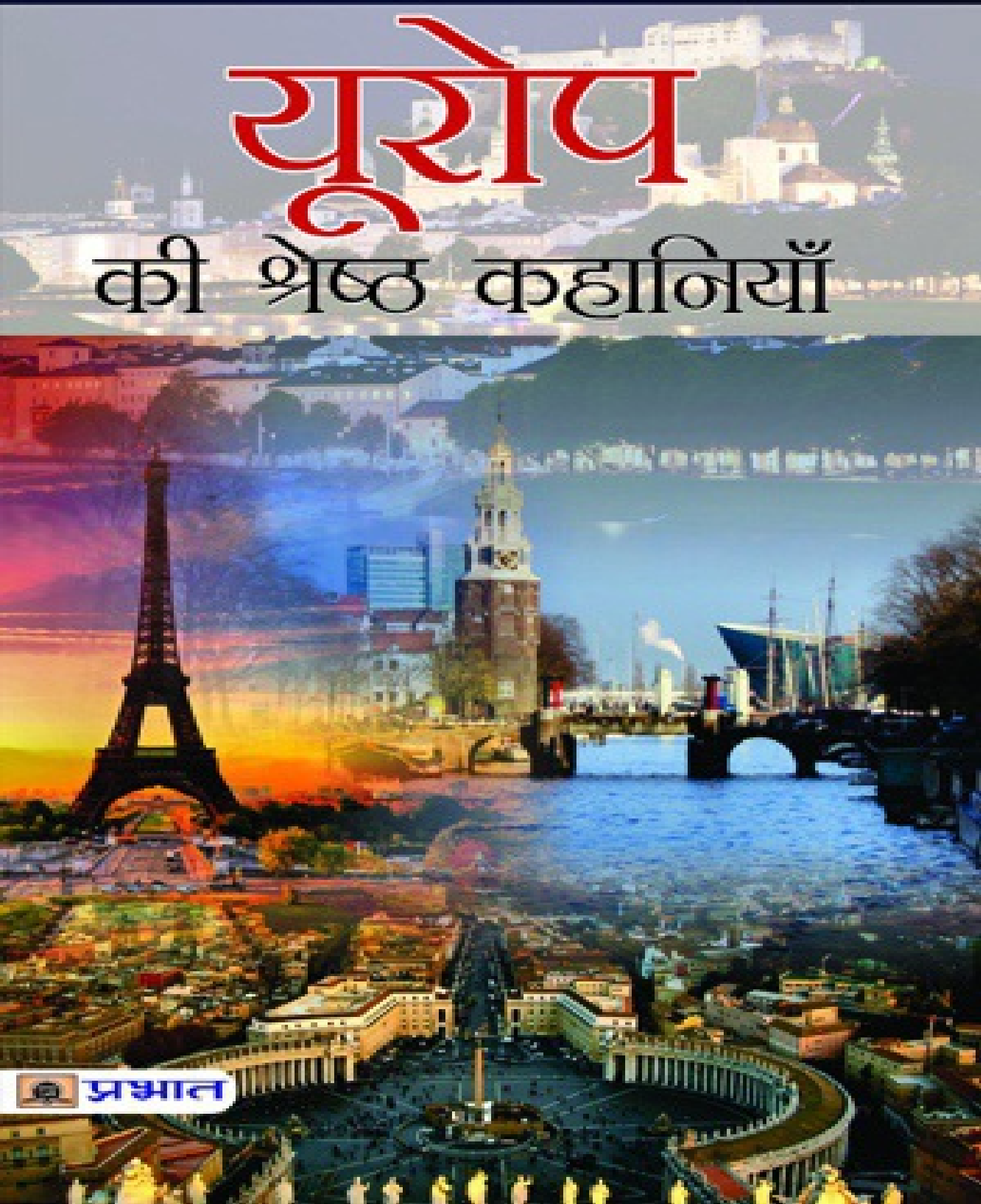

प्रभात

यूरोप की श्रेष्ठ कहानियाँ

भद्रसैन पुरी

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

समर्पण

अपूर्व रामभक्त
छोटी बहन स्व. कांता सहगल
जिसने आजीवन मुझे पिता का आदर दिया
और अंत में
निर्धनों की सहायता करते-करते
श्रीराम के चरणों में समा गई, को
प्यार और श्रद्धा के साथ।

— भद्रसैन पुरी

दो शब्द

यह हिंदी का दुर्भाग्य है कि इसमें विश्व की अनेक भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य के अनुवाद का पूर्ण अभाव है। अंग्रेजी में संसार के किसी भी प्रतिभावान् लेखक की कृति का, चाहे वह किसी भाषा में हो, अनुवाद मिल जाता है। अंग्रेजी भाषा इस दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है जबकि हिंदी के क्षेत्र में बहुत कुछ करना बाकी है।

मुझे प्रसन्नता है कि मेरे प्रिय बंधु श्री भद्रसैन पुरी ने एक अहिंदीभाषी होते हुए भी, मोमासाँ, समरसेट तथा ओ' हेनरी की कहानियों के साथ-साथ जर्मन तथा रूसी की प्रसिद्ध कहानियों का अनुवाद करके कथित अभाव को थोड़ा-बहुत दूर करने का प्रयास किया है। पता चला है कि अब वह स्पेन की प्राचीन कहानियों के अनुवाद-कार्य में रत हैं। बयासी वर्ष की आयु में भी उनके ये प्रयास प्रशंसनीय ही माने जाएँगे।

परम पिता परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि वह श्री पुरी को स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें और जिस काम को उन्होंने हाथ में लिया है, उसे करते चले जाएँ, करते चले जाएँ। मेरा हार्दिक आशीर्वाद!

ओ३म् तत् सत्।

—स्वामी उत्तमप्रकाशानंद सरस्वती

अनुवादकीय

प्रसिद्ध विदेशी कहानियों के हिंदी अनुवाद की शृंखला में अब यूरोप के कुछ देशों की प्रसिद्ध कहानियों का अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। इन देशों में मुख्यत: स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क, जर्मनी, फिनलैंड, हॉलैंड, स्पेन, रूस, पोलैंड, फ्रांस, हंगरी, सर्बिया, रूमानिया, इंगलैंड तथा तुर्की की केवल प्रतिनिधि प्राचीन कहानियों को यहाँ समाविष्ट किया गया है। जर्मनी, रूस, स्पेन, फ्रांस एवं इंगलैंड की प्रसिद्ध कहानियों को छोड़कर बाकी देशों की प्रसिद्ध कहानियाँ इतनी संख्या में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाईं कि प्रत्येक देश की प्राचीन कहानियों की पृथक्-पृथक् पुस्तक बनाई जा सके। फिर भी इस दिशा में प्रयास जारी है।

इन कहानियों का चयन करने के लिए अनुवादक को स्थानीय पुस्तकालयों और अनेक दूतावासों के अधिकारियों से सहायता लेनी पड़ी तथा उनके मूल्यवान परामर्श के सौजन्य से ही इन कहानियों को प्रतिनिधित्व की गरिमा दी गई। इसके लिए मैं उन सबका आभारी हूँ।

कहानियों का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कहानी छोटी, परंतु रोचक हो तथा उस समय के अपने देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति की परिचायक हो, ताकि पाठकवृंद उसे थोड़े समय में समाप्त कर सकें और साथ-ही-साथ उस देश के साहित्य की प्रामाणिकता के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपना ज्ञानवर्धन कर सकें।

कहना न होगा कि दूरदराज के देशों में रहनेवालों की भावनाओं, उनके उद्‌गारों, उनकी इच्छाओं एवं रुचियों को समझने के लिए तथा उनके रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा इत्यादि की जानकारी के लिए अनुवाद ही एकमात्र साधन प्रतीत होता है, भले ही अनुवाद मौखिक हो या लिखित। अत: अनुवाद में वह शक्ति है जो विदेशियों को परस्पर समझने में मदद करती है। दूसरे शब्दों में विश्वबंधुत्व की भावना को जाग्रत कर सकती है। अत: मानव के सामाजिक जीवन में अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और दूरवासियों को निकटवासी बनाता है।

इन कहानियों का अनुवाद करते समय इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा बोधगम्य और सामान्य हिंदी जाननेवाले व्यक्ति की भाषा हो, ताकि पाठक उसे पढ़ने में अधिकाधिक आनंद प्राप्त कर सकें। ऐसा करते हुए कहानीकार के मौलिक विचारों को यथावत् प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। हाँ, कहीं-कहीं मौलिक शब्दों के हिंदी में समानार्थक शब्द न मिलने के कारण समापवर्त्य अथवा पारिभाषिक शब्दों से सहायता अवश्य लेनी पड़ी, परंतु सीमा में ही रहकर।

स्वामी उत्तमप्रकाशानंदजी सरस्वती और मेरी पौत्री सुश्री पूजा पुरी भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अनेक प्रकार से इस काम में मेरी सहायता की।

—भद्रसैन पुरी

आशाएँ

— प्रेडिका ब्रेमर (स्वीडन)

बिना अधिक कष्ट उठाए जीवन के कठिन पथ पर घूमने का मेरा विलक्षण ढंग था; भले ही शारीरिक एवं नैतिक दृष्टि से मैं प्राय: नंगे पाँव ही घूमता था। मैं आशा करता था; प्रतिदिन मेरी प्रात:कालीन आशाएँ सायंकाल पर निर्भर रहती थीं, सायंकाल की प्रात:काल पर; पतझड़ की आशाएँ वसंत पर और वसंत की पतझड़ पर; इस वर्ष की अगले वर्ष पर, और इस प्रकार केवल आशाओं के बीच, तमाम अभावों के साथ, मैंने जीवन के लगभग तीस वर्ष गुजार दिए। तो भी बाहर खुली हवा में मैंने आसानी से अपना ढाढस बँधाया, परंतु ड्राइंग रूम में मुझे हमेशा अपनी एडियों के सुन्न भाग के कारण दु:खदायी रूप में मुड़ना पड़ता। वस्तुत: मेरे लिए यह एक अधिक कठिन साधना थी कि मैं दुर्गति के क्षणों में केवल दयालु शब्दों से ही ढाढस बँधा सकता था।

हजारों व्यक्तियों की तरह मैंने भाग्य-चंद्र पर आशाजनक दृष्टि डालते हुए इस दार्शनिक टिप्पणी के साथ संतोष किया कि 'जब समय आता है, सलाहकार भी आ जाता है।'

देहाती पादरी के विनीत सहायक के नाते, अल्प वेतन और बहुत कम सुविधाओं के साथ, गाली-गलौज करनेवाले गृहस्वामी के अधीन, नैतिक रूप से मलिन होते हुए, शराबी पादरी द्वारा जान-बूझकर मूर्ख बनते हुए, मूर्ख और भद्र युवकों के बीच तथा घर की उन बेटियों के साथ जो गर्वीले कंधोंवाली थीं, सुबह से रात तक मैं मिलने-मिलाने में लगा रहता था। मुझे कोमलता एवं प्रसन्नता का अद्‌भुत अनुभव हुआ, जब मेरे एक परिचित ने मुझे लिखा कि स्टाकहोम में मेरे चाचा मरचीट पी., जिसको मैं ठीक-ठीक नहीं जानता था और जो अब मरने वाला था, ने रोग के आवेश में पारिवारिक प्यार से अपने निकम्मे भतीजे की बाबत पता किया।

एक छोटी सी गठरी और लाखों बहुमूल्य आशाएँ लिये कृतज्ञ भतीजे ने देहात में चलनेवाली बहुत ही कष्टदायक गाड़ी में ऊपर-नीचे हिलते हुए सफर शुरू कर दिया और हलचल मचाता राजधानी पहुँच गया।

जिस सराय में मैं रुका वहाँ अपने लिए थोड़े—केवल थोड़े नाश्ते का ऑर्डर दिया—मामूली सा—थोड़ी डबल रोटी और कुछ अंडे।

मकान मालिक और एक मोटा भद्र पुरुष कमरे में इधर-उधर घूम रहे थे।

''नहीं, मैं यह जरूर कहूँगा, '' मोटे भद्र पुरुष ने कहा, ''यह मरचीट पी., जो परसों मर गया, भला पुरुष था।''

''हाँ, हाँ, '' मैंने विचार किया—''आह, एक भला पुरुष, जिसके पास काफी धन था! सुनते हो, मेरे मित्र? (बेयरे से) क्या तुम मेरे लिए हिरन का मांस या वैसी ही कोई ठोस डिश ला सकते हो? सूप का एक कप लाना मत भूलना, सुनते हो? जरा जल्दी!''

''हाँ, '' मेजबान ने कहा, ''यह काफी बड़ी राशि है। छह हजार पाउंड! समस्त संसार में कोई भी व्यक्ति छह हजार का स्वप्न नहीं देख सकता!''

''छह हजार पाउंड, '' मैंने अपनी प्रसन्न आत्मा से दोहराया—''छह हजार! सुनते हो बेयरा? जल्दी करो, मुझे छह हजार...नहीं, मेरा मतलब है, एक गिलास शराब दो।''

और तुरही की हर ताल के साथ बार-बार मेरे अंदर सिर से लेकर दिल तक गाया गया—'हजार, छह हजार!'

''हाँ, '' मोटे भद्र पुरुष ने कहना जारी रखा—''क्या तुम विश्वास करोगे कि उधार की राशि में एक सौ अस्सी पाउंड कटलटों के लिए और एक हजार पाउंड रौंप्पन के लिए थे और अब उसके तमाम लेनदार अपने मुँह खोले

मुस्तैदी से खड़े थे; घर में रखी सारी वस्तुओं का मूल्य मुश्किल से आधी पैनी होगा और घर के बाहर क्षतिपूर्ति के नाम पर केवल हवाखोरी के लिए गाड़ी थी!''

''ओह, यह कुछ भिन्न ही है! सुनते हो जवान बेयरा! ऐ, यहाँ आओ! यह मांस, जूस और शराब पुनः ले जाओ, और सुनो, ठीक तरह से जाँच लो कि मैंने इनमें से एक लुकमा भी नहीं खाया। मैं खा भी कैसे सकता था; प्रातः जब से मैंने अपनी आँख खोली है, खाने के सिवा कुछ किया है क्या? (एक भयानक झूठ) और अब मुझे खयाल आता है कि इस प्रकार के भोज के लिए खर्च करना अनावश्यक है।''

''परंतु तुमने वास्तव में इसके लिए ऑर्डर दिया है।'' बेयरे ने उत्तेजना की स्थिति में उत्तर दिया।

''मेरे मित्र, '' मैंने उत्तर दिया और अपने आपको कान के पीछे पकड़ा; कान वह स्थान है जहाँ व्याकुलता की स्थिति में एक तरह की जरूरी सहायता मिल जाती है—''मेरे मित्र, यह मेरी गलती थी जिसके लिए मुझे दंड मिलना चाहिए, लेकिन यह मेरा दोष नहीं था कि एक धनी उत्तराधिकारी, जिसके लिए मैंने नाश्ते का ऑर्डर दिया था, वह एकाएक गरीब हो जाए; हाँ, कई शैतानों से भी अधिक गरीब! क्योंकि वह आधे से भी अधिक अपने वर्तमान साधन भविष्य के लिए खो चुका है। वह इन परिस्थितियों में, जिनका तुम अनुमान लगा सकते हो, इतने महँगे नाश्ते का मूल्य नहीं दे सकता, फिर भी जो अंडे मैंने नष्ट कर दिए हैं, उनका मूल्य देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं और जो कष्ट तुमने उठाया है उसके लिए भी उत्तम चीज दे सकता हूँ, क्योंकि जरूरी काम के कारण मुझे यहाँ से तुरंत जाना होगा।''

श्रेष्ठ तर्क और 'उत्तम चीज' से मैंने अपने दुःखी दिल को सांत्वना दिया और पानी भरे मुँह से उस प्यारे नाश्ते को अपने गले से हटा दिया। फिर अपनी छोटी गठरी को हाथ के नीचे दबाया और सस्ते मकान की तलाश में शहर में आगे बढ़ गया, यह सोचते हुए कि इसके लिए पैसे कहाँ से लाऊँगा।

आशा और वास्तविकता में प्रबल टक्कर के परिणामस्वरूप मेरे सिर में दर्द हो गया, परंतु भ्रमण करते हुए मैंने फीतों और सितारों से सजे एक भद्र पुरुष को अपनी शानदार गाड़ी से उतरते देखा—उसका रंग हलका पीला था, गहरी झुर्रीदार भौंहों में कुत्सित रसिकता का बोध होता था। वह युवा काउंट था, जिससे मेरी जान-पहचान उपसाला विश्वविद्यालय में हुई थी। आयु और जीवन की थकावट के कारण वह इस तरह चल रहा था कि अब नाक के बल गिर जाएगा। यह देखकर मैंने अपना सिर थाम लिया और वायु को अंदर खींचा जो दुर्योग से उस स्थान पर भुने जा रहे एक कबाब की गंध से भरी हुई थी जो मानो निर्धनता तथा स्वच्छ हृदय की प्रशंसा से भरी थी।

अंत में, दूर एक गली में एक छोटा सा मकान मुझे मिल गया जो मेरी आशाओं की अपेक्षा अंधकारमय भविष्य से अधिक उचित था।

मैंने स्टाकहोम में शरद् ऋतु व्यतीत करने की आज्ञा ले ली थी और जैसी आशा की जाती थी, उसके विपरीत किसी दूसरे ढंग से व्यतीत करने के लिए मैंने सोचा, परंतु करना क्या होगा? साहस खो बैठना सबसे बुरी बात है। खाली हाथों से आकाश की ओर ताकना भी बहुत अच्छा नहीं है। 'भले कोई आशा करे या न करे, सूर्य को तो उदय होना ही है।' नगर के ऊपर शरद् ऋतु के भारी बादलों को मँडराते हुए देखकर मैंने सोचा। पेस्टरजी की रक्षा के जो रुग्ण साधन उपलब्ध थे, उनकी अपेक्षा भविष्य में कुछ प्रीतिकर साधनों के साथ अच्छी जीविका अर्जित करने के लिए सभी साधनों का प्रयोग करने का मैंने निश्चय किया और इस बीच प्रतिदिन की बातों को—दुःखी हितकर बातों को दुःखी परिस्थितियों में लिखने का भी।

ईमानदारी से खोखले सिरों की खोखली उपज को लिखनेवाले पेशे में ऐसे कानों को ढूँढ़ने के लिए, जो बहरे न हों, मैंने व्यर्थ के प्रयासों में दिन गुजारे। मेरे भोजन में कमी होने तथा बढ़ती हुई आशाओं के साथ, एक सायंकाल

मैंने अपने पंचांग पर क्रॉस का चिह्न लगा दिया।

मेरा मेजबान मुझे अभी-अभी प्यारी चेतावनी देकर गया है कि पहले चतुर्मास का किराया कल तक अदा कर दूँ और यदि नहीं करता हूँ तो अपने सामान के साथ नगर की सड़कों पर मुझे इधर-उधर भटकना पड़ेगा।

नवंबर की अवर्णनीय शरद्। रात के आठ बजे थे जब मैं अपने एक बीमार मित्र के लिए वस्तुत: बिना सोचे-समझे अपना बटुआ खाली करके लौटा था और आते ही ये प्यारी बातें मुझे सुननी पड़ी थीं।

मैंने अपनी पतली मद्धिम मोमबत्ती को अपनी अंगुलियों से बुझाया; कमरे को इस तरह निहारा जैसे भविष्य में मुझे यहाँ सोने-बिछाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

नि:श्वास लेते हुए मैंने एक लोकोक्ति दोहराई और धीरे से खिड़की के पास पड़ी लंगड़ी मेज को अपनी ओर खींचा—खिड़की के बाहर वर्षा और हवा रुकने का नाम नहीं लेती थी। उस समय मेरी दृष्टि रसोई में तेज जलती हुई आग की तरफ गई जो मेरे उस बदहाल कमरे के सामने थी और जिसकी अँगीठी इतनी काली थी जितनी वह हो सकती थी।

खाना बनानेवाले, मर्द और औरतों के सामने वे प्रसन्नचित्त व्यक्ति थे, जिनको वे खाना परोस रहे थे। मैंने गुप्त इच्छा से जलती आग के साथ खेलना चाहा। मैंने विचार किया कि लोहे के बरतनों और तसले-कड़ाहियों के बीच आग की चमक चिमटे को डंडे की तरह थामे, अपने देदीप्यमान राज्य में महारानी की तरह खड़ी थी।

एक मंजिल ऊपर, खिड़की से, जिसको किसी ईर्ष्यालु परदे ने नहीं ढका था, मैंने तेज रोशन कमरे को देखा, जहाँ चाय की मेज, जिसपर प्याले और डबल रोटी की टोकरियाँ रखी थीं, के इर्दगिर्द कई परिवार बैठे थे।

सरदी और नमी से मेरा सारा शरीर थक गया। मैं नहीं कह सकता कि वह भाग, जिसको सामान रखने का गोदाम कह सकते हैं, कितना खाली था, परंतु आह, ईश्वर भला करे! मैंने विचार किया कि वह सुंदर लड़की, जो मोटे भद्र पुरुष को चाय-अमृत और श्रेष्ठ कीमती रस्क दे रही है और जो संतुष्टि के कारण सोफे से पीठ नहीं लगा सकता है, यदि अपना प्यारा हाथ थोड़ा बढ़ा दे तो हजारों चुंबन मिल जाएँ—मगर व्यर्थ! संतुष्ट भद्र पुरुष अपना प्याला लेता और रस्क को इस अनंत धीरज से उसमें तर करता है जैसे वह शराब हो। अब रमणीय लड़की उससे आलिंगन करती है। मैं हैरान हूँ कि वह उसका प्यारा पिता है, या चाचा या...। आह, ईर्ष्यालु मर्त्य! परंतु नहीं, यह बिलकुल संभव नहीं है; वह उससे कम-से-कम चालीस वर्ष बड़ा है। देखो, वह वास्तव में उसकी पत्नी होगी—बड़ी महिला जो उसके पास सोफे पर बैठी है और जो छोटी महिला को रस्क देती है। बड़ी महिला अति प्रतापी दिखाई देती है लेकिन वह अब किसके पास जा रही है? मैं उस व्यक्ति को देख नहीं सकता। खिड़की में सेएक कान और कंधे का थोड़ा हिस्सा ही नजर आता है। मैं इसको वास्तव में भ्रम नहीं कहूँगा कि सम्माननीय व्यक्ति मेरी ओर पीठ मोड़ लेता है, परंतु वह उस छोटी महिला को पंद्रह मिनट अपने सामने खड़ा रखता है, उसका अभिवादन करता है और अच्छी चीज भेंट करता है—यह पूरी तरह से मुझे उत्तेजित करता है। यह महिला ही होगी—एक पुरुष ऐसे दिव्य व्यक्ति के प्रति इतना अविनीत नहीं हो सकता, परंतु...या...वह प्याला लेती है—ओह, शोक! एक महान् आदमी का हाथ रस्कों की टोकरी में जाता है—जंगली! और वह अपनी सहायता स्वयं कैसे करता है—गँवार! मैं जानना चाहता हूँ कि वह भद्र पुरुष इसका भाई है—वह शायद भूखा है, विनीत व्यक्ति! अब एक के बाद एक, दो प्यारे बच्चे आते हैं जो बहन की तरह ही हैं। अब मुझे हैरानी होती है कि एक कानवाले भले व्यक्ति ने कुछ बाकी भी छोड़ा है। अत्यंत रमणीय लड़की अब छोटे बच्चों का आलिंगन करती है, उनको चूमती है और श्रीमान् गोबेल की अंगुलियों से बचे हुए रस्क और केक उन्हें देती है। अब वह महिला उत्सव से बच रही चीजें लेती है—सुगंध, मेरी तरह!

एकाएक कमरे में यह क्या हलचल हुई! बूढ़ा आदमी अपने आपको सोफे से उठाता है; एक कानवाला व्यक्ति

आगे बढ़ता है और ऐसा करने में युवती को धक्का देता है जिसके फलस्वरूप वह चाय की मेज से टकरा जाती है, जिसके कारण विनीत महिला, जो सोफे से उठना ही चाहती थी, पुन: सोफे पर गिर जाती है। बच्चे इधर-उधर कूदते हैं और तालियाँ बजाते हैं। दरवाजा खुल जाता है; एक युवा अधिकारी अंदर आता है—युवती अपने आपको उसकी बाँहों में फेंकती है। इसी तरह, वास्तव में। आह, अब मजा आया है! मैंने बडील को इस तेजी से बंद किया कि वह कड़क गई और वर्षा से भीगते हुए, काँपते घुटनों के साथ, मैं कुरसी पर बैठ गया।

मुझे खिड़की पर करना ही क्या था? यह प्रश्न तभी उठता है जब किसी चीज की जिज्ञासा करता हूँ।

आठ दिन पहले यह परिवार गाँव से मेरे सामनेवाले सुंदर मकान में आया था; और अभी तक मुझे नहीं सूझा कि मैं पता करूँ कि वे कौन लोग हैं और कहाँ से आए हैं? आज भी उनके घरेलू मामलों को नाजायज तौर पर जानने की क्या जरूरत थी? उसमें मुझे रुचि कैसे हो सकती थी। मैं भी अप्रसन्न था; संभवत: मैंने हृदय में थोड़ी पीड़ा महसूस की। परंतु यह सब होते हुए भी, चिंताजनक विचारों को, जिनसे कोई लाभ न हो, स्थान देना मेरे निश्चय के अनुरूप नहीं था। मैंने अकड़ी अंगुलियों में कलम पकड़ी और अपने संताप को दूर करने के लिए, घरेलू प्रसन्नता को, जिसका मैंने अभी आनंद नहीं लिया, वर्णन करना चाहा। इसके अतिरिक्त अपने अकड़े हाथों पर फूँक मारकर मैंने अपने को सचेत किया।

क्या मैं ही वह पहला व्यक्ति हूँ जिसने कल्पनाशक्ति की उग्र लड़ी में उस सच्ची लगन को चाहा है जिसको वास्तविकता के कठोर संसार ने वंचित रखा है? पच्चीस शिलिंग जलानेवाली लकड़ी के एक तोल के लिए! हाँ, विश्वास करो, दिसंबर से पहले तुम नहीं ले सकोगे! मैंने लिखा—

''वह परिवार प्रसन्न है, तिगुना प्रसन्न है जिसके सिकुड़े दायरे में किसी के दिल में निर्जनता से रक्तस्राव होता है, अचल निर्जनता से आनंदित होता है। कोई दृष्टि, कोई मुसकान बिना उत्तर पाए नहीं रहती और जहाँ मित्र, शब्दों से नहीं बल्कि कृपा से एक-दूसरे को रोज कहते हैं, 'तुम्हारी रक्षा, तुम्हारी प्रसन्नता, तुम्हारा आनंद, सभी मेरे भी हैं!'

''शांतमय और सुखी घर प्यारा है जो जीवन में थके यात्री की रक्षा करता है—जो अपनी मित्रतापूर्ण जलती अँगीठी से, लाठी पर झुके हुए बूढ़े आदमी, शक्तिशाली पुरुष, प्यारी पत्नी और प्रसन्न बच्चों को विश्राम देता है—बच्चों को, जो उछलते और शोर मचाते हैं, अपने सांसारिक स्वर्ग में नाचते हैं और खेल में दिन गुजारकर सायंकाल मुसकराते होंठों से धन्यवाद की प्रार्थना को दोहराते हैं और अपने माता-पिता की छाती पर सो जाते हैं, जबकि उनकी माँ की मंद आवाज उन्हें लोरी सुनाती है—

नन्हें देवदूत खड़े हैं चक्र में
रक्षा करने उन बच्चों की
सो रहे हैं जो आनंद से
अपनी-अपनी सुखद शय्या पर।''

अब मुझे यह सब छोड़ना पड़ा क्योंकि वर्षा की बूँदों से मिलते-जुलते कण मेरी आँखों में आ गए और मैं स्पष्ट देख नहीं सका।

ज्यों ही मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरे पुनर्विचारों ने उदासी का रूप धारण किया, मैंने सोचा—'कितने व्यक्ति हैं जो अपनी व्यथा में सांसारिक जीवन की सर्वाधिक प्रसन्नता—घरेलू प्रसन्नता के बिना रह सकते हैं!'

क्षण भर के लिए मैंने अपने कमरे में रखे पूरे दर्पण—सचाई के दर्पण में मनन किया और उद्विग्न भावनाओं को पुन: लिखना आरंभ कर दिया—''अनाश्रित को वास्तव में अप्रसन्न कह सकते हैं, जिसको जीवन के व्याकुल और उदासीन क्षणों में (जो कभी-कभी आते हैं) कोई अपने सच्चे दिल से नहीं लगाता, उसकी आहों को नहीं लौटाता,

जिसके मौन शोक को यह कहकर दूर नहीं करता—'मैं तुम्हें समझता हूँ, मैं तुम्हारे दु:ख में दु:खी हूँ।'

''वह नीचे गिराया जाता है, उसे कोई नहीं उठाता; वह रोता है, उसे कोई नहीं देखता; वह जाता है, कोई उसका पीछा नहीं करता; वह आता है, कोई उसे मिलने नहीं आता; वह आराम करता है, कोई उसकी रखवाली नहीं करता। वह अकेला है। ओह, वह कितना अभागा है! वह मर क्यों नहीं जाता? उसके लिए रोएगा कौन? वह कब्र कितनी ठंडी है जिसको प्रेम के आँसू तर नहीं करते!

''वह सरदी की रात में असहाय है, पृथ्वी पर उसके लिए फूल नहीं हैं और अंधकार स्वर्ग की बत्तियों को जलाता है। वह घूमता क्यों है—वह असहाय; वह प्रतीक्षा क्यों करता है, वह उड़ क्यों नहीं जाता—सायों के संसार को? आह, वह अब भी आशा करता है; वह भिक्षुक है जो आनंद की भीख माँगता है, जो अंतिम समय में भी माँगता है कि दयालु हाथ उसे भिक्षा दे दें!

''वह पृथ्वी का केवल एक फूल चुनेगा, अपने दिल पर लगाएगा। इसलिए वह अपने आपको अकेला, असहाय न समझे और अंतिम आराम के लिए चल दे।''

यह मेरी अपनी स्थिति थी जिसका मैंने वर्णन किया है; मैंने अपने आप पर विलाप किया।

माता-पिता से शीघ्र ही वंचित हो गया, न भाई-बहन, न कोई मित्र, न संबंधी, मैं संख्या में इस तरह अकेला और असहाय खड़ा था; अंदर परमात्मा पर भरोसे और स्वाभाविक प्रसन्न प्रकृति के सिवाय, मैंने कई बार इस घृणित संसार को छोड़ देने की इच्छा की। अब तक मैंने लगातार अच्छे भविष्य की आशा की थी और यह अधिकतर अंदरूनी भावना के कारण थी, इसलिए अति उत्तम थी, बजाय इसके कि दर्शन की सहायता से स्पष्ट इच्छाओं को वर्तमान के लिए दबाया जाए क्योंकि यह संभावना के बिलकुल विरुद्ध था। कुछ समय के लिए मेरे साथ उलटी बात रही। मैंने अनुभव किया, विशेषकर आज सायंकाल जिसको शब्दों में नहीं कहा जा सकता कि मैं भी किसी को प्रेम करूँ—मेरे पास कोई हो, कोई मेरे साथ चिपटे—जो मित्र की तरह रहे—दूसरे शब्दों में (संसार में मेरे लिए अति उत्तम परम सुख) पत्नी—प्यारी अनुरक्त पत्नी! ओह, वह मुझे आराम देगी, मुझे प्रसन्न करेगी! दरिद्र-से-दरिद्र झोंपड़ी में भी मुझे राजा बनाएगी। मुझे शीघ्र ही लगा कि मेरे हृदय की प्रेमाग्नि मेरे विश्वसनीय को मेरे पास ठंडा होने से सुरक्षित रखेगी। पूर्व की अपेक्षा अधिक हतोत्साह होते हुए, मैंने अपने कमरे में कुछ चक्कर लगाए (अर्थात् दो कदम दाएँ चलकर पुन: लौट जाना)। मेरी स्थिति की चेतना ने दीवार पर साए की तरह मेरा पीछा किया। जीवन में पहली बार मैंने अपने आपको उदास पाया और अपने अंधकारमय भविष्य पर धुँधली नजर डाली। मेरा कोई संरक्षक नहीं था। इसलिए चिरकाल तक अपनी उन्नति की बाबत नहीं सोच सकता था, फलस्वरूप अपनी रोटी, मित्र और पत्नी की बाबत भी!

'परंतु समस्त संसार में क्या है?' एक बार पुन: मैंने अपने आपसे गंभीरता से कहा, 'दिमाग को मारने में कौन सहायता करता है?' चिंताजनक विचारों से मुक्त होने के लिए मैंने एक बार फिर प्रयास किया। 'काश! कोई क्रिस्तानी आत्मा आज सायंकाल मेरे पास आती—कोई भी—मित्र या शत्रु, तो एकांत से बेहतर होता। हाँ, भूतों की दुनिया में रहनेवाला भी यदि दरवाजा खोलता तो मैं उसका भी स्वागत करता! यह क्या? दरवाजे पर तीन बार दस्तक? मुझे विश्वास नहीं होता—पुन: तीन बार! मैंने दरवाजा खोला; वहाँ कोई नहीं था, केवल हवा सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे चल रही थी! मैंने दरवाजा जल्दी से बंद कर दिया और अपने हाथों को जेबों में डाल ऊँचे स्वर में गुनगुनाते हुए इधर-उधर चला। कुछ क्षणों के बाद मैंने नि:श्वास अनुभव किया। मैंने मौन रहकर सुना। दोबारा नि:संदेह नि:श्वास था—गहरा और शोकाकुल। मैंने हैरानी से पूछा, ''कौन है वहाँ?'' कोई उत्तर नहीं मिला।

क्षण भर के लिए मैं शांत खड़ा सोचता रहा कि वास्तव में इसका क्या मतलब हो सकता था। इतने में एक

भयानक शोर हुआ, मानो भद्दी तरह से चिल्लाती हुई बिल्लियों को सीढ़ियों पर छोड़ दिया गया हो जो अंत में मेरे दरवाजे पर जोर से टकराई हों। इसने मेरे संदेह का अंत कर दिया। मैंने मोमबत्ती और छड़ी उठाई और बाहर जाने के लिए चला। जब मैंने दरवाजा खोला, मेरी मोमबत्ती बुझ गई। एक भारी-भरकम सफेद आकृति मेरे सामने टिमटिमाने लगी और मुझे महसूस हुआ कि दो शक्तिशाली बाँहों ने मुझे जकड़ लिया है। मैंने सहायता के लिए शोर मचाया और अपने आपको उसके चंगुल से छुड़ाने के लिए इतना जोर लगाया कि मैं और मेरा शत्रु—दोनों भूमि पर गिर गए, परंतु मैं उसके ऊपर पड़ा था। तीर की तरह मैं फिर ऊपर उछला और लैंप पकड़ने ही वाला था कि किसी चीज से टकरा गया—परमात्मा जानता है कि वह क्या था (मेरा पूर्ण विश्वास है कि किसी ने मेरे पैरों को दृढ़ता से पकड़ रखा था) जिसके कारण मैं दूसरी बार गिरा। मेज के कोने पर मेरा सिर लगा और मैं सुध खो बैठा, जबकि शंकायुक्त शोर, जो ठहाके से मिलता-जुलता था, मेरे कानों में गूँजा।

जब मैंने दोबारा आँखें खोलीं तो चकाचौंध रोशनी नजर आई। मैंने आँखें दोबारा बंद कर लीं और अपने आसपास एक संभ्रांत शोर सुना—फिर आँखें थोड़ी खोलीं और आस-पास पड़ी चीजों को पहचानने की कोशिश की; ये इतनी अजीब और गूढ़ार्थक लगीं कि मैं डर गया, मेरा दिमाग चल गया था। मैं सोफे पर लेटा था और—नहीं, मैंने वास्तव में अपने आपको धोखा नहीं दिया—वह रमणीय लड़की जो आज सायंकाल निरंतर मेरे खयालों में तैरती रही थी, वह वास्तव में मेरे सामने खड़ी थी और सहानुभूति की दिव्य आकृति लिये मेरे सिर को सिरके से धो रही थी। एक नवयुवक, जिसका मुख मेरा जाना-पहचाना लगता था, अपने हाथों से थामे हुए था। मैंने उस मोटे आदमी को, एक पतले-दुबले को, महिला को एवं बच्चों को देखा और दूर संधि-प्रकाश में चाय की मेज की दिव्य जगमगाहट भी देखी। संक्षेप में, मैंने अपने आपको उस परिवार में पाया जिसके प्रति एक घंटा पहले सहानुभूतिपूर्वक विचार किया था।

जब मैं पूरी तरह चेतन हो गया तो नवयुवक ने कई बार फौजी गरमजोशी से मेरा आलिंगन किया।

''तुम मुझे अब नहीं जानते?'' ज्यों ही मेरे शरीर और आत्मा को सख्त होते देखा, वह क्रोध से चिल्लाया —''क्या तुम अगस्त डी. को भूल गए हो जिसके जीवन को अपनी जान खतरे में डालकर कुछ समय पहले तुमने बचाया था? यह देखो! मेरे पिता, मेरी माँ, मेरी बहन व्हिलमा!'

मैंने उसका हाथ दबाया और उसके माता-पिता से आलिंगन किया। मेज पर मुक्का मारते हुए अगस्त का पिता चिल्लाया—''और चूँकि मेरे बेटे की जान बचाई है, और तुम अत्यंत ईमानदार और अच्छे व्यक्ति हो, दूसरों को खिलाने के लिए स्वयं भूखे रहते हो, इसलिए तुम्हें वास्तव में श्रेष्ठ पुरुष माना जाएगा। हाँ, तुम पादरी बनोगे, मैं कहता हूँ और पूरा विश्वास रखता हूँ, समझे न?''

काफी देर तक मैं समझ नहीं पाया, सोच नहीं पाया और बोल भी नहीं पाया। बातों-बातों में जब स्पष्ट भी हो गया, फिर भी मैं स्पष्टता से समझ नहीं पाया सिवाय इसके कि वह व्हिलमा नहीं थी, व्हिलमा अगस्त की बहन थी।

वह आज सायंकाल नौकरी की यात्रा से लौटा था जिसके दौरान बीती गरमियों में मैंने उसे जवानी की आग और उत्साह की अधिकता के खतरे से बचाने का शुभावसर प्रदान किया था। उस घटना के बाद मैं उससे नहीं मिला था; उससे पहले, उससे क्षणिक जान-पहचान हुई थी, विश्वविद्यालय में भाईचारा हुआ और उसके बाद वह मुझे भूल गया।

उसने जवानी के उबलते जोश में, मेरी बाबत जानते हुए या न जानते हुए, उस घटना को अपने परिवार को बताया। पिता, जिसको जीवनदान मिला था, (जिसका मुझे बाद में पता चला)। खिड़की में से मेरी छोटी मेज की बाबत उसने टिप्पणी की थी और बेटे की प्रार्थना पर वह मुझे गरीबी से उठाकर अच्छे भाग्य के शिखर पर बैठाने के

लिए तैयार हो गया। अगस्त ने विभोर होकर मेरे सौभाग्य की घोषणा उसी समय कर दी और मजाक में डूबकर मेरी सीढ़ियाँ इस प्रकार समाप्त कीं कि मेरी कनपटी पर खतरनाक न सही, एक भारी चोट लगी और मैं अचानक सड़क पार करके गहरे अंधकार से चमकीली रोशनी में आ गया। अच्छे नौजवान ने अपनी लापरवाही के लिए हजार बार क्षमा माँगी और मैंने हजार बार उसे विश्वास दिलाया कि इतनी छोटी सी चोट के लिए बार-बार क्षमा माँगने का कष्ट नहीं करना चाहिए। और वास्तव में जीना गुलमेहंदी है जिससे इस न दिखाई देनेवाले घाव की बजाय बड़ा घाव भी हो सकता था।

हैरान और कुछ व्याकुल होकर मैंने देखा कि कान और कंधेवाला आदमी, जिसने रस्कों की टोकरी को बुरी तरह पकड़ा था और जिसके प्रति मैंने कठोरता दिखाई थी, वह और कोई नहीं, बल्कि अगस्त का पिता और मेरा संरक्षक था। मोटा आदमी, जो सोफे पर बैठा था, व्हिलमा का मामा था।

मेरे नए मित्रों की मेहरबानी और हर्ष ने मुझे अपने घर का सुख प्रदान किया, बड़े आदमियों ने मुझे घर के बच्चे का प्यार दिया, छोटों ने भाई माना और दो बच्चों ने, ऐसा लगा, कि मुझसे गहरी मित्रता की आशा की!

व्हिलमा के सुंदर हाथों से दो कप चाय लेने के बाद, जिन्हें लेने से मैं डरता था, अचेत अवस्था में, अपने विशिष्ट संरक्षक से अधिक रस्क लेकर, मैं जाने के लिए आज्ञा लेता हुआ उठा। उन्होंने वहीं रात गुजारने के लिए काफी जोर दिया, परंतु मैं अपनी पहली आनंदमयी रात अपने पुराने स्थान पर गुजारने के अपने निश्चय का, अपने भाग्य के महान् राजा का धन्यवाद करते हुए, पालन करना चाहता था।

उन्होंने नए सिरे से मेरा और मैंने हृदय की गहराई से सबका आलिंगन किया, व्हिलमा का भी, भले ही इसमें उसकी सहमति न थी। 'यदि इस आलिंगन को पहला और अंतिम होना है तो यह बेहतर होता कि मैं न ही करता।' मैंने बाद में सोचा। लौटते समय अगस्त मेरे साथ आया।

उलटी-सीधी पड़ी मेज-कुरसियों के मध्य मेरा मेजबान ऐसी आकृति लिये खड़ा था जो वर्षा और धूप में बदलती थी; उसके चेहरे पर एक ओर कान तक अनैच्छिक मुसकराहट थी तो दूसरी ओर दोहरी ठुड्डी तक पीड़ा छाई हुई थी; उसकी आँखों में भी वही दया थी जबकि वे लड़ाई की दृष्टि लिये हुए थीं जब अगस्त ने अपने स्वर में यह जताया कि वह हमें अकेला छोड़ दे। यह सबकुछ मित्रतापूर्ण ढंग से ही हो गया और मालिक दाँत पीसता हुआ नम्रतापूर्वक सलाम करके दरवाजे से गुम हो गया।

अगस्त मेरी मेज, कुरसी, चारपाई इत्यादि के बारे में निराश था। इस प्रकार के घटिया माल के लिए किराया वसूल करने के लिए, अगस्त को पीटने की बुरी कार्यवाही से मैंने मेजबान को रोका। मैंने उसे निश्छल आश्वासन से संतुष्ट किया कि अगले ही दिन अविलंब मैं उन्हें हटा दूँगा। ''परंतु उसे बता देना, '' अगस्त ने प्रार्थना की —''पूर्व इसके कि तुम उसे पैसे दो, वह—चांडाल है, सूदखोर और धोखेबाज है—अथवा यदि तुम चाहो तो मैं...।'

''नहीं, नहीं! परमात्मा हमारी रक्षा करे।'' मैंने समझाया—''चुप रहो, मुझे केवल प्रबंध करने दो।''

जब मेरा युवा मित्र चला गया तो मैं कई घंटों तक अपने भाग्य के परिवर्तन के बारे में सोचता रहा और परमात्मा का धन्यवाद किया। मेरे विचार पादरी के घर का भ्रमण करने लगे; और ईश्वर जानता है कि किन मोटे गाय-बैलों को, किन फूल-फलों और सब्जियों के साथ आनंदपूर्ण भू-खंड में, मैंने अपनी आत्मा को नए स्वर्ग के वातावरण में देखा जहाँ मेरी पत्नी मेरे हाथों का सहारा लिये मेरे साथ घूमती है। असंख्य प्रसन्न और भद्र लोगों के समूह को गिरजा से निकलते हुए देखा जहाँ मैंने उपदेश किया था। अपनी प्यारी जाति का हृदय की गरमी और जोश के साथ बपतिस्मा किया, उन्हें प्रणाम किया और आराम पहुँचाया—और केवल अंत्येष्टि को भूल गया।

प्रत्येक विनीत पादरी, जिसने आजीविका ग्रहण की है, प्रत्येक मर्त्य, विशेषकर संबंधियों की इच्छा ने अचानक ही

साथ दिया है। वे मेरी स्थिति का चित्र आसानी से देख सकते हैं।

अंतत: रात को यह सब किसी आवरण की तरह मेरी आँखों के सामने डूब गया। मेरे विचार शनै:-शनै: व्याकुलता से घिरने लगे और हर ओर अद्‌भुत चित्र दिखे। मैंने गिरजे में अच्छी ऊँची आवाज में प्रवचन किया और लोग सोते रहे। प्रार्थना के बाद लोग गाय-बैलों की तरह निकले और जब मैं उनको डाँटता तो मेरे विरुद्‌ध डकारते। मैं अपनी पत्नी का आलिंगन करना चाहता था, परंतु उसे बड़े शलजम से जुदा न कर सका जो हर क्षण बढ़ता चला गया और अंत में हमारे दोनों हाथों पर उग आया। मैंने स्वर्ग की सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयास किया जिसके सितारों ने कृपा करते हुए और चमकते हुए मुझे बुलाया, परंतु आलुओं, घास, उड़द के पौंधों और मटर ने मेरे पाँव को निर्दयता से जकड़ लिया और मेरे कदमों में रुकावट डाली। अंत में सिर के बल चलते हुए मैंने अपने आपको अपनी संपत्ति में देखा जबकि अपनी निद्राग्रस्त आत्मा में अत्यंत हैरान हुआ कि यह सब कैसे संभव हो सकता था। मैं अपने स्वप्न को याद करता हुआ गहरी निद्रा में सोया, किंतु फिर भी मैंने अपनी अचेतावस्था में पादरी के विचारों पर सोचना जारी रखा होगा क्योंकि प्रात: जागने पर मैंने अपनी ही आवाज में कहा, 'आमीन!'

पिछली शाम की घटनाएँ स्वप्न नहीं बल्कि सच्ची थीं। जब तक कोई मुझे मिलने और अपने माता-पिता के साथ खाना खाने के लिए बुलाने नहीं आया, मैं अपने आपको कठिनाई से आश्वस्त कर सका।

जीवित व्हिलमा, खाना, भविष्य की आशाओं की नई कड़ियाँ जो वर्तमान के चमकीले सूर्य से चमक रही थीं, इन सबने मुझे नए सिरे से, प्रसन्नता से हैरान कर दिया जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

कृतज्ञापूर्ण दिल की गहरी भावना से मैंने नए जीवन को, जो मेरे सामने था, सलाम किया, इस इरादे के साथ कि 'जो कुछ भी हो ठीक करो और सर्वोत्तम की आशा करो।'

इसके दो वर्ष बाद शरद ऋतु की एक शाम को मैं अपने पादरी के घर में अँगीठी के पास बैठा था। मेरे पास ही मेरी प्यारी पत्नी मधुर व्हिलमा बैठी बुनाई कर रही थी। अगामी रविवार को प्रचार के लिए दिए जानेवाला धर्मोपदेश मैं उसे सुनाने वाला था, जिससे अपनी मानसिक उन्नति की आशा करता था। जब मैं पन्ने पलट रहा था तो एक ढीला कागज उनमें से नीचे गिरा। यह वही कागज था जिसपर दो वर्ष पूर्व उस शाम को, जब मैं कठिन स्थिति में था, अपने विचार लिखे थे। उसे अपनी पत्नी को दिखाया। उसने पढ़ा; आँखों में आँसू भरकर मुसकराई और कपटी सूरत, जो मुझे अच्छी लगती थी, के साथ कलम उठाई और उसी कागज की दूसरी ओर लिखा—

''लेखक अब, ईश्वर को धन्यवाद है, वह विवरण दे सकता है जो पहले विवरण से पूरी तरह उलट होगा और जो कभी अँधेरे क्षणों में ऐसे अभागे व्यक्ति के लिए था, जैसा वह तब था।''

अब वह अकेला नहीं है, न ही त्यागा गया है। उसके मौन विश्वासों का उत्तर दिया जाता है, उसके गुप्त दु:ख पत्नी द्‌वारा बाँटे जाते हैं जो विनम्रता से उसे समर्पित है। वह जाता है तो पत्नी का दिल पीछा करता है; वह लौटता है तो मुसकराहट के साथ उसे मिलती है, उसके आँसू अनदेखे नहीं बहते, वे उसके हाथ से पोंछे जाते हैं और उसकी हँसी पुन: उसकी हँसी में मिल जाती है। उसकी भौंह में पिरोने और रास्ते में बिछाने के लिए वह फूल इकट्‌ठे करती है। उसकी अपनी अँगीठी है; मित्र उसके प्रति समर्पित हैं और जिनका कोई नहीं है, उन्हें अपना संबंधी मानता है। वह प्रिय है, उसे प्यार किया जाता है। वह दूसरों को प्रसन्न करके स्वयं प्रसन्न होता है।

मेरी व्हिलमा ने वास्तव में वर्तमान को सचाई के साथ पेश किया; और ऐसा लगने लगा कि वसंत ऋतु के सूर्य की किरणों की तरह प्रसन्न और मधुर भावनाओं से उत्तेजित होकर मैं आगे के लिए अपनी छोटी आशाओं के समुदाय को भविष्य के साथ बाँध दूँगा।

मैं यह भी आशा करता हूँ कि अगला रविवार मेरा धर्मोपदेश सुननेवालों के लिए लाभकारी रहेगा—यदि हठी लोग

सोते भी रहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि न ही यह और न ही इससे बड़ी या कम अप्रियता, जो मुझे हो सकती है, वह मेरे हृदय में जाकर मेरी शांति को क्षुब्ध कर सकती है। मैं अपनी व्हिलमा को जानता हूँ और विश्वास के साथ अपने आपको भी जानता हूँ और दृढ़ आशा रखता हूँ कि मैं उसको प्रसन्न कर सकता हूँ। सुंदर फरिश्ते ने मेरी आशा बँधाई है कि हमारे प्रसन्न परिवार में शीघ्र ही एक जीव की बढ़ोतरी होगी। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में परिवार और भी बढ़ेगा। अपने बच्चों के लिए मेरे हृदय में सब प्रकार की आशाएँ हैं। यदि मेरे यहाँ लड़का होता तो मुझे आशा है कि वह मेरा उत्तराधिकारी बनेगा; यदि लड़की होती है, फिर—यदि अगस्त प्रतीक्षा करे—परंतु मेरा खयाल है कि वह विवाह करने वाला है।

मैं आशा करता हूँ कि अपने धर्मोपदेशों के लिए समय रहते ही प्रकाशक ढूँढ़ लूँगा। मैं अपनी पत्नी के साथ सौ वर्ष जीना चाहता हूँ।

हम, अर्थात् व्हिलमा और मैं—आशा करते हैं कि इस बीच हम अपने अनंत आँसू खुश्क कर लेंगे और पृथ्वी के बच्चों की भाँति, जितनी आज्ञा हुई, कम-से-कम बहाएँगे!

हम एक-दूसरे के बाद नहीं जिएँगे।

अंत में सदा आशा करने की आशा करते हैं; और जब समय आए कि अनंत असंशय की साफ रोशनी के सामने हरी पृथ्वी की आशाएँ लुप्त हो जाएँ, तब हम आशा करें कि परम पिता परमात्मा हमारे सुशोभित और आशावान बच्चों पर अपने आशीर्वाद की वर्षा करें।

❑

जंगल का रहस्य

—गस्टोफ मेजरस्टेव (स्वीडन)

रीड मार्श को जाने के लिए रास्ता लंबा, परंतु शांत था। पहले जंगल के मध्य में से एक तंग रास्ते से गुजरना पड़ता था, उस रास्ते से जो देवदार के वृक्षों के अंदर-बाहर घूमता था और नंगी चट्टानी ढलान की ओर जाता था; जहाँ चट्टानी ढलान समाप्त होती थी, वहीं से पीटबोग आरंभ हो जाता था।

छोटी पहाड़ियों की चोटियों पर बौने सरों के पेड़ थे और जब भी दलदल में मेहंदी खिलती तो वायुमंडल सुगंध से महक उठता था जो उस स्थान पर कीड़े-मकोड़ों को आकर्षित करती थी।

बाग को जाने के लिए भी रास्ता काफी लंबा था; यहाँ तक कि कोई उसको पार भी कर लेता और पहाड़ी पर चढ़ता (पहाड़ी के शिखर से शीशे की तरह साफ और शांत झील, जो किनारों पर सरों के पेड़ों से ढकी हुई थी, देखी जा सकती थी) तो भी अपनी यात्रा के अंत तक नहीं पहुँच पाता था।

झोंपड़ी झील से दूर किनारे पर स्थित थी। इसलिए यदि कोई वहाँ जाना चाहता था तो उसे और लंबा रास्ता तय करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त यदि कोई किनारे पर खड़ा होकर काफी जोर से आवाज लगाता तो थोड़े अंतराल के बाद दूसरी ओर एक झुका हुआ वृद्ध व्यक्ति सिर पर लाल, नुकीली टोपी पहने प्रकट होता और पथरीली ढलानों से पानी तक सावधानी से उतरता, जहाँ वह भ्रांतचित्त पुरानी छिछली नाव में बैठता और प्रतीक्षा करनेवाले अभ्यागत को लाने जाता।

यह समझना कठिन था कि छोटी झील रीड मार्श के नाम से क्यों पुकारी जाती थी, क्योंकि वहाँ दलदल जैसी कोई भी चीज नजर नहीं आती थी; झील का पानी, सायेदार जंगल से गुजरने के बाद कितना चमकीला और आनंददायक लगता था!

पहले तो वहाँ नरकट भी देखने को मिलते थे। जो भी नरकट वहाँ थे वे खाड़ी में छिपे हुए थे और इन्हीं नरकटों पर वसंत ऋतु में बतखें अपने घोंसले बनाती थीं और ज्यों ही बच्चे अंडों से निकलते, शांत पानी को निर्विवाद अपना समझकर उसपर तैरते थे, परंतु नाविक जैकोव का कहना है कि वह इनको बंदूक से कभी मार नहीं सका। ''जब मैं युवा था, '' उसने कहा, ''मैंने सबकुछ किया जो कर सकता था, परंतु प्रबंध नहीं कर सका। अब इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि सीख नहीं सकता।'' जैकोव बहुत से पर्यटकों को झील पर घुमा चुका था और यह देखते हुए अजीब नहीं लगता कि वह रीड मार्श के पास झोंपड़ी में इतनी देर से रह रहा था। कोई भी नहीं जानता कि वह झोंपड़ी में कब आया था; यहाँ तक कि वह स्वयं भी नहीं!

जैकोव और उसकी पत्नी एक अजीब जोड़ा था। मार्टीना ने जंगल की रानी और जलपिशाच—दोनों को देखा था। वह यह भी जानती थी कि जब दलदल में उत्पन होनेवाला जगमगाता प्रकाश सूखी काई के टुकड़ों पर झिलमिलाता है तो क्या होता है और जंगल की सारी आवाजों को वह समझ सकती थी।

जैकोव युवावस्था में कोयला झोंकनेवाला था; मार्टीना बेर इकट्ठे किया करती थी, लकड़ी की पतली छड़ों की टोकरियाँ बेचती थी तथा क्रिसमस और ईस्टर के समय घरों में सहायता करती थी। वह दूर-दूर तक जानी-पहचानी थी क्योंकि उसकी तौल ठीक होती थी और उसके बेर ताजा होते थे; टोकरी के पेंदे में कच्चे फलों के मिलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था।

उनके तीन बेटे थे, परंतु सभी कामकाज के लिए गाँवों में गए हुए थे जहाँ अधिक पैसा कमाने की आशा थी और जंगलों की कानाफूसी सुनाई नहीं देती थी।

सर्दियों की रातों में जब मार्टीना और जैकोव अकेले होते तो इन बेटों की बातें किया करते थे, परंतु जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, बूढ़े जोड़े के आसपास शांति भी बढ़ती गई। यह शांति और अकेलापन उन्हें परस्पर और निकट ले आए; मार्टीना और जैकोव एक-दूसरे के इतने पास-पास आ गए कि बाहरी दुनिया को भूल गए और बदले में स्वयं को भूल जाने पर उन्हें कोई हैरानी नहीं हुई। उन्हें जीवन में जो भी थोड़ा-बहुत चाहिए था, वह तब तक उन्हें मिलता रहा, जब तक जैकोव ने चारपाई छोड़ने के लिए अपने आपको अयोग्य पाया।

''अब चीजों को तुम्हें देखना होगा, मार्टीना! और जब मैं ठीक हो जाऊँगा तो फिर संभाल लूँगा और तुम आराम करना।''

जब जैकोव बीमार था तो उन्हें कई चीजों के बिना गुजर करनी पड़ी थी। जंगल से शिकार और झील से मछली लानेवाला कोई नहीं था। मार्टीना के लिए सबसे कठिन काम गाय को चारा डालना था। वह दराँती से काम लेती और जितना होता, प्रबंध करती तथा चारे को घर ले जाती थी, परंतु कई बार उसे बैठना और आराम करना पड़ता। वह अकेली जंगल में खूब रोती, क्योंकि घर में आँसू बहाना नहीं चाहती थी।

फिर एक सर्दी में जब जैकोव बीमार था, उनको भीषण विपत्ति ने घेर लिया। उनकी एकमात्र गाय चारे की कमी के कारण मर गई। इसके बाद मार्टीना के लिए कोई चारा न रहा, सिवाय इसके कि गाँव में जाकर भीख माँगे। उसके लिए यह अत्यंत कठिनाई का समय था, क्योंकि इससे पूर्व उसने किसी से कुछ नहीं माँगा था।

वह एक हाथ में दूध का डिब्बा थामे और भिखारी का थैला अपनी पीठ पर लटकाए जल्दी-जल्दी चलती थी। उसके झुर्रीदार बूढ़े चेहरे पर चिंता का भाव था। वह कहीं भी विलंब नहीं करती थी, क्योंकि वह जानती थी कि जैकोव घर में अकेला असहाय पड़ा है।

दो वर्ष तक ऐसे ही चलता रहा, परंतु जैकोव न अच्छा हुआ और न ही उसकी हालत बिगड़ी। अंत में ऐसा हुआ किउसे गरमी और सरदी, धूप और वर्षा में कोई अंतर नहीं लगता था। उसके लिए कष्ट का एक लंबा दिन था जो समाप्त होता नहीं दिखता था।

''यदि मैं मर सकता, तो तुम्हें आसानी हो जाती।'' जैकोव कहा करता।

मार्टीना आँखों में आँसू भरकर कहती—''यदि तुम मर गए तो मेरा क्या होगा?''

मन-ही-मन वह जानती थी कि जिस स्थिति में वह अब है, उससे बुरी स्थिति नहीं होगी, परंतु बेचारे जैकोव से यह नहीं कह सकती थी जबकि वह असहाय पड़ा था।

फिर गरमी की ऋतु में एक दिन मार्टीना, दाएँ-बाएँ हाथ हिलाते, गाँव से घर की ओर आ रही थी। ले जाने के लिए उसके पास अधिक सामान नहीं था; क्योंकि लोग उसे देते-देते थक गए थे और पीठ पर रखा थैला भी हलका था, उसी तरह दूधवाला डिब्बा जो वह ले जा रही थी, हलका था। जब वह पीर बाग पहुँची तो सूर्य तेजी से चमक रहा था। थोड़ी दूर आगे वह बड़े बेरों को देखने के लिए रुकी। वहाँ काफी बेर थे, परंतु अभी पके नहीं थे। वहाँ कितना अकेलापन और शांति थी! मार्टीना ने पीठ पर से थैला उतार दिया, दूध के डिब्बे को भूमि पर रख दिया और बैठ गई। वह हर तरह से बहुत थक गई थी। यदि अब जंगल की रानी आए और उसे कुछ दे, या वह जिसका नाम भी कठिनाई से कह सकती या वह जो दु:ख में हर-एक के पास रहता है, वह अब क्यों नहीं आता!

और यह क्या हुआ कि उसने कुछ नहीं देखा जबकि वह इतना देखा करती थी? जंगल मौन क्यों था? क्यों उसके साथ झोंपड़ी तक जानेवाला और वहाँ की स्थिति देखकर बुढिया का बोझा ले जानेवाला नहीं था—बोझा जो उसकी असहाय शक्ति से अधिक था?

परंतु मार्टीना के आसपास जंगल मौन रहा और उसे डर लगने लगा। जीवन में पहली बार उसने जंगल में अपने

आपको अकेला महसूस किया। ऐसा लग रहा था कि वृक्ष उसके ऊपर आ रहे थे। वह सिर से पाँव तक काँपती भूमि पर अपने स्थान से उठी, कंधों पर थैले को लटकाया और दूध के डिब्बे को थामा। क्षण भर के लिए रुकी; काँपते हुए उसने गहरी खामोशी को सुना जो उसे लंबे नि:श्वास की तरह लगी। फिर वह अपने रास्ते पर चली और तब तक नहीं रुकी, जब तक झील के किनारे नहीं पहुँच गई। वहाँ पुरानी नाव बँधी थी। बिना विलंब किए वह उसमें चली गई तथा दूसरे किनारे की ओर देखने लगी। वह अपने पीछे देखने से डरती थी क्योंकि उसे ऐसा लगा कि यदि वह देखेगी तो हाथ फैलाकर वह इसे पकड़ लेगा। वृक्षों की जड़े, काई से ढके पत्थर, पुराने सड़े वृक्षों के तने—सब जीवित प्रतीत होते थे, परंतु चुप थे और उनकी चुप्पी ने वायुमंडल को भर दिया था। उसने बतखों के टर्राने को सुना, परंतु उनको देखने के लिए सिर नहीं मोड़ा, केवल जल्दी-जल्दी नाव खेती रही और किनारे पहुँचने तक कहीं नहीं रुकी। किनारे पहुँचकर उसने नाव छोड़ दी और शीघ्रता से झोंपड़ी में चली गई।

जैकोव बिस्तर पर लेटा था। उसे चारपाई पकड़े अब दो वर्ष हो गए थे। जब मार्टीना अंदर आई तो उसने आँखें नहीं खोलीं और जंगलवाली कँपकँपी के साथ उसने फर्श से कुछ लकड़ियाँ उठाईं और चूल्हे में आग जलाई। आग की रोशनी उस कोने तक नहीं पहुँची जहाँ जैकोव की चारपाई थी और जहाँ मार्टीना बैठी थी वहाँ से यह देख नहीं सकती थी कि वह जाग रहा था या सो रहा था।

''मार्टीना, तुम हो क्या?'' किवाड़ के कोने के पीछे से अचानक आवाज आई—''आज बहुत देर कर दी।''

''मैं थक गई थी, जंगल में थोड़ा आराम किया था।'' पत्नी ने उत्तर दिया और पूछा—''आज कैसे रहे?''

''बस, और दिनों की तरह।'' जैकोव ने उत्तर दिया। उसकी आवाज इतनी अस्पष्ट और नम्र थी कि मार्टीना उठकर उसके पास गई।

''मेरा खयाल है कि मुझे थोड़ी नींद आ गई थी, '' वृद्ध व्यक्ति ने कहना जारी रखा—''और मैं सोचता रहा।''

''किसकी बाबत?'' मार्टीना ने पूछा। यह कितना अजीब लगा—उसे महसूस हुआ कि जंगल ने झोंपड़ी तक उसका पीछा किया और अपने साथ भय लाया।

जैकोव ने सिर हिलाया और रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी। वह पतला और रंगहीन था, परंतु उसकी आँखें चमक रही थीं।

''मरने से पहले मैं एक बार सूर्य देखना चाहता हूँ।'' उसने कहा, ''मैंने हमेशा धूप, शांत झील और जंगल को प्यार किया है। क्या तुम मुझे वहाँ तक ले जा सकती हो, यदि मैं भी थोड़ी कोशिश करूँ?''

मार्टीना चारपाई के किनारे बैठ गई।

''तुम बाहर किसलिए जाना चाहते हो?'' उसने पूछा। जैकोव ने उसकी तरफ ऐसी आँखों से देखा जो एकाएक अत्यंत स्पष्ट और चमकीली हो गई थीं।

''मैं मरना चाहता हूँ, '' उसने उत्तर दिया—''और तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। मरना अधिक कठिन नहीं हो सकता। मैं सदैव जीवित नहीं रह सकता। जब मैं चला जाऊँगा तो तुम्हें गाँव में जाकर मेरे लिए खाने की भीख नहीं माँगनी पड़ेगी।''

मार्टीना को ऐसा लगा कि जो भय उसे जंगल में महसूस हुआ था, वह फिर झोंपड़ी में आ गया था। उसने बीमार व्यक्ति की भावना को उसके कहने से बहुत पहले ही समझ लिया था। उसे लगा कि यह सब पहले ही सुन चुकी थी।

''तुम्हें नाव तक मेरी सहायता करनी होगी, '' वृद्ध व्यक्ति ने कहा, ''और किनारे तक धकेलना होगा। उसके बाद तुम्हें यहाँ आना होगा और फिर देखना नहीं होगा।''

जैकोव ने पत्नी की आँखों की ओर इस तरह देखा, जैसे कोई बच्चा अपनी मनचाही इच्छा को पूरा करवाने के लिए देखता है और मार्टीना ने वहाँ बैठे हुए यह महसूस किया कि जंगल में भयभीत होने का यही कारण था।

''तुम कब जाना चाहोगे?'' उसने पूछा और बूढ़ी आँखें आँसुओं से भर गईं।

''धूप अब चमक रही है, '' जैकोव ने कहा; और उसकी आवाज उस अधीर बच्चे की तरह थी जो प्रतीक्षा नहीं कर सकता। ''मैं दो वर्षों से यहाँ लेटा हुआ हूँ और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं सोचा, '' जैकोव ने कहना जारी रखा।

फिर मार्टीना खिड़की के पास जाकर बैठ गई और सोचने लगी। वह अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी और न ही अधिक सोच सकती थी। वह कुछ देर शांतिपूर्वक बैठी रही और जैकोव ने भी उसकी विचारधारा को भंग नहीं किया। अंत में, वह अपने स्थान से उठी और बाहर देखा कि धूप अब भी चमक रही है। फिर बिना कोई शब्द बोले, उसने जैकोव को चारपाई से उठाया और बाहर लाकर द्वार पर बैठा दिया। वह इतना पतला और क्षीण हो चुका था कि ले जाने के लिए बोझल नहीं था। जैकोव ने वहाँ धूप को, झील और जंगल को देखा और हर उस वस्तु को देखा जो कभी उसकी अपनी थी। ''यदि कर सको तो मेरी और सहायता करो...'' अंततः उसने कहा।

फिर मार्टीना ने उसे बाँहों में उठा लिया और नाव तक ले गई, परंतु जब उसको वहाँ रखा तो मार्टीना का सिर झुक गया और जैकोव का हाथ थामे गूँगे की तरह खड़ी रही।

''अब नाव को धक्का दो, '' बूढ़े ने धीमी आवाज में कहा, ''और यह करने के बाद तुम झोंपड़ी में लौट जाओ, यहाँ मत रुकना। बाइबिल लेकर उसे पढ़ो। परमात्मा इसकी बाबत सबकुछ जानता है। वह जानता है कि हमारे साथ क्या गुजरी है।''

फिर मार्टीना ने उसके हाथ पर विदाई का दबाव डाला और किनारे से नाव को धकेलकर उसे तब तक देखती रही, जब तक वह गहरे पानी में नहीं चली गई। फिर वह अकेली झोंपड़ी में लौट आई। वहाँ बैठकर बाइबिल नहीं अपितु थोमस-अ-कैंपिस पढ़ने लगी। उसके पास इन दो पुस्तकों के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं थी और उसके लिए दोनों एक जैसी थीं। जितना वह पढ़ना चाहती थी, उतना उसने जब पढ़ लिया तो उसे सावधानी से अलमारी में रख दिया। फिर उसने बाहर देखा—नाव खाली थी! किनारे पर बैठी मार्टीना ने कई चीजों के बारे में सोचा और अंत में झील के शांत पानी को देखकर उसने परमात्मा से प्रार्थना की।

झोंपड़ी में पुनः आकर मार्टीना ने खिड़कियों पर सफेद परदे लटका दिए और झील तक रास्ते में स्वच्छ टहनियाँ बिछा दीं। तत्पश्चात् वह रीड मार्श के पास झोंपड़ी में पहली बार अकेली सोने के लिए चली गई।

जब बाद में मार्टीना जैकोव के शव को ढूँढ़ने और उसकी अंत्येष्टि के लिए सहायता माँगने गाँव में गई तो उसने सारी बात ठीक-ठीक बता दी।

परंतु उसकी बात की सत्यता पर तब तक किसी ने विश्वास नहीं किया, जब तक किसी ने आकर देख नहीं लिया कि खिड़कियों पर सफेद परदे लटक रहे थे और रास्ते में देवदार की स्वच्छ टहनियाँ बिछा थीं। फिर उनको विश्वास हो गया कि कहानी सच्ची थी।

और जब जैकोव का शव ढूँढ़ लिया गया और अंत्येष्टि के लिए उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया, जहाँ उसने कई दुःखद वर्ष काटे थे, तो कई विलाप करनेवाले उपस्थित थे। हर किसी ने समझा कि जो कुछ हुआ था, उसको गुप्त ही रखा जाए क्योंकि वह जंगल का रहस्य था और मार्टीना वास्तव में नहीं जानती थी कि जैकोव की मृत्यु के लिए सहायता करती हुई वह क्या कर रही थी!

❑

राजकीय अभिवादन

—डेयिल फालस्टोर्म (स्वीडन)

प्रतीक्षा कितनी लंबी और कठिन थी!

आधे घंटे तक वह बड़े कमरे में टहलता रहा। हर बार पलटने पर वह उसके शयनकक्ष के द्वार पर रुकता और सुनता—कोई आवाज नहीं! वह अपना कदम पुन: उसी लय में उठाता, पुन: छोटे, दुर्बोध लटकते हुए परदोंवाले द्वार पर रुकता—आँखों में डर लिये, हाँफता हुआ सुनता। कहीं कोई आवाज नहीं! वह असहाय हो रहा था।

वह खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा। वसंत ऋतु की साफ और शुद्ध धूपवाली सुबह थी। पास में नदी बह रही थी; पानी जगमगा रहा था। इधर-उधर दूर से आनेवाले बर्फ के तैरते हुए तोदे धीरे-धीरे पुल के नीचे से बह रहे थे और धूप उनपर खिल रही थी; समुद्री चिड़िया उनके इर्दगिर्द चक्कर लगा रही थी और चीखती हुई मछली के लिए गोता लगा रही थी।

पहली वसंत यात्रा के लिए रंगसाज और दूसरे कारीगर जहाज को तैयार कर रहे थे, वे हर चीज को नई और चमकदार बना रहे थे। कुछ घुमक्कड़ लोग गोदी पर कुछ पैसा कमाने के लिए सरदीवाले तहखानों और अटारियों के शरण-स्थलों में बैठे थे। यहाँ तक कि घटिया शराब भी आसानी से नहीं मिलती थी।

युवा पति ने खिड़की खोली और लंबी साँस ली। ओह, शक्तिवर्धक हवा में साँस लेना कितना अच्छा है। खिंची-खिंची दृष्टि उसके चेहरे से हट गई और उसकी नाड़ी स्थिरता से चलने लगी।

नदी की दूसरी ओर बैरकों से बिगुल की आवाज सुनाई दी। वसंत की पतली और शुद्ध हवा में से उसकी ध्वनि साफ सुनाई दी। फिर सड़क के शोर में आवाज गुम हो गई और उसने खिड़की बंद कर दी।

वह भोजनकक्ष में गया और मेज का निरीक्षण ध्यानपूर्वक किया। समस्त कार्यों की समाप्ति के बाद उसका अच्छा मित्र डॉक्टर, दोपहर में अच्छा खाना पसंद करता था।

''क्या तुम्हें विश्वास है कि यह सबसे पुरानी बोतलों में से है?'' उसने बंद बोतल, जिसका घन-परिमाण धूप में चमक रहा था, दिखाकर दासी से पूछा—''वह जो दाएँ हाथ की तरफ है?''

''हाँ, श्रीमान्।''

''जाओ और कुछ अच्छी तेज कॉफी का ऑर्डर दो—काफी तेज हो! डॉ. वैटरलिंग को अच्छी काफी मिलनी चाहिए।''

''जी श्रीमान्।''

बंद बोतल को रोशनी में थामे, उसने मेज पर चीजों को इधर-उधर सँवारा। उसे खयाल आया कि इस शराब को उसकी पत्नी बहुत चाहती है। वह हमेशा इसके साथ रात के खाने पर इसका आनंद लेती है। उसने शराब के बारे में उसके स्थायी मजाकों को याद किया कि किस प्रकार उसको 'लेडी टिपसी' कहकर उसने शराब पी थी और किस तरह उसकी पत्नी ने डरानेवाली अंगुली को हिलाते हुए इसका उत्तर दिया था—''हाँ, इस पुरानी तीक्ष्ण शराब ने कई मतभेद पैदा किए हैं, परंतु अंत हमेशा हँसी और चुंबन में हुआ है।''

उसके बाद—अब वह और डॉक्टर—दोनों मिलकर पीएँगे। दो मोटे गोल आँसू, दाढ़ी से भरे उसके गालों पर गिरे!

''विवादग्रस्त! मुझे ऐसा महसूस क्यों कहना चाहिए?'' वह बड़बड़ाया और पुन: घूमने और प्रतीक्षा करने पिछले कमरे में चला गया।

फिर उसी डर, उसी दु:खमय संशय ने उसे घेर लिया कि अंदर उद्दंड संघर्ष चल रहा था और किसी तरह उसे सीधे प्रभावित नहीं कर रहा था, परंतु था उसी के लिए।

यह उसकी प्यारी पत्नी ही थी जिसको उसे सहन करना था। एक शक्तिशाली विचार ने उसको घेरा कि प्रेम उत्तरदायित्व है और साथ-ही-साथ आनंद भी! उसके लिए अब जीवन-मृत्यु का प्रश्न था!

'जीवन! हे ईश्वर, यदि वह अपना जीवन समाप्त कर दे!'

वह असत्री को कितनी उत्सुकता से प्यार करता था। पहले क्षण से ही जब वह लासेकिल में उसे मिला था, जहाँ उन्होंने विवाह के निमित्त आराधना के वेगवान दिन व्यतीत किए थे; तब सबकुछ कितना सुंदर था! जब उनका विवाह हुआ, हनीमून के दौरान, उस समय क्या कोई उनके परस्पर प्रेम से ऊँचा उठ सकता था? उसने सोचा। फिर भी, अब जबकि उसने उसके द्वार पर प्रतीक्षा की तो अपने आपसे कहा कि कोई महान् शक्तिशाली और पवित्र वस्तु उसके जीवन में आ गई थी। उसने अनुभव किया जैसे उसके हृदय की कोमल तारें काट दी गई हों! फिर भी, यह प्रतीक्षा, बहुतायत से उसकी लालसा! यदि वह उसका हाथ चूम सकता—उस स्त्री का हाथ जो उसको अपने जीवन से भी अधिक प्यारी थी, संसार की हर वस्तु से प्यारी!

''तुम्हें संतोष करना चाहिए।'' डॉक्टर ने कहा था।

संतोष! परंतु इतना कुछ दाँव पर लगाने के बाद वह संतुष्ट कैसे हो सकता था? यह जानने के लिए कि वह कितनी पीड़ा झेल रही थी, जीवन देने के लिए मृत्यु से कैसे जूझ रही थी और वह अनुपयोगी जीव की तरह बाहर खड़ा था; दुर्भाग्य के शाप से बचने में असमर्थ!

''तुम शोक में बच्चे पैदा करोगी!'' उसने धीरे से शब्द दोहराए। जब वह स्कूल में था तो इन शब्दों को उसने बार-बार पढ़ा था। तब उसके लिए इनका कोई अर्थ नहीं था; और अब इन शब्दों में कितना सत्य था—उसकी पत्नी की शहादत, उसका भावुक प्यार, यातना से खरीदी हुई उसकी प्रसन्नता! यहाँ तक कि जब परमात्मा ने भी शाप दिया तो स्त्री को ही उत्तरदायी ठहराया।

अपने विचारों में खोया हुआ वह आगे-पीछे चलता रहा। एकाएक एक हृदय-विदारक चीख! और दूसरी चीख! आशाहीन कराह—फिर खामोशी!

भय से चेतनाशून्य, मृत्यु की भाँति पीला, दयापूर्ण, एक असहाय आकृति, वह डगमगाते हुए द्वार की ओर गया और सुनने लगा।

ऐसा जान पड़ता था कि दृष्टि और स्पर्श ज्ञान उसे छोड़ गए थे, परंतु हलकी सी आवाज भी उसके कानों पर गर्जना की तरह पड़ती थी। उसने अपने मित्र की धीमी वेगयुक्त आज्ञाओं की दबी आवाज, प्रश्न करती हुई नर्स की निश्चल आवाज को सुना और इनके द्वारा सुना अपनी पत्नी की दु:ख भरी कराह को।

''मेरी विनीत असत्री, मेरा मधुर प्यार!'' वह प्यार से बोला।

दु:ख के आक्रोश से वह दिवान पर गिर पड़ा और कराहने लगा, ''मेरे परमात्मा, बचाओ उसे! यदि तुम दयालु हो तो मैं तुमपर विश्वास करूँगा।''

❑

एक गहरा नि:श्वास, जैसे कोई असहनीय बोझ से मुक्त हो गया हो और फिर एक दुर्बल सी चीख उसके कानों में पड़ी।

''यह समाप्त हो गया, '' वह उछला और चिल्लाया—''हमें बच्चा मिल गया! मेरी असत्री को और मुझे—हमें बच्चा मिल गया!''

फिर प्रतिक्रिया शुरू हुई। उत्तेजना अत्यधिक रही थी। असीम भय और अनिश्चय का नशीले आनंद में बदल जाना उसके लिए ज्यादा था। वह कुरसी में दुबक गया और सिसकियों को दबाकर बच्चे की भाँति रोने लगा ताकि मरीज उनको सुन न लें।

तब उसका हृदय अकथनीय आनंद से भर गया। अत्यंत दबी-दबी नाड़ियाँ बदल गईं; वह स्तब्ध होता गया जैसे-जैसे नशे की दवाई खाली होती गई। उसका मस्तिष्क गतिहीन हो गया।

द्वार खुला और डॉक्टर अंदर आया।

वह जल्दी से उठा—''कैसी है वह?''

''ठीक-ठाक; उसे आराम चाहिए, काफी आराम।''

''लड़का हुआ है या लड़की?'' जल्दी बताओ।

आस्तीनवाली कमीज में डॉक्टर काम के कारण पसीना-पसीना होते हुए अपने मित्र की बेसब्री पर मुसकराया और क्षण भर के लिए कुछ हिचकिचाया। अंत में उसने कहा—''लड़का हुआ है, और क्या होता?''

''सच? क्या यह वास्तविकता है?''

उसने डॉक्टर के कंधों के ऊपर से शयनकक्ष की ओर झाँका।

''मैं अब अंदर जाऊँ क्या? केवल एक मिनट, बड़ी कृपा...'' उसने विनयपूर्वक बच्चे की तरह पूछा।

''हाँ, परंतु एक नजर के लिए।'' डॉक्टर ने चुटकी ली।

उसने द्वार खोला और देहली पर खड़ा हो गया। चौड़े सफेद बिस्तर पर, थकी-थकी और पीली, उसकी पत्नी लेटी थी और उसकी बगल में नरम कंबलों में लिपटा नन्हा जीव पड़ा था।

गतिहीन होकर उसने अपनी पत्नी की ओर झाँका; वह एक शब्द भी नहीं बोल पाया, परंतु बड़े-बड़े आँसुओं ने, जो उसके गालों पर गिरे, उसके आवेग को उजागर कर दिया।

उसने अपनी आँखें खोलीं जो मध्यम रोशनी में पहले से भी काली और बड़ी नजर आ रही थीं, परंतु आनंद और कोमलता से। अपने दुर्बल हाथ को निद्राग्रस्त नन्हें की ओर हिलाया; उसके मुख पर अत्यंत प्रसन्नता थी।

''गोरन!''

''असत्री!''

उसने अपनी बाँहें फैलाईं जैसे पत्नी और बच्चे को लपेटना चाहता हो। फिर चारपाई के पास घुटनों के बल बैठ गया; प्यार से उसके हाथ को चूमा, जैसे युवा माँ कोई रानी हो और चारपाई के सिरे पर सिर को इस तरह रख दिया, जैसे प्रार्थना कर रहा हो!

''क्या तुम्हें नींद आ रही है, प्रिये?''

कोई उत्तर नहीं मिला। उसने ऊपर देखा। वह सो रही थी।

उसने ध्यानपूर्वक और नम्रता से उसका हाथ चूमा और धीरे से नीली सिल्क की चादर पर रख दिया। वह काफी देर उसकी ओर देखता रहा। उसकी नींद शांत थी; केवल मुँह के कोने धैर्य से हिल रहे थे। उसने अपने होंठों से बच्चे को छुआ और धीरे से बाहर आ गया, जैसे अंदर गया था।

डॉ. वेटरलिंग उसे द्वार पर मिला। ''सब ठीक है न?'' उसने पूछा।

''वह सो रही है।''

''ठीक है, तो अब मैं जा सकता हूँ। उसे नींद ही चाहिए और—कोई उत्तेजना नहीं। अब बताओ, लड़के की बाबत क्या सोचते हो? क्या यह सुंदर लड़का नहीं है?''

''हाँ, वह माँ की तरह लगता है।''

''बाप हमेशा ऐसा ही कहते हैं; वे आश्चर्यजनक रूप से शरमीले होते हैं।''

''बेहूदा बात मत करो, '' खाने की मेज का रास्ता दिखाते हुए बर्ग ने कहा, ''आओ, थोड़ा खा लें।'' वह कहता गया।

''क्यों, तुम्हें प्रतीक्षा करने के सिवा और काम नहीं था क्या?''

''यही काफी था। मैं जीवन में ऐसी कठिन परीक्षा से गुजरा नहीं था।''

''ठीक है, तुम जानते हो, हर चीज का हमेशा पहला समय होता है।''

दोनों बैठ गए। मेज पर घड़ी रखते हुए डॉ. वेटरलिंग ने जल्दी और चुपके से खाना शुरू कर दिया जबकि उसके मेजबान ने शराब गिलास में डाली। डॉक्टर ने युवा माँ की हालत के बारे में प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दिए। नहीं, वह वास्तव में थकी हुई नहीं है, परंतु उसका ध्यान रखना जरूरी है। क्या उसे किसी जल-प्राप्ति स्थान पर भेजना जरूरी होगा? ठीक है, इस प्रकार पति असत्री के पास रह सकेगा।

डॉ. वेटरलिंग ने अपनी घड़ी उठाई और कलाई पर बाँध ली।

''नमस्कार एवं धन्यवाद!'' बर्ग ने कहा।

''यदि मेरी जरूरत पड़ जाती है तो मुझे तुरंत बुला लेना।'' डॉक्टर ने कहा।

बर्ग खिड़की की ओर गया, चुपचाप सिगरेट पीता रहा। दोपहर का समय था। वसंत ऋतु का सूर्य शीशे के बीच गरमी से चमक रहा था और शुद्ध वायु टूटी नाड़ियों में बौछार कर रही थी। नदी में जहाज इधर-उधर गुजर रहे थे।

एकाएक टापू पर स्थित किले से प्रकाश हुआ—गहरा और सफेद धुएँ का बादल—तेज आवाज—जिससे खिड़कियाँ हिल गईं।

बर्ग चला। पहला विचार उसको अपनी पत्नी की बाबत आया।

खिड़की के किवाड़ पुन: खड़खड़ाए। वे राजकीय अभिवादन कर रहे थे।

उसने अपना सिगार एक ओर फेंक दिया और शयनकक्ष की ओर जल्दी से भागा।

मरीज जाग रहा था और व्यग्रता से हिलडुल रहा था। नर्स उसे शांत करने का प्रयास कर रही थी, परंतु तोप की प्रत्येक गूँज फिर तेजी से बेचैनी को बढ़ा देती थी।

''कुछ-न-कुछ करना होगा, '' नर्स चिल्लाई—''यदि यह शांत नहीं होती।''

''असत्री, असत्री! परमात्मा के लिए शांत हो जाओ।''

उसने उसको अपनी बाँहों में ले लिया और चूमा।

''मेरा बच्चा, '' वह चिल्लाई—''मुझे मेरा बच्चा चाहिए।''

''डॉक्टर को बुलाओ, डॉ. वेटरलिंग—दोनों लड़कियों को भेजो।'' बर्ग ने भय के आतंक में आज्ञा दी। तोपों के प्रकाश को देखने की बजाय, उसे महसूस करता हुआ और उनकी ऊँची आवाजों से काँपता हुआ, पीला और असहाय, वह कमरे से बाहर आ गया। उसने खिड़की पर परदा डाल दिया, उसमें गद्दे और तकिए रखे, परंतु कोई परिणाम नहीं निकला। उसने क्रोध से मुट्ठियाँ बंद कीं और क्रूर शोर को बुरा-भला कहा।

जब वह कमरे में लौटा तो वहाँ सबकुछ गड़बड़ देखा। बच्चा लापरवाही की स्थिति में पड़ा रो रहा था जबकि नर्स अपनी पूरी शक्ति से बीमार औरत को चारपाई पर लिटाने के लिए संघर्ष कर रही थी। आदमी व्याकुल होकर, न समझी जानेवाली चीखों के साथ इधर-उधर भाग रहा था।

''रुक जाओ, परेशान मत होओ।'' नर्स ने संक्षेप में कहा। वह चारपाई की ओर मुड़ा और अपनी पत्नी के हाथ

थामे। उसके स्पर्श ने उसे शांत कर दिया; वह धीमे से कराही। फिर उसने धीरे से आँखें खोलीं—''मेरे गोरन, मत रो।'' उसने उसके गालों पर गिरते आँसुओं को देखकर कहा।

''यह जल्दी समाप्त हो जाएगा।''

फिर उसका दिमाग घूमने लगा। उसने तकिए के सहारे की याचना की। ''उसका दम घुट जाएगा।'' वह चिल्लाई। उसके पति ने उसके माथे को चूमा और वह क्रोधित होकर उसकी ओर मुड़ी। वह उसे अब प्यार नहीं करता था, वह जंगली था और उसे सताने आया था। उसने बच्चे को चुरा लिया था; हाँ, हाँ, वह जंगली था—एक शैतान! कुछ समय के लिए वह निश्चल हो गई और बर्ग ने चुपके से उसको अपनी बाँहों में थामा। एकाएक तीक्ष्ण चीख के साथ उसने अपने हाथ फैला दिए। उसका शरीर क्षण भर में कठोर हो गया और फिर लुढ़ककर पीछे गिर गया। बाहर उदासीनता से तोप गूँजी। यह राजकीय अभिवादन था। बर्ग के कानों के लिए यह वास्तव में एक रानी के लिए राजकीय अभिवादन था—उस रानी के लिए जिसने मातृभूमि को जीवन देने के लिए अपना बलिदान कर दिया।

❑

केरन

—एलेक्जेंडर किलैंड (नार्वे)

करारुपर इन में एक समय केरन नाम की युवती थी। वह स्वयं अथितियों की सेवा करती थी क्योंकि मालकिन रसोई में बरतनों में लीन रहती थी। करारुपर इन में काफी लोग आते थे—जब शरद् ऋतु की शामें अंधकारमय होतीं तो पड़ोसी इकट्ठे होकर गरम कमरे में बैठते और इच्छा भर कॉफी पीते थे। पर्यटक और घुमक्कड़ लोग भी, जो जुकाम से नीले हुए रहते थे, अपने पैर पटकते और गरम चीज की याचना करते थे जिससे वे अपने अगले पड़ाव पर पहुँच सकें।

केरन बिना जल्दी किए, चुपचाप इधर-उधर हर-एक को बारी-बारी परोसती जाती थी। वह छोटी और कोमल थी, केवल बच्ची, सच्ची और रक्षित, और युवा लोग उसकी ओर ध्यान नहीं देते थे, परंतु अपने पुराने ग्राहकों के लिए, जिनका इन में आना महत्त्वपूर्ण अवसर होता था, बहुत प्रिय थी। उनके लिए शीघ्रता से कॉफी बनाती और सात गुना गरम परोसती। जब वह नौकरों के साथ अतिथियों में घूमती तो भद्दी तरह से पोशाक पहने मोटे व्यक्ति एक ओर खड़े हो जाते और इसको जाने देते तथा कई इसे प्रशंसा से देखते। केरन की आँखों का रंग गहरा भूरा था। वह हर चीज देखती थी और दूर तक देखती थी। उसकी भौंहें अद्भुत और विस्मित रूप से कमानीदार थीं। अनजाने लोग खयाल करते थे कि वह उनकी आज्ञा नहीं समझती थी, परंतु वह सबकी सुनती थी और कभी कोई गलती नहीं करती थी। उसका यह अपना ढंग था, भले ही वह दूर तक देखती, अथवा सुनती या प्रतीक्षा करती या स्वप्न देखती थी!

पछुवा हवा जोर से चल रही थी और पश्चिमी समुद्र की लंबी और भारी लहरों को उछाल दे रही थी। नमक, नमी और झाग को रेत पर फेंक रही थी, परंतु जब हवा करारुपर इन पहुँचती तो इसका जोर केवल अस्तबल के दरवाजे को चीरता या फिर उस दरवाजे को, जो अस्तबल और रसोई को मिलाता था। हवा का झोंका फटा और उस स्थान को भर दिया, छत से लटक रही लालटेनों को इधर-उधर झुलाया, साईस की टोपी उड़ाकर अँधेरे में फेंक दी, घोड़ों के कंबलों को उनके मुँह पर डाल दिया और अंत में एक सफेद मुरगी को उसके दड़बे से उठाकर पानी के टब में डाल दिया; मुरगी डर के मारे कुड़कुड़ करने लगी, साईस ने कसम खाई, चूजे कूकने लगे। रसोई धुएँ से भरा था। घोड़े बेचैन होकर अपने खुरों को पत्थरों पर मारकर चिनगारियाँ निकालने लगे। यहाँ तक कि बतखें, जो इकट्ठी होकर टर्रा रही थीं, नाँद के निकट जई डालने पर कुड़कुड़ करने लगीं और इस बीच लगातार हवा भयानक रूप से गरजती रही। अंत में दो आदमी इन के कमरे से निकले और अपनी चौड़ी पीठों से दरवाजे को धकेलने लगे जबकि उनके पाइपों से चिनगारियाँ उड़कर उनकी काली दाढ़ियों पर गिर रहीं थीं। हर संभव नुकसान करने के बाद, हवा बड़े तालाब को पार करती हुई, समतल भूमि की ओर उड़ गई और यहाँ से आधा मील दूर जाती हुई डाक गाड़ी को हिला गई।

''करारुपर इनके लिए हमेशा कितनी जल्दी करता है।'' घुड़सवार एंडरस हाँफते घोड़े को चाबुक मारते हुए बड़बड़ाया। प्रबंधकर्ता बीस बार खिड़की को नीचा करके उसे पुकार चुका था। पहले तो कॉफी के प्याले के लिए मित्रतापूर्ण निमंत्रण था, फिर धीरे-धीरे अच्छा स्वभाव लुप्त हो गया। अंत में, खिड़की धड़ाम से नीचे गिरी तथा चालक और घोड़ों पर सांत्वनारहित टिप्पणी की गई।

हवा भूमि पर नीची चल रही थी और हीदर झाड़ियों में से लंबी, अजीब आहों की मंद ध्वनि आ रही थी। चाँद पूरा था, परंतु गहरे बादल उसकी रोशनी को ढक रहे थे। करारुपर इन के पीछे सड़ी लकड़ी के ढेरों और गहरे

कपटी गड्ढों से ढकी दलदल थी। हीदर झाड़ियों के बीचोबीच घास की एक पट्टी थी जो रास्ते की तरह दिखाई देती थी, परंतु यह रास्ता नहीं था क्योंकि औरों से अधिक गहरे और पानी से भरे गड्ढे के किनारे जाकर समाप्त हो जाता था। घास में एक चमकीली लोमड़ी छिपी हुई बैठी प्रतीक्षा कर रही थी और समतल भूमि पर एक खरगोश आराम से उछल-कूद रहा था। लोमड़ी को विश्वास था कि खरगोश शाम को देर तक चक्कर नहीं लगाएगा। उसने सावधान नाक को फैलाया और आ रही हवा की दिशा में सूँघा। निरीक्षण के लिए स्थान ढूँढ़ा तो विचार किया कि लोमड़ियाँ हमेशा कितनी बुद्धिमान् रही हैं और खरगोश कितने मूर्ख!

इन में गैर-मामूली हलचल हुई! कुछ पर्यटकों ने भूने खरगोश का ऑर्डर दिया था। मालिक एक नीलामी में थिस्टेड गया था और उसकी पत्नी रसोई का दायित्व निभाने की आदी थी। अब दुर्भाग्य से ऐसा हुआ कि कारोबार के बारे में वकील मालिक से बात करना चाहता था और चूँकि वह घर पर नहीं था। अत: अच्छी औरत को उसका लंबा भाषण सुनना पड़ा और एक जरूरी पत्र लेना पड़ा—इस प्रक्रिया ने उसकी शांति भंग कर दी। एक अजनबी स्टोव के पास नाविक की तेलपुती पोशाक पहने सोडावाटर की बोतल की प्रतीक्षा कर रहा था। दो मछली बेचनेवाले तीन बार ब्रांडी का ऑर्डर दे चुके थे। अस्तबल का लड़का खाली लालटेन थामे मोमबत्ती की राह देख रहा था और एक लंबा तथा भद्दा किसान ललचाई आँखों से केरन का पीछा कर रहा था—केरन को उसको बकाया रुपए देना था। केरन बिना जल्दी और गलती किए आई। कोई कठिनाई से अनुमान लगा सकता है कि इतनी चीजों को वह तुरंत कैसे निभा सकती थी। बड़ी आँखें और कमानीदार भौंहें हैरानी और आशाओं से भरी थीं। छोटा सुंदर सिर सीधा और शांत था। यदि वह कोई गलती नहीं करती थी तो अपने विचारों को भी एकत्र रखती थी। उसकी नीली ऊनी पोशाक उसके लिए छोटी थी। तंग गलेबंद ने बालों के नीचे उसके मांस पर झुर्रियाँ डाल दी थीं। ''युवती की चमड़ी गोरी है।'' मछली बेचनेवालों में से एक ने दूसरे से कहा। वे युवा थे और केरन की बाबत समझदारों की तरह बोले।

किसी ने खिड़की के पास खड़े, घड़ी की ओर देखते हुए कहा, ''आज रात डाक जल्दी आ गई है।'' यह पैदल-पथ पर हड़बड़ाई, द्वार खोल दिए गए और हवा ने स्टोव से निकले धुएँ को उड़ा दिया। ज्यों ही प्रबंधक ने दरवाजे पर कदम रखा, केरन रसोई से निकली और हृदय से 'शुभ प्रभात' कहा! वह लंबा, सुंदर, काली आँखोंवाला तथा कुरकुरी भूरी दाढ़ीवाला व्यक्ति था और उसके घुँघराले बालों ने उसके छोटे सिर को ढका हुआ था। सुंदर लाल शाही डेनिश कपड़े से बना उसका ओढ़ना लंबा और भारी था और कंधे से काली फर लटक रही थी। मेज के ऊपर दीवार से लटके मोम के दो दीयों की सारी मध्यम रोशनी उसी श्रेष्ठ और लाल रंग के स्थान पर केंद्रित हो रही थी और बाकी काले और भूरे स्थान को काला और भूरा रहने के लिए छोड़ दिया था। सुंदर और काले, घुँघराले बालोंवाले लंबे व्यक्ति के लाल ओढ़ने की परतें तेज और अद्भुत रंग के साथ चमक रही थीं।

केरन अपने वेटर के साथ शीघ्रता से रसोई में आई। जब वह एक अतिथि से दूसरे के पास गई, उसने अपना सिर झुकाया हुआ था ताकि कोई उसका चेहरा न देख सके। उसने मछली बेचनेवालों के सामने भुना खरगोश रखा और व्यापारी पर्यटक के लिए, जो साथवाले कमरे में बैठा था, सोडावाटर की बोतल लाई। उत्सुक किसान को चरबी की बत्ती दी और स्टोव के पास खड़े अजनबी को बकाया रुपए हाथ में थमाया।

मालकिन बड़ी निराश थी क्योंकि रसोई में प्रत्येक वस्तु उथल-पुथल कर रही थी। उससे वकील का पत्र गुम हो गया था और यहाँ भारी गड़बड़ी मची थी। पर्यटक जोर से घंटी बजाकर मेज को पीट रहा था। मछली बेचनेवाले सामने रखे खरगोश को देखकर इतने हँसे कि अधमरे हो गए। व्याकुल किसान ने मालकिन के कंधे पर मोमबत्ती से थपथपाया और अपने आपको पेरु पक्षी की तरह फुला लिया।

इस सारी उन्मत्त व्याकुलता में केरन गायब हो चुकी थी। घुड़सवार एंडरस चालक के स्थान पर बैठा था।

अस्तबल का लड़का द्वार खोलने को तैयार था। डाकगाड़ी में बैठे पर्यटक घोड़ों की तरह बैचेन हो रहे थे, भले ही उनके देखने के लिए कोई प्रीतिकर वस्तु नहीं थी। हवा अब भी अस्तबल से सीटी बजाती हुई खड़खड़ा रही थी। अंत में प्रबंधक, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे, आया। जब उसने गाड़ी में प्रवेश किया, उसका ओढ़ना उसकी बाँह पर था। उसने विनम्र शब्दों में देरी के लिए क्षमा माँगी। ज्यों ही उसने अपना स्थान ग्रहण किया, वह अपने ओढ़ने को देखकर अपने आप पर हँसा। द्वार बंद कर दिया गया और डाकगाड़ी चल पड़ी। एंडरस ने घोड़ों को नरमी से चलाया। अब जल्दी की कोई जरूरत नहीं थी। समय-समय पर उसने कपटपूर्वक प्रबंधक की ओर देखा जो अब भी अपने आपपर हँस रहा था जबकि हवा उसके बालों को परेशान कर रही थी। घुड़सवार भी हँस रहा था। उसे कुछ संदेह हुआ। एक मोड़ तक हवा ने गाड़ी का पीछा किया, फिर हीदर झाड़ियों में नि:श्वास भरती हुई समतल भूमि की ओर चली गई।

लोमड़ी अपने स्थान पर लेटी हुई थी। अब सबकुछ तैयार था; खरगोश भी जल्दी आने वाला था। दूर तक इन में शांति स्थापित हो गई थी। उत्तेजित किसान को उसकी बत्ती से निजात मिल गई थी, वह बकाया ले चुका था; पर्यटक अपना खरगोश चट कर चुके थे। मालकिन ने थोड़ी शिकायत की, परंतु केरन को दोष नहीं दिया। संसार में किसी ने भी केरन को बुरा-भला नहीं कहा था। चुपचाप अचेतावस्था में वह एक से दूसरे के पास शीघ्रता से गई और स्वच्छ संतुष्टि, जो हमेशा उसके कदमों का पीछा करती थी, इन के आधे अँधेरे बड़े कमरे में फैल गई।

दोनों मछली बेचनेवाले, जिन्होंने पहले ऑर्डर के बाद शराब और कॉफी के लिए दूसरा ऑर्डर दिया था, उसके साथ विशेषकर बहुत खुश थे। उसके पीले गाल पर लालिमा थी, होंठों पर मुसकराहट की टिमटिमाहट थी और एक बार जब अपनी आँखें उठाती तो उनकी (आँखों की) रोशनी चकाचौंध कर देती थी। जब उसे आभास होता कि पुरुषों की आँखें उसे ताक रही हैं तो अलमारी से चम्मच लाने का बहाना करके दूसरे कमरे में चली जाती थी।

''क्या तुमने प्रबंधक को देखा?'' उनमें से एक ने पूछा।

''नहीं, तब तक वह बाहर चला गया! वह बहुत जल्दी चला गया।'' भुने खरगोश से भरे मुँह से दूसरे ने उत्तर दिया।

''बहुत सुंदर व्यक्ति! मैं उसके विवाह पर गया था।''

''तो उसका विवाह हो चुका है?''

''हाँ, उसकी पत्नी अलस्ट्रप के जमींदार की बेटी है और विवाह की रात, मैं वहाँ गया था। मजेदार समय था, मैं तुम्हें विश्वास से कहता हूँ। मेरा विश्वास है—उनके दो बच्चे हैं।''

केरन ने चम्मच गिरा दिए और बाहर चली गई। अपने पीछे इन में कही गई बातों को उसने नहीं सुना। वह सेहन पार करके अपने कमरे में चली गई और यंत्र की तरह अपना बिस्तर बिछाने लगी। उसने अँधेरे को घूरा; अपने हाथों से सिर को दबाया, छाती को दबाया; वह कराही। वह कुछ समय भी आराम के लिए नहीं निकाल पा रही थी—कुछ भी नहीं! अपनी मालकिन की शिकायत भरी आवाज को उसने सुना—''केरन, प्यारी केरन!'' वह सेहन पार करके इनके पीछे दलदल की ओर दौड़ गई।

चक्कर खाती हुई घास की पट्टी आधी रोशनी में नजर नहीं आ रही थी, परंतु वह रास्ता नहीं था। कोई भी इसपर चलने का साहस नहीं करता था, क्योंकि वह एकाएक बड़े तालाब के किनारे की ओर जाता था। खरगोश ने अपने कदम तेज कर दिए। उसने खड़खड़ाहट सुनी और लंबी छलाँग लगाई, जैसे अपने बचाव के लिए पागल हो—बिना यह जाने कि वह किस चीज से डर रहा है, समतल भूमि की ओर भाग गया। लोमड़ी ने अपनी तेज नाक फैलाई और हैरानी से खरमोश की ओर देखा। उसने कुछ नहीं सुना। अपनी जाति की स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण वह

गड्ढे में दुबका पड़ा रहा—उसने कोई गलती नहीं की थी। वह खरगोश की साहसी क्रिया को समझ नहीं पाई। वह देर तक सिर को बढ़ाए लज्जित शरीर के साथ खड़ा रहा। उसकी घनी पूँछ हीदर झाड़ियों से ढकी हुई थी और वह हैरान हुआ कि लोमड़ियाँ इतनी सुस्त हो गई हैं अथवा खरगोश बुद्धिमान् हो गए हैं! जब पश्चिमी हवा अपना लंबा रास्ता तय कर चुकी तो उत्तरी हवा में बदल गई, फिर पूरब की हवा बनकर दक्षिणी हवा का रूप ले लिया और पुनः सागर पर पश्चिमी हवा बन गई तथा अजीब निःश्वासों के साथ हीदर झाड़ियों से होती हुई बालू के टीलों पर छा गई!

परंतु करारुपर इन में दो हैरान-भूरी आँखों, एक हलके नीले ऊनी चोगे की, जो छोटा पड़ गया हो, जरूरत थी और मालकिन पहले से अधिक शिकायत करती थी। वह बिलकुल समझ नहीं पाई। घुड़सवार एंडरस और एक दूसरे व्यक्ति के सिवा कोई भी समझ नहीं पाया।

❑

एक माँ की कहानी

—हंस क्रिचन ऐंडरसन (डेनमार्क)

माँ छोटे बच्चे के पास बैठी थी। वह बहुत उदास थी और डर रही थी कि कहीं मर न जाए। उसका नन्हा चेहरा पीला पड़ गया था और आँखें बंद थीं। बच्चा कठिनाई से साँस ले पा रहा था। कभी इतनी गहरी साँस लेता था जैसे वह आहें भर रहा हो। तब माँ पहले से और अधिक उदास हो जाती थी।

दरवाजे पर दस्तक हुई और विनीत बूढ़ा आदमी अपने को किसी चीज में लपेटे अंदर आया; उसका ओढ़ना घोड़े के बड़े कपड़े जैसा था जिससे वह अपने आपको गरम रख सके। उसे इसकी जरूरत थी क्योंकि शरद् ऋतु थी। बाहर हर वस्तु बर्फ से ढकी हुई थी और हवा इतनी तेज चल रही थी कि चेहरा कट रहा था।

बूढ़ा सरदी से काँप रहा था। क्षण भर के लिए बच्चा शांत हो गया, तो माँ अंदर गई और उसके लिए थोड़ी बीयर छोटे बरतन में गरम करने के लिए स्टोव पर रख दी। बूढ़ा आदमी बैठ गया और झुला झुलाने लगा तथा माँ पुरानी कुरसी पर उसके पास बैठ गई और बच्चे को देखने लगी जिसे साँस लेने में भी पीड़ा हो रही थी; इसने उसका नन्हा हाथ थाम लिया।

''तुम सोचते हो कि मैं इसे रख सकूँगी?'' उसने पूछा, ''अच्छा, ईश्वर इसको मुझसे ले तो नहीं जाएगा न?''

वह बूढ़ा आदमी—जो साक्षात् मृत्यु था—उसने इस अजीब ढंग से सिर हिलाया जिसका अभिप्राय हाँ और ना—दोनों हो सकते थे। माँ ने आँखें नीची कर लीं और आँसू उसके गालों पर टपकने लगे। उसका सिर भारी हो गया, क्योंकि तीन दिन और तीन रात वह अपनी आँखें बंद नहीं कर पाई थी और अब वह एक क्षण के लिए सोई थी। फिर वह उठी और सरदी से काँपने लगी।

यह क्या हुआ? उसने पूछा और चारों तरफ देखा, परंतु बूढ़ा व्यक्ति जा चुका था और साथ में उसका बच्चा भी अपने साथ ले गया था। कोने में पुरानी दीवार घड़ी गुनगुना और घरघरा रही थी। भारी साँसों का बोझ फर्श पर गिरा—स्थूल!—और घड़ी रुक गई।

परंतु माँ बच्चे के लिए रोते हुए घर से बाहर दौड़ी।

बाहर एक औरत बर्फ में काले कपड़े पहने बैठी थी, उसने कहा—

''मृत्यु तुम्हारे साथ कमरे में थी, मैंने उसे, तुम्हारे बच्चे के साथ जल्दी से जाते हुए देखा था; वह हवा से भी तेज कदम भर रही थी। जिसे वह एक बार ले जाती है, फिर उसे कभी नहीं लौटाती।''

''वह गई किस तरफ है, मुझे इतना बता दो, '' माँ ने पूछा, ''मुझे रास्ता बता दो, मैं उसे ढूँढ़ लूँगी।''

''मैं उसे जानती हूँ, '' काले कपड़ोंवाली औरत ने कहा, ''परंतु इससे पहले कि मैं तुम्हें बताऊँ, तुम वे सारे गीत मुझे सुनाओ जो तुमने बच्चे को सुनाए थे। मुझे वे गीत अच्छे लगते हैं; मैं उनको पहले सुन चुकी हूँ। मैं रात हूँ और मैंने तुम्हारे आँसू देखे हैं जब तुम उन्हें गाती थी।''

''मैं उन सबको गाऊँगी—सबको, '' माँ ने कहा, ''परंतु मुझे जाने दो, ताकि मैं उसे पकड़ सकूँ और अपने बच्चे को पा सकूँ।''

परंतु रात मौन और निश्चल बैठी रही। फिर माँ ने अपने हाथ सिकोड़े, गाना गाया और रोई। बहुत गाने और उनसे अधिक आँसू बहाने पर, रात बोली, ''दाईं ओर देवदार के घने जंगल में जाओ क्योंकि मैंने मृत्यु को तुम्हारे बच्चे के साथ उधर ही जाते देखा था।''

जंगल में काफी अंदर सड़कों का चौराहा था और वह जानती थी कि कौन सा रास्ता पकड़े। वहाँ बिना फूल-

पत्तों के काले काँटों की एक झाड़ी थी; ठंडी शरद् ऋतु के कारण टहनियों से बर्फ के तोदे लटक रहे थे।

''क्या तुमने मृत्यु को मेरे नन्हें बच्चे के साथ जाते हुए नहीं देखा?''

''हाँ, '' झाड़ी ने उत्तर दिया—''परंतु मैं तुम्हें तब तक नहीं बताऊँगी कि वह किस तरफ गई है, जब तक तुम अपनी छाती से मुझे गरम नहीं करती। मैं यहाँ जम रही हूँ; मैं बर्फ बन रही हूँ।''

उसने झाड़ी को सीने से लगा लिया, बिलकुल पास ताकि अच्छी तरह गरम कर सके। काँटे उसकी चमड़ी में घुस गए और उसका रक्त बड़ी-बड़ी बूँदों में बहने लगा। काले काँटोंवाली झाड़ी के ताजा पत्ते निकल आए और उस काली शरद् रात में फूल खिल गए। एक दु:खी माँ का सीना कितना गरम होता है! काले काँटोंवाली झाड़ी ने बता दिया कि वह कौन सा रास्ता पकड़े।

फिर वह एक बड़ी झील के पास आई जहाँ न कोई जहाज था और न ही कोई नाव। झील न इतनी जमी हुई थी कि वह उसपर चल सके और न ही इतनी काफी खुली थी कि उसमें से चलकर निकल सके; फिर भी उसको इसे पार करना था—यदि वह बच्चे को पाना चाहती थी। फिर वह झील को ही पीने के लिए लेट गई; ऐसा करना किसी के लिए भी असंभव था, परंतु दु:खी माँ ने सोचा कि शायद कुछ अजूबा हो जाए!

''नहीं, यह कभी नहीं हो सकता, '' झील ने कहा, ''आओ, हम देखें कि हम समझौता कैसे कर सकते हैं। मुझे मोती इकट्ठे करने में रुचि है और तुम्हारी दोनों आँखें इतनी साफ हैं जैसी मैंने कभी नहीं देखीं। यदि तुम अपने आँसू मुझमें डाल दो तो मैं तुम्हें बड़े ग्रीन हाऊस तक पहुँचा दूँगी जहाँ मृत्यु फूल और वृक्ष उगाती है; उनमें से हर मानव एक जीवन है।''

''ओह, मैं बच्चे को पाने के लिए क्या कुछ नहीं दे सकती?'' प्रभावित माँ ने कहा; वह और रोई। उसके आँसू झील की गहराई में गिरकर दो अमूल्य मोती बन गए। झील ने उसको ऊपर उठा लिया जैसे झूले में बैठी हो, फिर उसे दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया जहाँ मीलों में एक शानदार घर खड़ा था। कोई यह नहीं बता सकता था कि वह जंगलों और गुफाओंवाला पर्वत था या ऐसी कोई जगह थी जो बनाई गई थी, परंतु बेचारी माँ उसे देख नहीं सकी क्योंकि वह अपनी आँखें खो चुकी थी।

''जो मेरे बच्चे को अपने साथ ले गई है, उस मृत्यु को मैं कहाँ ढूँढूँ?''

''वह अभी यहाँ नहीं पहुँची।'' भूरे बालोंवाली बूढ़ी औरत ने कहा, जो मृत्यु के शीशे के मकान में इधर-उधर ध्यान से घूम रही थी। ''तुमने यह रास्ता कैसे ढूँढ़ा और किसने तुम्हारी सहायता की है?''

''अच्छे ईश्वर ने मेरी सहायता की है, '' उसने उत्तर दिया—''वह कृपालु है और तुम भी कृपालु होगी। कहाँ—मैं अपने बच्चे को कहाँ ढूँढूँ?''

''मैं नहीं जानती, '' बूढ़ी औरत ने कहा, ''और तुम भी देख नहीं सकती हो। कई फूल और वृक्ष रात को मुरझा गए हैं। मृत्यु आएगी और उनका जल्दी पुनरारोपण करेगी। तुम भली प्रकार जानती हो कि क्रमानुसार प्रत्येक मानव के पास जीवन-वृक्ष अथवा जीवन-पुष्प है। वे दूसरे पौधों की तरह नजर आते हैं परंतु उनके दिल धड़कते हैं। बच्चों के दिल भी धड़क सकते हैं। इसपर विचार करो। संभवत: तुम अपने बच्चे के दिल की धड़कन को पहचान सको, परंतु तुम मुझे क्या दोगी यदि मैं बता दूँ कि तुम्हें और क्या करना होगा?''

''मेरे पास देने को और कुछ नहीं है, '' प्रभावित माँ ने कहा, ''परंतु मैं तुम्हारे लिए पृथ्वी के छोरों तक जा सकती हूँ।''

''वहाँ तुम्हारे करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है, '' बूढ़ी औरत ने कहा, ''परंतु तुम अपने लंबे बाल मुझे दे सकती हो। तुम्हें स्वयं ज्ञात होना चाहिए कि ये सुंदर हैं और मुझे अच्छे लगते हैं। इन के बदले में तुम मेरे सफेद

बाल ले सकती हो; ये सदा के लिए कुछ-न-कुछ हैं।''

''तुम और कुछ नहीं चाहती?'' उसने पूछा, ''मैं खुशी से इनको दे दूँगी।'' और उसने अपने सुंदर बाल उसे दे दिए और बूढ़ी औरत के सफेद बाल ले लिये।

इसके बाद वह उसे मृत्यु के महान् शीशे के घर में ले गई जहाँ फूल और वृक्ष आश्चर्य ढंग से आपस में मिले उग रहे थे। वहाँ घास के फूलों के नीचे सुंदर फूल खिले थे; कुछ बिलकुल ताजा और बाकी कुछ-कुछ मुरझाए हुए; पानी के साँप उनके आसपास मिलन कर रहे थे और केकड़े टहनियों में दृढ़ता से चिपक रहे थे। वहाँ पाम के भड़कीले वृक्ष थे; बलूत, केले, अजमोदा और पोदीने के खिले हुए पौधे भी थे। हर फूल और वृक्ष का नाम था; प्रत्येक मानव जीवन था; लोग जीवित थे, एक चीन में, दूसरा ग्रीनलैंड में—दुनिया में बिखरे हुए। बूढ़े, बड़े वृक्षों को गमलों में ढकेला गया था और काई में लिपटे रक्षित छोटे, दुर्बल फूल धरती में उपज रहे थे। परंतु दु:खी माँ तमाम छोटे-से-छोटे पौधों पर झुकी और प्रत्येक में मानव हृदय को धड़कते पाया और लाखों पौधों में से अपने बच्चे के दिल को पहचान लिया।

''यह है वह!'' वह चिल्लाई और केसर के नन्हें फूल की ओर हाथ फैलाए जो पीला और मुरझाया हुआ लटक रहा था।

''फूल को मत छूओ, '' बुढिया ने कहा, ''यहाँ बैठ जाओ, जब मृत्यु, जो कुछ ही मिनटों में आने वाली है, आएगी तो उसे पौधे उखाड़ने मत देना बल्कि उसको धमकाना कि यदि उसने ऐसा किया तो तुम दूसरे पौधे उखाड़ दोगी; तब वह डर जाएगी; उसको इन सबका हिसाब देना होता है; जब तक परमात्मा की आज्ञा नहीं होगी, एक भी पौधा उखाड़ा नहीं जाना चाहिए।''

एकाएक बड़े कमरे में से एक बर्फीला झोंका आया और अंधी माँ ने महसूस किया कि मृत्यु आ पहुँची है।

''तुमने यहाँ का रास्ता कैसे ढूँढ़ा?'' उसने पूछा, ''तुम मुझसे पहले जल्दी कैसे आ गई?''

''मैं माँ हूँ।'' उसने उत्तर दिया।

मृत्यु ने कोमल नन्हें फूल की ओर अपने हाथ बढ़ाए; परंतु उसने हाथ कसकर रखे और दृढ़ता से थामे रही; फिर भी उसने पूर्णत: सावधानी रखी ताकि वह एक पत्ती भी छू न सके। फिर मृत्यु ने अपने हाथों पर फूँक मारी और महसूस किया कि उसकी साँस बर्फीली हवा से अधिक ठंडी थी; और उसके हाथ शक्तिहीन होकर नीचे गिर गए।

''तुम मेरे विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती।'' मृत्यु ने कहा।

''परंतु दयालु परमात्मा कर सकता है।'' उसने उत्तर दिया।

''मैं केवल वही करती हूँ जिसकी वह आज्ञा देता है, '' मृत्यु ने कहा, ''मैं उसकी मालिन हूँ। मैं उसके तमाम फूल और वृक्ष ले जाती हूँ और स्वर्ग के विशाल उपवन की अनजानी धरती पर पुनरारोपण करती हूँ, परंतु ये वहाँ कैसे शोभायमान होते हैं, वहाँ कैसे, क्या होता है, मैं तुम्हें नहीं बताऊँगी।''

''मेरा बच्चा मुझे लौटा दो।'' माँ ने कहा और याचना करके रोई। एकाएक उसने अपने दोनों हाथों में दो प्यारे फूल पकड़ लिये और मृत्यु को पुकारा—''मैं तुम्हारे सारे फूल नष्ट कर दूँगी क्योंकि मैं निराशा में हूँ।''

''उन्हें हाथ मत लगाओ, '' मृत्यु ने कहा, ''तुम कहती हो कि तुम दु:खी हो और एक दूसरी माँ को दु:खी करने पर तुली हो।''

''दूसरी माँ?'' विनीत औरत ने कहा और फूलों को छोड़ दिया।

''यह दूसरी माँ आँखें हैं, '' मृत्यु ने कहा, ''मैंने इनको झील से निकाला है; ये तेजी से चमक रही थीं। मुझे मालूम नहीं था कि ये तुम्हारी हैं। इन्हें वापस ले लो, ये पहले से ज्यादा साफ हैं, निकटवाले गहरे कुएँ में झाँककर

देख लो। मैं तुम्हें इन दो फूलों के नाम बताऊँगी जो तुम उखाड़ना चाहती थी और जान जाओगी कि तुम निराशा और विनाश को प्राप्त होने जा रही थीं।

उसने कुएँ में झाँका; यह प्रसन्नता की बात थी कि उनमें से एक संसार के लिए किस प्रकार आशीर्वाद बन गई; उसके आसपास कितना आनंद और उल्लास फैल गया था। एक औरत ने दूसरी के जीवन को देखा कि वह रक्षा, निर्बलता, दु:ख और आहों से बना था।

''दोनों ही परमात्मा की इच्छाएँ हैं।'' मृत्यु ने कहा।

''इनमें से हत-भाग्य कौन सा फूल है और कौन सा भाग्यवान्?''

''यह मैं तुम्हें नहीं बताऊँगी, '' मृत्यु ने कहा, ''परंतु तुम्हें इतना मालूम होना चाहिए कि इन दो फूलों में से एक तुम्हारे बच्चे का है। यह तुम्हारे बच्चे का भाग्य था कि तुम उसका भविष्य बनी।''

फिर माँ ने डरकर जोर से चीख मारी।

''इनमें से मेरे बच्चे का कौन सा है? मुझे बताओ! मासूम बच्चे को छोड़ दो! इन तमाम दु:खों से मेरे बच्चे को मुक्ति मिल जाए। बेशक इसे ले जाओ! इसे परमात्मा के राज्य में ले जाओ। मेरे आँसुओं को भूल जाओ, मेरी प्रार्थना को भूल जाओ और उस सबको भूल जाओ जो मैंने किया है।''

''मैं समझ नहीं पा रही हूँ, '' मृत्यु ने कहा, ''क्या तुम अपना बच्चा वापस चाहोगी या मैं उसे ऐसे स्थान पर ले जाऊँ जिसे तुम नहीं जानती?'' फिर माँ ने हाथ मले और घुटनों के बल गिरकर प्रार्थना करने लगी।

''यदि मैं तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध प्रार्थना करती हूँ तो उसे मत सुनो! तुम्हारी इच्छा सदा सर्वोत्तम है। मुझे मत सुनो! मत सुनो मुझे!''

उसने अपने सिर को अपने सीने पर गिरा दिया।

मृत्यु उसके बच्चे के साथ अनजाने स्थान को चली गई!

❑

अगुए

—जुहानी अहो (फिनलैंड)

दोनों पादरी के घर में नौकर थे—वह अस्तबल का लड़का था जबकि वह घरेलू दासी थी। वह घोड़ों को चलाता था और यह घर में व्यस्त रहती। खाने के समय जब वे मेज के अलग-अलग कोनों पर बैठते तो कभी-कभी आपस में मजाक करते थे, परंतु प्राय: झगड़ते ही रहते थे। उनके मालिक एवं मालकिन का खयाल था कि वह जोड़ा अपूर्व और सबसे पृथक् था; वास्तव में कुत्ते और बिल्ली की तरह—जैसाकि लोग कहते थे।

परंतु रात को मछली पार्टियों में और दिन में घास सुखाने में एक-दूसरे की सहायता करने में या फिर दिन में मकई काटने में जो बातें होतीं, उससे दोनों में अपना घर बसाने का विचार धीरे-धीरे दृढ़ होता गया। दूर दलदल की ओर सुनसान स्थान में उन्होंने घर के लिए एक स्थान निश्चित कर लिया। वहाँ जंगल की भूमि थी और उसे केवल साफ करना था। विशाल समतल भूमि पर उगे भोजपत्र के पेड़ों को जोतने-बोने योग्य बनाना था और छोटी नदी के दोनों किनारों पर नीची भूमि को चरागाह में बदलना था। यदि वे घर बनाते तो मजदूरी कम थी और आरंभ में कम-से-कम एक घोड़े और एक गाय की जरूरत तो थी ही। इस अवस्था में विवाह में देर हो गई, परंतु एक वर्ष में उनका बंधन और दृढ़ हो गया और प्रतिदिन उनको भविष्य उज्ज्वल होने के आसार दिखाई देने लगे। अब तक जितनी बचत कर चुके थे, उसमें थोड़ा-बहुत जोड़ने तथा यह सोचने में कि जरूरत के अनुसार धन जुटाने में उन्हें कितनी देर प्रतीक्षा करनी होगी—अपना खाली समय व्यतीत करते थे। कोई स्वप्न में यह नहीं सोच सकता था कि स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा और अपना घर स्वयं बनाने की लालसा उनमें धीरे-धीरे कितनी बढ़ रही थी—कितनी बढ़ रही थी उस लड़के और लड़की में! पादरी के घर में समय इतनी अच्छी तरह कटा कि उन्हें खाने और कपड़े की कोई चिंता नहीं थी। फिर भी उनके दिल सुनसान स्थान से जुड़े थे।

जब गरमी के मौसम में उन्होंने काम करना बंद कर दिया तो उन्हें हर कोई चेतावनी देने लगा—''वहाँ दूर केवल पाले की भीषणता और उत्पात है और तुम केवल उधार के नीचे दब जाओगे। परिवार जल्दी बढ़ता है और हमारे यहाँ पहले ही काफी भिखारी हैं।'' परंतु उन्होंने गत पाँच वर्षों में मामला ठीक कर लिया था और अपने निर्णय पर दृढ़ थे। पुजारी को उन दोनों के विवाह की घोषणा करनी थी। शरद् ऋतु में उन्हें घर छोड़ देना था।

आनेवाली सर्दियों में वे छोटे मकान में रहते रहे। विले अपनी झोंपड़ी बनाने में लगा रहा और नियमित पादरी के घर काम करता रहा तथा एनी पुजारी की पत्नी की सीने-पिरोने और बुनने में सहायता करती रही।

विटसनटाईड में उनका विवाह संपन्न हुआ। उसका खर्च पादरी के घरवालों ने दिया और पादरी ने स्वयं अपने इन भूतपूर्व नौकरों का विवाह भी अपने घर के बड़े कमरे में किया, परंतु जब नव-विवाहित जोड़ा चला गया और पुजारी ने खिड़की के पास खड़े होकर उन्हें रास्ते में लुप्त होते देखा तो चिंतित होकर अपना सिर झुकाया और कहा, ''युवा जोड़े को प्रयत्न करने दो कि वे क्या कर सकते हैं, परंतु सुनसान स्थान लड़के और लड़की के पास एकत्र पूँजी से साफ होनेवाला नहीं है।''

फिनलैंड का जंगली स्थान इस प्रकार की पूँजी से साफ हो गया, फिर भी पादरी का कहना सत्य निकला।

हम पादरी के क्षेत्र के युवा लोग अपने प्यारे मित्रों को उनके नए घर तक छोड़ने गए। हमने गरमियों का दिन—लंबा दिन, वसंत ऋतु की-सी हरियाली से भरे जंगल में से जाने में गुजारा और रात नई झोंपड़ी में नाचते-गाते हुए काटी। नए घर के तख्ते अभी थोड़े खुरदरे थे; अनचिरी लकड़ी के नुकीले सिरे लकड़ी की गाँठों से असमतल ढंग से निकल रहे थे और भूरी नदी नई सुधारी गई भूमि पर चारों ओर फैल रही थी, परंतु पहाड़ी की ढलान पर काले

तनेवाले वृक्षों के बीच ताजा राई की हरी शाखें तेजी से चमक रही थीं; मकई के लिए साफ किए गए स्थान पर वृक्ष दुर्बलता से लटक रहे थे और सूखे थे। मालकिन ने साफ स्थान पर होलिका जलाई और पहली बार गाय का दूध निकाला। विले और मैंने एक पत्थर पर बैठे सायंकाल की दुबली, चमकीली धूप में उसे इधर-उधर तल्लीनता से काम करते देखा। वह अभी तक विवाहवाले कपड़े पहने हुए थी।

विले को अपनी सफलता पर कोई संदेह नहीं था।

''यदि हमारा स्वास्थ्य बना रहता है और पाला न पड़ा, '' जैसे मेरे विचारों को पहले से जानते हुए उसने आगे कहा, ''मैं जानता हूँ कि यह दलदल नियमित रूप से पाले का घर है, परंतु यदि कोई व्यक्ति अपने हाथ-पैर चलाता रहता है तो जंगल को और आगे ले जा सकता है और धूप के लिए स्थान बना सकता है; फिर—यहाँ अभी सायंकाल की कुछ सर्दी है, परंतु अगली गरमियों में आओ और फिर देखो।''

मैं गरमियों में नहीं गया और उससे अगली गरमियों में भी उन्हें मिलने नहीं जा सका। मैं मानता हूँ कि मैं उन्हें भूल गया था, परंतु एक बार जब मैं घर पर था, मैंने पूछा, ''वे कैसे हैं।''

''उनको उधार लेना पड़ा था।'' मेरे पिता ने उत्तर दिया।

''और एनी बीमार रही थी।'' मेरी माँ ने कहा।

कुछ वर्ष बीत गए। अब मैं विद्यार्थी था और मेरे पास बंदूक और एक शिकारी कुत्ता था; मैं शरद् ऋतु की छुट्टियाँ देहात में व्यतीत कर रहा था।

अक्तूबर के एक नीरस दिन मैं जंगल में घूम रहा था; मुझे एक तंग रास्ता मिला जो मेरा जाना-पहचाना प्रतीत होता था। बूँदाबाँदी शुरू हो गई; कुत्ता आगे-आगे दौड़ रहा था। एकाएक वह गुर्राने लगा, फिर तेजी से भौंकने लगा। मैंने अपने सामने घोड़े के चलने की आवाज सुनी। उसी समय सड़क के मोड़ पर घोड़ा नजर आया; उसके दोनों तरफ पतले डंडे लगे थे जिनके किनारे भूमि पर खिसक रहे थे। गले की लकड़ी से एक सफेद कपड़ा लटक रहा था और पतले डंडों के ठीक ऊपर बँधा हुआ एक कफन का बक्सा था जिसके पीछे विले चल रहा था जैसे हलवाहा अपने हल के पीछे चलता है। उसे अपने बोझ के संतुलन के लिए काफी प्रयत्न करना पड़ रहा था।

वह थका-थका सा लगता था। उसके गाल पीले और आँखें बुझी-बुझी सी लगती थीं।

मेरा नाम सुनने के बाद ही उसने मुझे पहचाना।

''लेकिन यह तुम्हारा बोझा कैसा है?'' मैंने पूछा।

''मेरी मृतक पत्नी।'' उत्तर मिला।

''मृतक?''

''हाँ, वह मर गई है।''

थोड़ी पूछताछ के बाद मैंने उनकी संक्षिप्त कहानी सुनी—पहले उधार, बहुत बच्चे, बीमारी और अंत में काम की अधिकता से मृत्यु। अब वह उसे कब्र तक ले जा रहा था, परंतु सड़कें बहुत ही खराब थीं। वह केवल यही आशा कर रहा था कि अर्थी चर्च तक ठीक-ठाक पहुँच जाए। उसने झटके से लगाम को खींचा क्योंकि घोड़ा रास्ते से हट गया था और सूखे पत्तों में थोड़ी घास ढूँढ़ रहा था। ''वोह हो!''

वह अपनी भूख मिटाने की कोशिश कर रहा था। घोड़े की भी वैसी ही बुरी दशा थी जैसी उसके मालिक की; वे दोनों हड्डियों का ढाँचा प्रतीत हो रहे थे।

विले ने जाने के लिए कहा और अपने बोझे से बिना अपनी आँखें हटाए अपने रास्ते पर चल दिया। पतले डंडों ने रेतीले रास्ते में दो समानांतर नालियाँ बना दीं।

मैं उलटी दिशा में दलदल की ओर गया जहाँ उन्होंने गड्ढा खोदा था, परंतु आधा खोदने के बाद काम बंद कर दिया था। विवाह संबंधी यात्रा से ही मैं रास्ते से परिचित था जो झोंपड़ी तक जाता था।

बाड़ के पीछे एक दुर्बल गाय धीरे से डकार रही थी और सूअर सेहन में गुर्रा रहा था; बाड़ का छोटा दरवाजा खुला था। सेहन के मध्य में एक खाली चारपाई पड़ी थी और मृतक औरत की चारपाई के कमड़े बाड़ के ऊपर पड़े थे। लकड़ी के नुकीले सिरे, जिनसे झोंपड़ी बनाई गई थी, लकड़ी की गाँठों में अब भी लगे हुए थे। लकड़ी के चौखटे, जिनके शीशे धुँधले और शुष्क थे, में भोजपत्र की लकड़ी के छोटे डिब्बे में मुरझाया हुआ गुलमेहंदी का पौधा था।

जंगली स्थान को थोड़ा-बहुत साफ करने में वह सफल अवश्य हुआ था। मकई बोने का टुकड़ा जो दो-एक एकड़ था और इससे आधी भूमि, जिसको बोने के लिए खोदा गया था, जंगल का आरंभ थे, परंतु इस बिंदु पर उसकी शक्ति टूटती प्रतीत हुई थी। उसने भोजपत्र को काट गिराया था और वहाँ के जंगल को चरागाह में बदल दिया था, परंतु इन के पीछे देवदार का काला जंगल अजेय दीवार की तरह खड़ा था। वहीं उसको रुकना पड़ा।

पहले अगुए ने अपना काम पूरा कर दिया; जितना अच्छा यहाँ किया जा सकता था। उसकी शक्ति और उमंग समाप्त हो चुकी थी, आँखों की चमक बुझ गई थी और विवाह की सुबह का उसका आत्मविश्वास समाप्त हो चुका था।

उनके बाद कोई दूसरा अवश्य आएगा और झोंपड़ी के स्थान को ग्रहण करेगा। संभवत: उसका भाग्य अच्छा हो, परंतु हलके काम से आरंभ करना पड़ेगा क्योंकि उसके सामने, आदमी से अनछुआ, क्रूर जंगल खड़ा नहीं होगा। वह बनी-बनाई झोंपड़ी में रह सकेगा और भूमि के उस भाग में बोएगा जिसमें उससे पहले व्यक्ति ने हल चलाया था।

झोंपड़ी का स्थान निस्संदेह एक बड़ा और कीमती स्थान बन जाएगा और समय आने पर इसके आसपास गाँव बस जाएगा।

जिन लोगों ने भूमि को अपनी सारी पूँजी, युवावस्था की शक्ति से पहली बार खोदा था, उनकी बाबत कोई नहीं जानता। वह केवल सरल लड़का और लड़की थे और वे दोनों वहाँ खाली हाथ आए थे।

परंतु ऐसे ही लोगों की पूँजी से फिनलैंड के जंगली स्थान को जड़ से साफ करके बड़े एकड़ों में बदला गया है। यदि वे दोनों पादरी के घर पर ही रहते तो वह कोचवान और यह घर की नौकरानी! संभवत: इनका जीवन चिंताओं से मुक्त रहता, परंतु जंगली स्थान उपजाऊ न बन पाता और सभ्यता के पहले स्तंभ ये जंगल के मध्य में न गाड़े जाते।

हमारे खेतों में जब राई के फूल खिलें और मकई की बालें पकें, तो आओ, हम उपनिवेश के इन पहले शहीदों को याद करें।

हम उनकी कब्रों पर यादगारें स्थापित नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी कहानियाँ हजारों में हैं और हम उनके नाम तक नहीं जानते!

❑

बंदर

—एलेक्जेंडर किलैंड (नार्वे)

वह वास्तव में बंदर ही था जिसने मुझे कानूनी योग्यता परीक्षा में प्रथम श्रेणी का सम्मान दिलवाया। भले ही मैं दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था। फिर भी अच्छा ही रहा।

परंतु मेरा वकील मित्र, जिसको प्रतिदिन मेरी परीक्षा के पेपरों की अपूर्ण नकलों को मिश्रित भावनाओं के साथ पढ़ना पड़ता था, ने उन पेपरों से यह विचार बनाया कि कानूनी समस्याओं से निपटने का मेरा ढंग बहुत ही अच्छा है। उसे डर था कि इनसे संभवत: मेरी प्रथम श्रेणी आ जाए। जबानी परीक्षा में मुझे यंत्रणा और असुविधा सहन करते देख उसे आपत्तिजनक लगा क्योंकि वह मेरा मित्र था और मुझे जानता था।

वास्तव में यह बंदर नहीं था बल्कि सिक्वेगार्ड की 'कानूनी समस्याएँ', जिसको अपने मित्र के केकुमिस से उधार लाया था, के पृष्ठ 496 के किनारे पर लगा कॉफी का धब्बा था।

कानूनी परीक्षा में बैठने के अतिरिक्त, आधी सर्दियों के कीचड़ और अँधेरे में कोई अन्य बात इतनी उदास करनेवाली हो सकती है, इसका अनुमान लगाना कठिन था। संभवत: गरमियाँ इससे भी बुरी होतीं, परंतु मैंने इसकी कोशिश नहीं की, इसलिए कह नहीं सकता।

सर्कस में अप्रसन्न नट से पहले सार्वजनिक अभिनय की तरह, एक व्यक्ति को ग्यारह प्रश्नों से जूझना पड़ता है, जैसे—क्या तेरह भी होते हैं? (निश्चित रूप से यह एक भयानक संख्या है जिसका अनुमान किया जा सकता है।)

अपने जीवन को हाथ में और मूर्ख हँसी को होंठों पर लिये वह वहाँ वेग से कूदता है और ग्यारह कागज से ढके पट्टों में से कूदना पड़ता है, जैसे—क्या तेरह भी होते हैं?

कानूनी परीक्षा का उम्मीदवार अपने आपको उसी हालत में पाता है जिसमें कि सर्कस का नट; केवल उसे संगीत की ध्वनि पर या फिर चमकदार, प्रकाशित मकान में कूदना नहीं पड़ता। वह आधे अँधेरे में सख्त कुरसी पर बैठता है और उसका मुँह दीवार की ओर होता है और वह केवल निरीक्षक के जूतों की ही चरचर करती आवाज सुनता है, क्योंकि कानूनी परीक्षा में निरीक्षक के जूतों की-सी चरचरी आवाजें संसार में किसी और जूतों की नहीं होती!

फिर वह विकट क्षण आता है जब काला गुप्तचर लॉ कॉलेज से प्रश्नों की सूची लाता है। वह दरवाजे में खड़ा होकर अवसर के डरावनेपन को निष्ठुर घृणा की उत्साहहीन उदासीनता से पढ़ता है और जो प्राणनाशक लेख जो वह हाथ में थामे हुए है, भद्दे कागज से ढके पट्टे की तरह है जिसमें से उम्मीदवार को कूदना होता है अथवा विफल होकर उतरना और कदमों को पीछे हटाना पड़ता है।

तुम काठी पर अपने आपको स्थिर करते हो; ऐसा करने में जरा भी सफल नहीं होते और अशांत होकर इधर-उधर डोलते हो।

अप्रसन्न व्यक्ति सरलता से इसे छोड़ देता है और उतर जाता है। ज्यों ही वह दरवाजे की ओर जाता है, तमाम आँखें उसे देखती हैं और बाकी उम्मीदवारों को नि:श्वास का आभास होता है। 'तुम आज, मैं कल।' इस बीच कुछ आवाजें आती हैं जिनसे प्रतीत होता है कि कूदना आरंभ हो गया।

कुछ आदमी स्थिरता और सुंदरता से कूदते हैं और प्रथम श्रेणी पाने के विश्वास से दूसरे छोर पर पहुँचते हैं; दूसरे जो पट्टियों में से सीधा कूदना आसान करतब समझते हैं, वे हवा में घूम जाते हैं और पीछे की ओर कूद जाते हैं। यह कहा जाता है कि उनका फुर्तीलापन मध्यस्थ से दिए जानेवाले गुणावगुण ज्ञान को जीत नहीं सकता।

फिर दूसरे पुन: कूदते हैं और पट्टे को चूक जाते हैं; वे इसके नीचे से या एक ओर से कूद जाते हैं। कुछ व्यक्ति

अभिनय को आसान समझते हुए ऊपर से कूद जाते हैं और बाद में अपनी उन्मत्त सवारी को असावधान विश्वास के साथ जारी रखते हैं।

परंतु यदि कोई व्यक्ति सवारी की इच्छा नहीं करता या जिसको पट्टी में से कूदने का अनुभव नहीं है, उसपर दया आती है, जब तक वह पृष्ठ 496 पर बंदर को नहीं मिलता!

उन दिनों हमने दिन में पट्टियों में से कूदकर और रात को—इसे कैसे करना है सीखकर, अस्वस्थ जीवन गुजारा।

एक रात मैंने सिक्वेगार्ड की 'कानूनी समस्याएँ', आधी पढ़ी; देर हो चुकी थी। मैंने अग्नि में और लकड़ियाँ डालीं जबकि मुझे हवा की जरूरत थी और खिड़की को खोल दिया जब मुझे गरमी चाहिए थी और थोड़ी देर में 'कानूनी समस्याएँ' के मुरझाए पृष्ठों को आँधी की तरह पढ़ गया।

परंतु अंत में आँधी भी थम गई और जब यह मेरे साथ हुआ तो मैं सीधा अकड़कर बैठ गया और ग्यारहवीं बार पढ़ा, इसलिए व्यक्ति को निश्चय ही निर्णय करना चाहिए...व्यक्ति को इसलिए...निश्चय...उपयोगी को अनुकूल से मिलाओ... अपनी कुरसी में पीछे को झुक जाओ...मैं भी पढ़ सकता हूँ...इसलिए...

परंतु गैर-कानूनी तसवीरें पुस्तक में तैरने लगीं, उन्होंने दीपक को घेर लिया और मेरी कानूनी दृष्टि की स्पष्टता को पूरी तरह ढाँकने के लिए धमकाया।

मैं अब धुँधलेपन से सफेद पृष्ठ में भेद कर सकता था; एक...हो सकता है...इसलिए बाकी घने छपे पृष्ठों के काले अक्षरों के समूह में लुप्त हो गए; मेरी आँखों ने थकी निराशा से उनका पीछा किया। फिर मैंने दाईं ओर के पृष्ठ के नीचे देखा! वह बंदर का चेहरा था जो किसी ने पृष्ठ के किनारे पर बनाया था; यह सुंदरता से बनाया गया था—विशेषकर उसका भूरा चेहरा।

मुझे कहते हुए शर्म आती है कि सिक्वेगार्ड की अपेक्षा मेरी रुचि इस कलाकृति में अधिक थी। मैं उठा और अच्छी तरह देखने के लिए आगे को झुका।

परीक्षा के बाद मैंने मालूम किया कि चेहरे का अद्‌भुत भूरा रंग कॉफी के कारण था और आगे सारा बंदर कॉफी के धब्बे के सिवा कुछ भी नहीं था।

कलाकार ने बस आँखें और कुछ बाल ही जोड़े थे! कल्पनाशक्ति तो उसी की थी जिसने कॉफी को गिराया था।

मैंने तब जाना, क्योंकि मैं जानता था कि ककुमिस एक रेखा भी नहीं खींच सकता था, परंतु वह अपना कानून पूरी तरह जानता था। और फिर मैंने उसके बारे में सोचना शुरू किया, उसकी सफल परीक्षा के बारे में जब उसने प्रथम श्रेणी प्राप्त की तथा उसके विजयी होकर घर लौटने के बारे में विचार किया। इस सबको पूरा करने में उसने कैसा काम किया होगा? इस प्रकार गंभीरतापूर्वक सोचने पर मेरा अंत:करण गतिमान हो गया और अल्प निद्रा से जागा जबकि एकाएक उभरी चमक की तरह मेरी अपनी अज्ञानता अपनी सारी भयानक नग्नता के साथ मेरे सामने आ खड़ी हुई।

मैंने सोचा कि उतरना मेरे लिए कितना लज्जाजनक होगा या उससे भी बुरा होगा, यदि मेरी गणना उन अप्रसन्न व्यक्तियों में की गई जो सदा गुमनाम रहते हैं और जिनके बारे में कहा जाता है—'इसे अतिरस्कृत प्राप्त हुआ!'

कभी-कभी ऐसा होता है कि लोग अधिक पढ़-लिखकर भुलक्कड़ हो जाते हैं। मुझे भी ऐसा ही लगा जब मैंने अपनी अज्ञानता के विस्तार को महसूस किया।

मैं उछल पड़ा और सिर पानी के टब में डाल दिया तथा बालों को सूखने का समय न देते हुए मैंने इस निश्चय से पढ़ना शुरू कर दिया कि प्रत्येक शब्द अमिट रूप से मेरी स्मरण शक्ति पर छप गया।

बाईं ओर के पृष्ठ में मैंने जल्दी की, फिर पूरी शक्ति से दाईं ओर बंदर के पास पहुँचा, उसको छोड़ दिया और

पृष्ठ बदला तथा बहादुरी से पढ़ने लगा।

मैंने ध्यान नहीं दिया कि मेरी शक्ति कम हो रही थी। हालाँकि मैंने नया अध्याय पढ़ा जो सामान्य हालत में उकसाने का काम करता था। मैं, उन कपटी वाक्यों में, जिन्हें मायावी गंभीरता से पढ़ते हैं, फँसे बिना नहीं रह सका!

मैंने मुक्ति के साधनों को टटोला परंतु वे नहीं मिले।

मेरा सिर चकराने लगा। बंदर कहाँ है?...कॉफी का धब्बा...कोई भी दोनों पृष्ठ पर कल्पनाशक्ति नहीं दिखा सकता...जीवन में हर चीज की सही और गलत दिशा होती है...उदाहरणार्थ, विश्वविद्यालय की दीवारघड़ी...क्योंकि मैं तैर नहीं सकता, मुझे बाहर आने दो...मैं सर्कस को जा रहा हूँ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मुझपर हँस रहे हो, ककुमिस! परंतु मैं पट्टे में से कूद सकता हूँ, मैं तुम्हें बताता हूँ...और यदि प्राध्यापक, जो मेरे दीपक से निकला है, कानूनी शरीर में ठीक ढंग से ढूँढ़ता तो मैं यहाँ लेटा हुआ न होता...कर्ल जोहनस स्ट्रीट में कमीज पहने...परंतु।

इस घटनाक्रम में मुझे स्वप्नहीन गहरी निद्रा आ गई जो केवल उन्हें ही आती है जो युवावस्था में बुरे अंत:करणवाले होते हैं।

अगली प्रात: मैं शीघ्र ही काठी पर स्थापित हो गया।

मैं नहीं जानता कि उस दिन शैतान ने जूते पहने थे, परंतु कुछ भी हो, उसके निरीक्षकों ने अपने-अपने जूते पहने थे और वे मेरे पास ही, जहाँ मैं अपना चेहरा दीवार की ओर किए दु:खी बैठा था, चर-चर की आवाज करते थे!

पीड़ित व्यक्तियों को देखता हुआ प्राध्यापक कमरे में घूम रहा था। कभी-कभी उसकी दृष्टि दु:खी चापलूसों में से एक पर जाती जो उसके भाषणों में उपस्थित होते थे। वह सिर हिलाकर मुसकराता, परंतु जब उसकी आँखें मुझपर ठहरतीं, मुसकराहट लुप्त हो जाती और उसकी बर्फीली दृष्टि मेरे सिर के ऊपर दीवार पर लिखती प्रतीत होती —'ओह, हत-भाग्य! मैं तुम्हें नहीं जानता...!'

एक या दो निरीक्षक चर-चर करते प्रधान के पास गए और चापलूसी करने लगे; मैं उन्हें अपनी कुरसी के पीछे कानाफूसी करते सुन सकता था जबकि मैं मौन गुस्से में दाँत पीस रहा था कि ऐसे पापियों को वेतन दिया जाता है जो मुझे या मेरे अच्छे मित्रों को यातना देकर अपनी आजीविका अर्जित करते हैं।

दरवाजा खुला और पीली रोशनी की किरणें पीले चेहरों पर चमक उठीं; इसने लक्समबर्ग के अजायबघर में 'डर से पीड़ित लोगों' में एक की याद दिला दी। पुन: अँधेरा हो गया और काला गुप्तचर चमगादड़ की तरह अपने पंजों में प्रसिद्ध सफेद कागज लिये कमरे में धीरे से आया।

उसने पढ़ना शुरू किया।

मैं अपने सारे जीवन में इतना निराश नहीं हुआ जितना उस समय हुआ था; फिर भी पहले ही शब्द ने मुझे उछाल दिया।

''बंदर।''

मैं शब्दों को लेकर लगभग चिल्लाया, क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह 'कानूनी समस्याएँ' का पृष्ठ 496 था जहाँ मैंने बंदर को ढूँढ़ा था! जो समस्या वह पढ़ रहा था वह वही थी जिसको एक रात पहले पूरी शक्ति से मैंने पढ़ा था। मैंने लिखना आरंभ कर दिया।

संक्षिप्त भूमिका के बाद मैंने सुरीला वाक्यखंड लिखा—

''इसलिए व्यक्तियों को निश्चय ही निर्णय...'' और बाएँ-दाएँ के पृष्ठों को जल्दी से पढ़ गया, फिर पूरी शक्ति से दाएँ हाथवाले को...बंदर के पास पहुँचा, उसे छोड़ दिया, टटोलने लगा...और एकाएक रुक गया।

मैं जानता था कि किस चीज की कमी है, परंतु मैं यह भी जानता था कि यह जानने के लिए कि किसी चीज की

कमी है, यत्न करना व्यर्थ था। यदि किसी को किसी चीज का नहीं पता तो नहीं पता, बस यही काफी है। अत: मैंने पूर्ण विराम लगाया और दूसरों की आधी समाप्ति से पहले चला गया।

दुर्भाग्य से मेरे साथियों ने सोचा कि मैं उतर गया था, और पट्टी से हटकर कूदा था क्योंकि समस्या जटिल थी!

''ठीक है, ठीक है, '' वकील ने कहा जब उसने मेरा परचा पढ़ा—''यह मेरी आशा से भी अच्छा है! क्यों, यह खालिस सिक्वेगार्ड है! तुमने अंतिम बिंदु छोड़ दिया है, परंतु उसका अधिक महत्त्व नहीं है। तुम देख सकते हो कि विषय में अच्छे हो।''

''मैं कुछ नहीं जानता था।'' वह मुसकराया।

''तो क्या रात भर ही में समस्या पर विजय पा ली?''

''हाँ, ऐसा ही था।''

''क्या किसी ने तुम्हारी सहायता की थी?''

''हाँ।''

''यह अध्यापक का भूत होगा जिसने एक रात में इतना कानून तुम्हारे सिर में डाल दिया। क्या मैं जान सकता हूँ कि वह जादूगर कौन था?''

''बंदर।'' मैंने उत्तर दिया।

❑

पिता

—बजोंट्सजर्ने बजोंर्सन (नार्वे)

जिस व्यक्ति की कहानी यहाँ सुनाई जा रही है, वह गाँव का बहुत ही धनवान् और अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति था। उसका नाम था—थोर्ड ओवरास। लंबा और उत्सुक वह एक पुजारी के कमरे में आया।

''मेरे यहाँ लड़का पैदा हुआ है, '' उसने कहा, ''मैं उसे बपतिस्मा के लिए पेश करना चाहता हूँ।''

''उसका क्या नाम होना चाहिए?''

''फिन—मेरे पिता के नाम पर।''

''और जामिन?''

उनके नाम बताए गए और वे गाँव में थोर्ड परिवार के श्रेष्ठ पुरुष और स्त्रियाँ साबित हुए।

''इसके अतिरिक्त कुछ और?'' पुजारी ने पूछा और ऊपर देखा।

आदमी थोड़ा हिचकिचाया।

''मैं उसे स्वयं बपतिस्मा करते देखना चाहता हूँ।'' उसने अंत में कहा।

''इसका मतलब है, सप्ताह में किसी दिन?''

''आनेवाले शनिवार को दोपहर बारह बजे।''

''इसके अतिरिक्त कुछ और?'' पुजारी ने पूछा।

''और कुछ नहीं।'' व्यक्ति ने कहा और अपनी टोपी को वेग से घुमाया जैसे वह जाने को तैयार हो।

फिर पुजारी उठा। ''फिर भी कुछ है, '' उसने कहा और थोर्ड की ओर बढ़ा; उसने थोर्ड का हाथ थामा और उसकी आँखों में गंभीरता से देखा—''ईश्वर करे कि बच्चा तुम्हारे लिए आशीर्वाद बने!''

सोलह वर्षों के बाद एक दिन शाम को फिर थोर्ड पुजारी के कमरे में खड़ा था।

''वास्तव में तुमने अपनी अवस्था को आश्चर्यपूर्वक रखा है, थोर्ड।'' पुजारी ने कहा; क्योंकि उसने इस व्यक्ति में कोई परिवर्तन नहीं देखा था।

''यह इसलिए कि मुझे कोई कठिनाई नहीं है।'' थोर्ड ने उत्तर दिया।

इसपर पुजारी कुछ नहीं बोला, परंतु कुछ देर के बाद पूछने लगा—''तुम्हारा अभी आने का उद्देश्य?''

''मैं अभी अपने बेटे के बारे में आया हूँ; वह कल प्रमाणित किया जाएगा।''

''वह निर्मल लड़का है।''

''मैं पुजारी को कुछ नहीं देना चाहता, जब तक मैं यह न जान लूँ कि कल चर्च में उसे किस स्थान पर बैठाया जाएगा।''

''वह प्रथम स्थान ग्रहण करेगा।''

''यह मैंने जान लिया, और यह धनराशि पुजारी के लिए है।''

''इसके अतिरिक्त कुछ और भी है जो मैं तुम्हारे लिए कर सकता हूँ?'' थोर्ड पर अपनी आँखें जमाते हुए पुजारी ने पूछा।

''और कुछ नहीं।''

थोर्ड बाहर चला गया।

आठ वर्ष और बीत गए। फिर एक दिन पुजारी के कमरे के बाहर शोर सुनाई दिया, क्योंकि बहुत से लोग आ गए

थे और थोर्ड सबसे आगे था जो पहले अंदर गया।

पुजारी ने उसे देखा और पहचान लिया।

''आज सायंकाल तुम्हारी उपस्थिति अच्छी है, थोर्ड।'' उसने कहा।

''मैं आपसे प्रार्थना करने आया हूँ कि मेरे बेटे के विवाह की घोषणा कर दें; वह गडमुंड जो मेरे साथ खड़ा है, उसकी बेटी है।''

''क्यों, वह गाँव में सबसे अधिक धनवान् लड़की है।''

''ऐसा ही कहते हैं।'' अपने बालों को हाथ से थपथपाते हुए किसान ने कहा।

पुजारी थोड़ी देर के लिए बैठ गया जैसे गहरी सोच में डूब गया हो, फिर बिना कोई टिप्पणी किए उसने अपनी पुस्तक में नाम दर्ज किए और लोगों ने उनके नीचे अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए। थोर्ड ने तीन नोट मेज पर रखे।

''मुझे एक ही चाहिए।'' पुजारी ने कहा।

''मैं यहअच्छी तरह जानता हूँ, परंतु वह मेरा बेटा है; मैं इसे सुंदर ढंग से करना चाहता हूँ।''

पुजारी ने राशि ले ली।

''यह तीसरी बार है, थोर्ड कि तुम यहाँ बेटे की खातिर आए हो।''

''परंतु अब मैं उससे संतुष्ट हूँ।'' थोर्ड ने कहा और अपनी छोटी पुस्तक बंद करके विदा लेकर चला गया।

आदमियों ने धीरे-धीरे उसका पीछा किया।

आधे महीने बाद बाप-बेटा झील में नाव की सैर कर रहे थे; दिन निश्चल और शांत था। उन्हें विवाह का प्रबंध करने एर्टोलीडन जाना था।

''उस पार सुरक्षित नहीं है।'' बेटे ने कहा और अपनी सीट, जिसपर वह बैठा था, ठीक करने के लिए खड़ा हो गया।

जिस तख्ते पर वह खड़ा था, उसी क्षण उसके नीचे से खिसक गया; उसने अपने हाथ फेंके, चीख मारी और तख्ते से गिर गया।

''चप्पू को थाम लो।'' चप्पू को थामे अपने पाँव पर उछलकर पिता बोला।

परंतु जब उसके बेटे ने थोड़ी कोशिश की तो वह कठोर हो गया।

''थोड़ी प्रतीक्षा करो।'' पिता चिल्लाया और बेटे की ओर देखने लगा।

फिर बेटा पीठ के बल घूमा; पिता को लंबी नजर से देखा और डूब गया।

थोर्ड मुश्किल से विश्वास कर सका; उसने नाव को रोक दिया और उस स्थान को ताकने लगा जहाँ उसका बेटा नीचे गया था तथा सोचने लगा कि वह अवश्य ऊपर आएगा। कुछ बुलबुले उठे, फिर और उठे और अंत में एक बड़ा बुलबुला उठा जो फट गया और झील पूर्ववत् शीशे की तरह साफ और चमकीली हो गई।

बिना खाए-पीए तीन दिन और तीन रात उस स्थान के आसपास नाव खेकर चक्कर लगाते हुए पिता को लोगों ने देखा। अपने बेटे के शव के लिए वह झील का सर्वेक्षण कर रहा था। तीसरे दिन प्रात:काल उसने ढूँढ़ लिया और अपने हाथों में उठाए पहाड़ी से होता हुआ उसे अपने फार्म में लाया।

उसके एक वर्ष बाद शरद् ऋतु की एक शाम को दरवाजे के बाहर रास्ते में किसी को ध्यान से चिटखनी ढूँढ़ते हुए पुजारी ने सुना। पुजारी ने दरवाजा खोला और सफेद बालोंवाला, झुका-झुका पतला आदमी अंदर आया। पुजारी ने पहचानने से पहले देर तक उसे देखा। वह थोर्ड था।

''क्यों, तुम बाहर इतनी देर से घूम रहे हो?'' पुजारी ने कहा और उसके सामने निश्चल खड़ा रहा।

''ओह, हाँ, देर हो गई।'' थोर्ड ने कहा और बैठ गया।

पुजारी भी बैठ गया जैसे प्रतीक्षा में हो। एक लंबे मौन के बाद अंत में थोर्ड बोला, ''मेरे पास कुछ है जो मैं निर्धन को देना चाहता हूँ; मैं उसे अपने बेटे के नाम पर उत्तरदान के रूप में लगाना चाहता हूँ।''

वह उठा और कुछ धनराशि मेज पर रख दी और फिर बैठ गया।

पुजारी ने उसे गिना।

''यह तो बहुत बड़ी रकम है।'' उसने कहा।

''यह मेरे फार्म की आधी कीमत है। मैंने उसे आज बेच दिया।''

पुजारी देर तक चुप बैठा रहा। अंत में उसने नम्रता से पूछा—

''तुम अब क्या करना चाहते हो, थोर्ड?''

''कुछ अच्छा काम।''

वे दोनों कुछ देर बैठे रहे—थोर्ड आँखें झुकाए हुए और पुजारी थोर्ड पर आँखें जमाए हुए। उस समय पुजारी ने नम्रतापूर्वक धीरे से कहा, ''मेरे विचार में तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिए अंत में सच्चा आशीर्वाद लाया।''

''हाँ, मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ।'' थोर्ड ने ऊपर देखते हुए कहा, जबकि दो बूँद आँसू धीरे से उसके गालों पर आ गिरे!

❑

गिटजे

—कोनार्ड बसकेन ह्यूट (हालैंड)

उस समय यदि कोई हमारे बचपन और लड़कपन के वर्षों की बाबत—ब्रगीटा वान डर प्लास के नाम और रूप की बाबत पूछता तो हम उत्तर देते—'तुम्हारा किससे मतलब है? हमें किसी ऐसी महिला को जानने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।' यदि इसका प्रत्युत्तर होता—'क्या, तुम ब्रगीटा वान डर प्लास को नहीं जानते? वह सिलाई करनेवाली दर्जिन जो वर्षों तुम्हारे माता-पिता की सेवा में रही?' तो हम पुन: चिल्लाहट से उत्तर देते—'आह, तुम्हारा मतलब गिटजे, हमारी दर्जिन से है! हाँ, हम वास्तव में उसे अच्छी तरह जानते हैं। हमें कैंची और कागज का टुकड़ा दो तो हम तत्काल उससे मिलती-जुलती तसवीर बना देते हैं, परंतु हमें किस तरह मालूम हो कि ब्रगीटा वान हर प्लास हमारी गिटजे ही थी।'

तुम्हें विश्वास होना चाहिए कि हमने गिटजे के अतिरिक्त उसे किसी दूसरे नाम से नहीं पुकारा। भविष्य में मालिक और मालकिन बननेवाले बचपन से ही नौकरों को दुर्भाग्य और हालात के प्रति रईसी तथा अच्छी शिक्षित उदासीनता दिखाने लग जाते हैं, परंतु कामगारों के बच्चों की भी रईसी भावनाएँ होती हैं। हम, जो धनी लोगों के बच्चे थे, ने कभी नहीं सोचा था कि गिटजे ब्रगीटा का ही संक्षिप्त नमूना हो सकती थी या हमारी दर्जिन अपने को परिवार के नाम की विशिष्टता दे सकती थी। फिर भी तुम कह सकते हो कि वान डर प्लास काफी विनीत और सादा प्रतीत होता है।

सप्ताह में तीन-चार बार अपने व्यापार का अभ्यास करने हमारे माता-पिता के घर वह आती थी। नीली और सफेद धारीदार जनाना कुरतियों की मरम्मत करना उसके नियमित व्यापारों में से एक था; कुरतियों की बाँहों में अद्‌भुत ढंग से बड़े छिद्र करने में हम सक्षम थे। दूसरे अवसरों पर वह ऊपर नर्सरी में कपड़ों पर लोहा करती थी। नर्सरी की खिड़कियाँ बाग की ओर खुलती थीं और उसमें खंड-खंड करनेवाला और वस्त्र-प्रेस भी लगा था। वह सुंदर ढंग से लोहा करती थी। जब वह इस्तिरी आग पर रख देती और सबकुछ ठीक-ठाक होता तो इस्तिरी करने का तख्ता उठाती जो दीवार के साथ झुका हुआ होता था, और उसको सामान्य तरीके से रखती अर्थात् पुल की भाँति, एक सिरा मेज के ढाँचे पर और दूसरा कुरसी की पीठ पर। इस प्रकार गिटजे मध्य में खड़ी होती तो हाथ चलाने और कपड़े नीचे रखने के लिए काफी जगह मिल जाती थी। तख्ते को आधे गीले ऊनी कंबल से ढक देती तो हमें फलालीन की वास्कट में ढकी हुई पतली औरत की याद दिलाती। गिटजे को हमारी बहनों की नाचने की पोशाक को लोहा करते देखने से और अधिक मनोरंजक कुछ नहीं था। उनको गीला और काफी लंबा करने के बाद वह पोशाक को लेती और इस्तिरी करनेवाले तख्ते को एक सिरे से उठाकर उसपर फ्रॉक को सरका देती थी। फिर लोहे के लाल गरम बरतन से इस्तिरी को बाँईं तरफ से उठाती, थोड़ी देर अपने गाल के पास यह देखने के लिए कि वह उतनी गरम हो गई है जितना वह चाहती है, ले जाती थी और दाईं ओर रखे कपड़े पर हलके से फेरती और फिर अपना वास्तविक कार्य आरंभ कर देती थी। नाचने की पोशाक जो पहले मुलायम, गंदी, निराकार ढेर थी, इस्तिरी के छूने से कुरकुरी होकर आकारवाली बन जाती थी। गिटजे के अतिरिक्त यदि कोई दूसरा बहनों की पोशाक इस्तिरी करता तो नाचघर जाते समय वह आधी संतुष्ट होती थी।

महीने में एक बार गिटजे नीचे नाश्तेवाले कमरे में अपने परिश्रम की प्रदर्शनी करती थी। यह तब होता था जब कपड़े घर आते थे। जिस परिवार से हम संबद्‌ध थे, वह बहुत बड़ा था और परिणामस्वरूप हमारी धुलाई भी बड़ी थी। तब हम एक बड़ा धुलाई वर्णन व्युत्पत्ति रूप में नहीं बल्कि तकनीकी रूप से करने का इरादा करते थे। गिटजे

की सहायता परित्याग करने योग्य नहीं थी। वह बच्चों के कमरे की कम पवित्र स्थिति से नीचे आई और पूरी तरह साफ नाश्ते के कमरे में हमारी माँ के पास बैठ गई। माँ और गिटजे को मेजपोश और चादरें बिछाते देखने से और मनोहारी कुछ नहीं था। वे इनको अत्यंत सफाई से करती थीं, सफाई ही नहीं, बल्कि शक्ति और शौक से! वह आयताकार मेज के किनारों पर खड़ी होती थी। बिना बिछाई चादरें धीरे-धीरे कम होते ढेरों में बाईं ओर पड़ी थीं और फैलाई हुई बढ़ते ढेरों में दाईं ओर। मध्य में उसकी वर्तमान बलि पड़ी थी—कई गज लंबी, मृत्यु की तरह पीली, जबकि वे अपनी अंगुलियों के बीच चिकटी भरती थीं। उनकी कोहनियाँ उनकी बगलों में ध्यानपूर्वक दबी हुई थीं; दाएँ पैरों को आगे और शरीर के ऊपरी भाग को पीछे किए हुए दो औरतें—मालकिन एवं नौकरानी खड़ी थीं और जितनी जल्दी फैला सकती थीं, फैला रही थीं, फैलाती ही जाती थीं—सादगी और कर्तव्य-संतुष्टि की मूर्ति और हॉलैंड के घरेलू जीवन की तसवीर बनी खड़ी थीं। हमारे लिए जो निराशाजनक, परंतु जिसे हम अत्यंत रुचि से देखते थे, प्रश्नों-का-प्रश्न था—क्या गिटजे हमारी माँ को अब मेज पर खींचेगी या हमारी माँ उससे जल्दी करेगी और उसको खींचेगी? और हमारी माँ चादर गिरा देगी या गिटजे अपनी अंगुलियाँ खोलेगी और आत्मरक्षा के लिए केवल प्रवृत्त प्रतिबंधक उपाय के तौर पर हमारी माँ से कोई खेल खेलेगी? या चादर बीच में से फट जाएगी? क्या गिटजे एक किनारा अपने हाथ में रखेगी और माँ दूसरा? और क्या इस दु:खद मामले का अंत होगा—गिटजे का सिर अँगीठी से टकराकर या माँ का लकड़ी की पट्टियों से टकराकर और इस प्रकार दोनों को चोट लगेगी!

इस बीच निपुण औरतें निश्चल और संतुष्ट एक-दूसरे के सामने होने का प्रयत्न करती खड़ी रहीं। दाएँ हाथ का ढेर बड़ा, और बड़ा होता गया और दोपहर के भोजन से पहले बाएँ हाथ का लुप्त हो गया।

शरद् ऋतु शुरू होते ही सब्जियों और फलों को रक्षित करने का समय आ गया। उसकी कृपा और गिटजे की सहायता से बहुत चीजें हमारे घर में लाई गईं, विशेषकर फलियाँ। फ्रेंच फलियों को काटकर परोने में, जो हम गिटजे के मार्गदर्शन में बचपन में करते थे, थोड़ी सहायता करना, यदि जरूरत पड़े, हमने कभी भी अधिक श्रेष्ठ नहीं समझा था। बाद में, जब चाकू के खतरे से हमपर विश्वास हो गया तो हमने भी बड़ी फलियों में, जिनको संभालना अति कठिन होता है, जैसा तुम जानते हो, सहायता की। इसके अतिरिक्त, हमने गिटजे को अनगिनत सफेद बंद गोभी के फूलों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर पीपे में डालते देखा। फिर लकड़ी के डंडे से उनको नीचे दबाया और अंत में उनको तख्ते, जो लगभग पीपे जितना चौड़ा था, के ऊपर भारी पत्थर रखकर ढक दिया। यह सब पीपे में पड़े माल में कहावत के विरुद्ध खमीर पैदा करने के लिए किया गया—'जो पीपे में पड़ा है, उसमें खमीर नहीं उठेगा।'

जो पीपे में पड़ा है वह खट्टा नहीं होता, ऐसा लोग कहते हैं, और इस कहावत में कही गई बात में आशायुक्त विश्वास को भविष्य में नष्ट करना नीचता होगी। गिटजे भी इसी अंदाज में बोली जब भी उसने लीनडर्ट वान कुइक के बारे में सोचा था और ऐसा कभी-कभी होता था। तुम पूछते हो—क्यों? ठीक है, यहाँ हमारा वृत्तांत एक नया मोड़ लेता है। वह कई वर्षों और दिनों तक इसका प्रेमी रहा था। इस समय जब हम बात करते हैं, उनकी सगाई का रजत विवाह उनके बहुत पीछे रह गया। 'अविश्वासनीय'! तुम पुकारोगे। ठीक है, मैं तुम्हें श्रद्धा नहीं दिला सकता। हम तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि यह सूक्ष्म तौर पर परीक्षित और अच्छी तरह से प्रमाणित तथ्य है कि ब्रगीटा वान डर प्लास सत्ताईस वर्षों तक लीनडर्ट वान कुइक की प्रेमिका रही थी और फिर? लीनडर्ट वान कुइक की हैजे से पचपन वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी।

मछली उठाने का सामान बनाना उसका व्यवसाय था। हम उसकी छोटी सी दुकान से मछली पकड़ने की छड़ी, धागा, काँटे काफी मात्रा में खरीदा करते थे और निर्धन होते हुए भी वह कभी-कभी गिटजे के नाते हमें उपहार दिया

करता था। उस समय हमें वास्तव में मालूम नहीं था कि वह निर्धन का जीवन व्यतीत कर रहा था। इसके विपरीत हमारा विचार था कि वह वाकई धनी आदमी था। उसकी छोटी सी दुकान में बड़ा भंडार था—मछली पकड़ने के यंत्रों का ईर्ष्या की हद तक प्रचुर भंडार। उसकी मछली पकड़ने की छड़ियाँ, नकली समीर मक्खियाँ, फेरीदार मक्खियाँ, घूमनेवाली मक्खियाँ, गोबरैले तथा अन्य प्रकार की ललचानेवाली वस्तुएँ देखकर क्या मुँह में पानी नहीं आता था? रखने के लिए बनाए गए छपे टिन के डिब्बों के अतिरिक्त हमें कोई वस्तु इतनी कीमती और वांछित नहीं लगती थी। ये डिब्बे घुड़सवार सेना के अधिकारी की तरह, जैसे वह गोलियों का बक्स ले जाता है, पट्टी के साथ कंधों पर लटकाए जाते थे, परंतु यदि हमें लीनडर्ट के दयनीय हालात का ज्ञान होता तो हम उसके उपहारों को स्वीकार नहीं करते। बच्चे केवल अभिमानी ही नहीं होते, वे लालची भी होते हैं। देखो, छोटे भाई या बहन की मृत्यु के बाद, बच्चे किस प्रकार उसके खिलौने हड़प कर लेते हैं—असली बालों एवं आँखोंवाली गुड़ियाएँ, जादू की लालटेनें, गुनगुनाते लट्टू—और मिलकीयत के लिए झगड़ा करके बाँट लेते हैं। पता चल जाता है कि बचपन में ही प्रौढ़ लोग हैं। उनमें सदा भेड़िये का स्वभाव होता है। जब वे पहले-पहल पैतृक संपत्ति का बँटवारा करते हैं तो तुम देखते हो कि किस तरह लालच से आक्रमण करते हैं जब तक वे इस दौरान समाज की जरूरतों के अनुसार अपने व्यवहार को ठीक नहीं करते।

लीनडर्ट और गिटजे का जोड़ा देखने में अच्छा नहीं था, मगर अप्रिय भी नहीं था। वे उन प्रेम करने योग्य लोगों में से थे जिनके साथ दो दिन रहने के बाद भी उनके रूप पर कोई ध्यान नहीं देता। उन दोनों के चेहरों से उनके चरित्र और ईमानदारी की झलक टपकती थी। गरमियों की छुट्टियों में, दिन चढ़ने से पूर्व, लीनडर्ट हमें मछली पकड़ने के लिए ले जाता था; फिर उसकी दया का पारावार नहीं रहता था। वह हमें घंटी बजाकर जगाता और जब तक हम तैयार न हो जाते, वह शांतिपूर्वक गली के द्वार पर हमारी प्रतीक्षा करता; हमारे लिए पीपों को ले जाता, वह स्थान बताता जहाँ ढेर सी मछलियों पकड़ी जा सकती थीं; हमें अपनी लई और कीड़े देता और मछलियों का बड़ा भाग भी। वह शानदार ढंग से मछली पकड़ता था। यह कल्पना मत करो कि हर कोई जैसे चाहे मछली पकड़ सकता है। मछली पकड़ने में विशेषकर स्वाभाविक प्रवृत्ति और लंबे अनुभव की जरूरत होती है। लीनडर्ट ने अपने सौभाग्य और कारनामों की कहानियाँ सुनाईं कि किस तरह उसने मीठे पानी के छोटे से गड्ढे से तीन-तीन पाउंड की मछलियाँ एक-एक करके पकड़ी थीं; ईल मछली की कहानी सुनाई कि किस प्रकार उसकी दुम काटकर उसे काँटा निकालना पड़ा था; पाईक मछली की कहानी जो उसकी छड़ी लेकर तैर गई थी; रुधिर स्रावित टेंच मछली की कहानी जो नवजात शिशु की तरह होती है; बड़ी ईल मछली की कहानी जिसकी खाल उसने प्रातःकाल छीली थी और सायंकाल उसने इसकी अंगुली को काट लिया था! अलिफ लैला की कहानियों की तरह हमने सब कहानियों पर विश्वास किया। दो बातें विशेषकर उससे हमने सीखीं। पहली यह कि धागे में नया काँटा कैसे लगाते हैं और उसको राँगे की महीन पत्तर से कैसे ढकते हैं ताकि तैरनेवाली लकड़ी से सीधा लटका रहे जोकि मछली पकड़नेवाले के लिए अनिवार्य स्थिति है ताकि वह जान सके कि कितना मुँह मारा गया है। दूसरा पाठ जो गिटजे के आज्ञाकारी प्रेमी के स्कूल में सीखा, यह था कि जब मछली वाकई काट चुके और मछली पकड़नेवाला पकड़ने के लिए तैयार हो, उसे धक्का देकर पटके, न कि खींचकर। दूसरी स्थिति में जब छोटी मछली अच्छी तरह नहीं काटती तो वह पीछे की ओर मुँह में काँटा लिये तैरती है और तुम्हें केवल रुधिर स्रावित गलफड़ा की प्राप्ति होती है। पहली स्थिति में तुम जंतु को पलटने का अवसर देते हो और इस प्रकार भयानक शक्ति से सींगनुमा वस्तु उसके खुले मुँह में काँटे को बैठा देती है।

गिटजे का रूप वसंत ऋतु की तरह था जब वह तेईस वर्ष की थी और अपने प्रेमी लीनडर्ट के साथ रह रही थी।

हमारी अपेक्षा वह स्वयं इसे अधिक बता सकता था, यदि मृत्यु उसे छीनकर न ले जाती। इस समय जब हम बात कर रहे हैं, उसकी स्त्रियोचित सुंदरता मिट चुकी है। तब वह पचास वर्ष की थी—लंबी, कोमल और दुर्बल सी, सरदी, जुकाम और जोड़ों के दर्द से ग्रसित, हमेशा अपने साथ घटिया नसवार और टोंका फली से भरी चाँदी की डिबिया रखती थी। अब जबकि हम बड़े और बुद्धिमान् हो गए हैं, हम इन विलक्षण चीजों को हास्यकर नहीं समझते। इसके विपरीत, लीनडर्ट की विवाहिता जो पचास वर्ष की थी और जो टोंका फली को अपनी जेब में रखती थी, उसे इस छोटी कहानी की नायिका बनाने का हमें अधिकार है। जबकि बच्चा होते हुए और अपनी कला के मूल तत्त्व को मन में न तोलते हुए, हम गिटजे के कठिन लंबे विवाह और उसकी पुरानी सेविका संबंधी शिकायतों पर हँसते थे; क्योंकि बच्चे केवल अभिमानी नहीं होते, वे लालची भी होते हैं—वे भी निष्ठुर होते हैं। वे दुर्भाग्य पर हँसते हैं जिसको वे समझते नहीं। हमने ऐसी निष्ठुरता नहीं की। यह किसी प्रकार के स्वभाव के सौजन्य से नहीं था परंतु चूँकि लीनडर्ट की अंत्येष्टि तक हमें उसके और हमारी दर्जिन के असली संबंधों का पता नहीं चला था। इसलिए हमें हैरानी ही नहीं हुई थी कि वह हमारे साथ इतनी दयालुता से पेश क्यों आता था!

तुम विश्वास करो कि लीनडर्ट की मृत्यु और गिटजे से लंबी मुलाकात पर हमें हँसी नहीं आई थी। इससे साबित होता है कि यदि हमें पहले पता चल जाता तो हम गिटजे और उसके प्रेमी का निस्संदेह बड़ा मजाक उड़ाते। हमारे पूछने पर माँ ने बताया था, ''क्या कारण है कि आज गिटजे नहीं आई?''

''लीनडर्ट की मृत्यु हो गई है, वह इस समय दफनाया जा रहा है।''

❑

संगीतकार जेनको

—हेनरिक सेनकीविच (पोलैंड)

दुनिया में वह पतला-दुबला आया था। चारपाई के इर्दगिर्द खड़े पड़ोसियों ने माँ और बच्चे को देखकर अपने सिर हिलाए। उन सबमें से अधिक अनुभवी—लोहार की पत्नी ने अपने ढंग से बीमार जच्चे को सांत्वना देनी शुरू कर दी।

''तुम आराम से लेटी रहो, '' उसने कहा, ''और मैं पवित्र मोमबत्ती जलाती हूँ। तुम्हारा सबकुछ समाप्त हो चुका है; विनीत प्यारी, तुम्हें दूसरी दुनिया के लिए तैयारी करनी होगी। किसी को जाकर पुजारी को बुला लाना अच्छा रहेगा ताकि वह तुम्हें अंतिम धर्म-विधि की शिक्षा दे सके।''

''और नन्हे का तुरंत बपतिस्मा करना चाहिए, '' दूसरी ने कहा, ''मैं तुम्हें बताती हूँ कि पुजारी के आने तक यह जीवित नहीं रहेगी और यह सुखकर होगा कि बिना बपतिस्मा किया हुआ भूत कहीं मँडराता न फिरे।''

उसने बोलते हुए मोमबत्ती जलाई, शिशु को लिया, उसे पवित्र पानी का छींटा दिया, तब तक उसने अपनी आँखें नहीं झपकाईं; साथ ही ये शब्द कहे, ''मैं पिता के नाम पर तुम्हारा बपतिस्मा करती हूँ और तुम्हें जॉन का नाम देती हूँ; पिता के बेटे और पवित्र भूत के नाम पर (मरनेवाले के लिए प्रयोग की जानेवाली अस्पष्ट प्रार्थनाओं के साथ)। और अब, ओ ईसाई आत्मा, विदा हो जाओ, चली जाओ इस संसार से और जहाँ से आई थी, वहीं लौट जाओ। आमीन।''

ईसाई आत्मा इस संसार को छोड़कर जाने की जरा भी इच्छा नहीं रखती थी; इसके विपरीत, उसने अपनी टाँगों को, जितनी जोर से मार सकती थी, मारना शुरू कर दिया और रोने लगी—इतनी अच्छी आवाज में कि वहाँ बैठी औरतों को वह बिल्ली के बच्चों की बोली प्रतीत होती थी।

पुजारी बुलाया गया था। उसने अपना कर्तव्य निभाया और चला गया। माँ मरने की बजाय रोग-मुक्त हो गई और एक सप्ताह के बाद अपने काम पर चली गई।

शिशु का जीवन धागे पर लटक रहा था। वह कठिनाई से साँस लेता प्रतीत हो रहा था, परंतु जब वह चार वर्ष का हुआ तो छत पर कोयल तीन बार बोली जो पोलैंड के अंधविश्वासियों के अनुसार एक शुभ शकुन था और उसके बाद परिस्थितियाँ इस प्रकार बदलीं कि वह दस वर्ष का हो गया। वह पतला और कोमल था; उसका शरीर ढीला और गाल खोखले थे। सूखी घास की तरह उसके बाल उसकी स्पष्ट और उभरी हुई आँखों पर गिरते थे—आँखों में दूर की दृष्टि थी जैसे वह दूसरों से छिपाई गई चीजों को देखती हों।

सर्दियों में बच्चा चूल्हे के पीछे सिकुड़कर बैठा था; सर्दी के कारण कोमलता से रोता था—कभी-कभी भूख से भी, जब 'मम्मी' के बरतन या अलमारी में खाने के लिए कुछ नहीं होता था। गरमियों में वह छोटी सफेद कमीज में, जो कमर पर रूमाल से बँधी होती थी, इधर-उधर दौड़ता-फिरता था; सिर पर तिनकों की बनी टोपी होती थी। सन जैसे उसके बाल छिद्रों से बाहर झाँकते थे और उसकी दृष्टि पक्षी की तरह इधर-उधर झपटती थी। उसकी माँ, विनीत जीव, जो कठिनाई से गुजर करती थी, और एक अद्‌भुत छत के नीचे चिड़िया की तरह रहती थी, निस्संदेह लोक व्यवहार से उसे प्यार करती थी, फिर भी बहुत बार उससे झगड़ती और उसे प्राय: 'चेंजलिंग' कहा करती थी। आठ वर्ष की आयु में उसने अपना जीवन जीना आरंभ कर दिया; कभी भेड़ों के झुंड को चराता, कभी जंगल में खुंबियों के लिए निकल जाता—जब घर में खाने के लिए कुछ भी न होता। वह केवल परमात्मा को धन्यवाद देता कि इन साहसी यात्राओं में कोई भेड़िया उसकी चीर-फाड़ नहीं करता था। वह विशेषतया अकाल प्रौढ़ लड़का नहीं

था और गाँव के तमाम बच्चों की तरह बुलाए जाने पर मुँह में अंगुली डालने की उसकी आदत थी। पड़ोसियों ने भविष्यवाणी की थी कि वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहेगा या यदि वह जीवित रहता है तो भी अपनी माँ को आराम नहीं दे पाएगा क्योंकि वह कभी भी कठोर परिश्रम करने के योग्य नहीं होगा।

उसमें एक विशेष अनोखापन था। कौन कह सकता है कि इस असमान स्थान में यह उपहार क्यों दिया गया, परंतु संगीत को प्यार किया जाता है और उसका प्यार उत्कंठा थी। वह प्रत्येक वस्तु में संगीत सुनता था; वह हर ध्वनि पर ध्यान देता था और वह जितना बड़ा हुआ, उसने स्वर-ताल की ओर उतना ही अधिक ध्यान दिया। यदि वह पशुओं की देखभाल करता अथवा मित्रों के साथ जंगल में बेर इकट्ठे करने जाता, वह खाली हाथ लौटता और तुतलाकर कहता, ''ओ मम्मी, वहाँ कितना सुंदर संगीत था। वह बजा रहा था—ला-ला-ला!''

''मैं तुम्हारे लिए भिन्न धुन बजाऊँगी, अरे, निकम्मे बंदर।'' उसकी माँ क्रोध से चीखती और उसे करछुल से मारती थी।

छोटा बच्चा चीखता और संगीत को दोबारा न सुनने का वचन देता, परंतु जंगल के बारे में और अधिक सोचता था कि वह कितना सुंदर था और ऐसी आवाजों से भरा था जो गाती और गूँजती थीं। कौन था, क्या गाता और गूँजता था, वह ठीक तरह नहीं बता सकता था। चीड़ के पेड़, जंगली वृक्ष, भोजपत्र के पेड़, सारिका पक्षी, सभी गाते थे; सारे-का-सारा जंगल गाता था और प्रतिध्वनियाँ गाती थीं—चरागाहों में घास के तिनके गाते थे, कुटी के पीछे उद्यान में चिड़ियाँ चूँ-चूँ करती थीं; चैरी के पेड़ खड़खड़ाते और कर्कश आवाज करते थे। शाम को वह समस्त प्यारी आवाजें सुनता था जो केवल देहात में ही सुनाई देती हैं और वह सोचता था कि सारा गाँव धुन से गूँज रहा था। उसके साथी उसपर हैरान होते थे क्योंकि वे इस प्रकार की सुंदर आवाजें नहीं सुनते थे। जब वह घास उछालने का काम करता तो सोचता था कि पवन उसके डंडे के काँटों से गुजरकर गाती है! निरीक्षक जब उसे निकम्मा खड़े देखता, बालों को माथे से पीछे किए हुए, हवा के संगीत को काँटे पर उसे सुनता पाता तो उसके स्वप्न को तोड़ने और उसे होश में लाने के लिए पट्टी की कुछ चोटें मारता था, परंतु इससे कोई लाभ न होता। अंत में पड़ोसियों ने उसका नाम 'संगीतकार जेनको' रख दिया।

रात के समय जब मेढक टर्राते, चरागाहों के पार कर्कश आवाजवाले पक्षी चीखते, दलदल में बगुले झपटते और भेड़ों के पीछे मुरगे बाँग देते तो बच्चों को नींद नहीं आती थी; वह इन्हें खुशी से सुन नहीं सकता था और परमात्मा ही जानता है कि वह इन सब आवाजों में मिली हुई किन अनुरूपताओं को सुनता था। उसकी माँ उसको अपने साथ गिरजा नहीं ले जा सकती थी क्योंकि वहाँ जब भी बाजा बजता तो बच्चे की आँखें धुँधली और गीली हो जाती थीं या फिर खुलकर चमकने लगती थीं जैसे कि दूसरी दुनिया ने उन्हें प्रकाशयुक्त कर दिया हो!

चौकीदार, जो रात को गाँव में गश्त लगाता था और तारे गिनता था अथवा जागते रहने के लिए कुत्तों से धीमी आवाज में बातें करता था, ने कई बार जेनको की छोटी सफेद कमीज को अँधेरे में कलबरिया की ओर तेजी से उड़ते देखा था। बच्चा कलबरिया में नहीं जाता था, परंतु दीवार के साथ झुककर सुना करता था। अंदर संगीत पर जोड़े, प्रसन्नतापूर्वक घूमते थे और कभी-कभी एक आदमी चीखता—''हुर्रे!'' पाँव पटकने की आवाज और लड़कियों की कृत्रिम आवाजें सुनाई देती थीं। सारंगी कोमलता से कल-कल कर रही थी और बड़े बाजे के गहरे स्वर गूँज रहे थे, खिड़कियाँ रोशनी से उत्साहित थीं और नाचघर में लकड़ी का हर तख्ता चर-चर करता प्रतीत होता था, गाता और बजाता मालूम होता था और जेनको इन सबको सुनता था। वह ऐसी सारंगी को पाने के लिए क्या कुछ नहीं देता, जो ऐसी ध्वनि पैदा करती है—ऐसा संगीत उत्पन्न करती है! काश! यह कहीं मिलती, किसी तरह उसे बना पाता? यदि उसको हाथ में लेने की आज्ञा दे दे तो...? परंतु नहीं, वह सुनने से अधिक कुछ नहीं कर

सकता था और उसने तब तक सुना जब तक चौकीदार ने अँधेरे में उसे आवाज नहीं दी—

''ओ छोकरे, जाओ अपने बिस्तर पर।''

फिर छोटे, नंगे पाँव अपने कमरे की ओर बढ़ते और वायलिन की आवाज उनके पीछे-पीछे आती।

यह उसके लिए महान् अवसर होता जब वह फसल की कटाई पर अथवा किसी विवाह पर सारंगी को बजते सुनता। ऐसे अवसरों पर वह अँगीठी के पीछे सरक जाता और रात को बिल्ली की आँखों की तरह अपनी चमकीली बड़ी आँखों से सामने देखता हुआ, कई दिनों तक एक शब्द भी नहीं बोलता था।

अंत में उसने एक पतले तख्ते से सारंगी बनाई और उसमें घोड़े के बालों के 'तार' लगाए, परंतु वह इनती सुंदर नहीं बजती थी, जितनी कलबरियावाली। तारें नरमी से टन-टन की आवाज करती थीं; वह मक्खियों अथवा बौने की तरह भिनभिनाती थीं। फिर भी वह उसे प्रात: से रात तक बजाता था, भले ही ठोकरों और मुक्कों से नीला-पीला हो जाता था, लेकिन कर भी क्या सकता था, वह तो उसका स्वभाव बन गया था।

बच्चा पतला और पतला होता गया; उसके बाल घने होते गए, उसकी आँखें अधिक घूरनेवाली हो गईं और आँसुओं से तैरने लगीं; उसके गाल और छाती पहले से खोखली हो गई। वह कभी भी और बच्चों की तरह नहीं लगा; वह अपनी छोटी विनीत सारंगी की तरह था जो कठिनाई से सुनी जाती थी। इससे अधिक, फसल से पहले वह भूखा रहता था और मुख्यत: कच्चे शलजमों को खाकर जीता था या फिर अपनी इच्छाओं पर गुजर करता था—उसकी वायलिन के प्रति तीव्र इच्छाएँ। ओह! इन इच्छाओं का बुरा फल मिला!

ऊपर किले में एक सिपाही के पास सारंगी थी जो अपनी प्रेमिका और साथी नौकरों को खुश करने के लिए शाम को बजाया करता था। जेनको प्राय: बेलों में खिसककर संगीत सुनने या कम-से-कम सारंगी को एक नजर देखने के लिए नौकरों के बड़े कमरे के दरवाजे तक पहुँच जाता था। सारंगी दरवाजे के ठीक सामने दीवार पर लटकी होती। जब बच्चा उसको देखता था, उसकी सारी आत्मा उसकी आँखों में आ जाती थी—वह अलभ्य खजाना था जिसको प्राप्त करने में वह असमर्थ था, भले ही वह उसे पृथ्वी पर अत्यंत मूल्यवान वस्तु समझता था। उसको एक बार अपने हाथ से छूने या फिर इसको पास से देखने की मूक लालसा उसमें उभरी। यह विचार आते ही विनीत बचकाना दिल खुशी से उछल पड़ा।

एक शाम नौकरों के बड़े कमरे में कोई नहीं था। वहाँ का परिवार काफी समय से विदेश में रह रहा था, घर खाली था और सिपाही अपनी प्रेमिका के साथ कहीं गया हुआ था। जेनको बेलों में छिपा, कई मिनटों तक आधे खुले दरवाजे से अपनी इच्छा के लक्ष्य को देखता रहा था।

पूर्णिमा का चाँद आकाश में तैर रहा था; उसकी रश्मियाँ कमरे में रोशनी की धाराएँ फेंक रही थीं और सामनेवाली दीवार पर गिर रही थीं। धीरे-धीरे वे उस स्थान की ओर बढ़ीं जहाँ वायलिन लटक रही थी और उसपर पूरी तरह से गिरीं। अँधेरे में बच्चे के लिए वह साज के चारों ओर चाँदी का प्रभामंडल सा प्रतीत हो रहा था। वह साज को इस प्रकार प्रकाशित कर रहा था कि जेनको देखकर चुँधिया गया; तारें, गरदन और दिशाएँ स्पष्टतया नजर आ रही थीं, खूँटियाँ जुगनुओं की तरह चमक रही थीं और कमान जादूगर के चाँदी के डंडे की तरह था। वह कितना सुंदर था—लगभग जादू का! जेनको ने भूखी आँखों से देखा। सींखचे की बेल से सटा, अपने हड्डीदार घुटनों पर कोहनियाँ टेकीं, वह खुले मुँह से निश्चल इस एक वस्तु को देख रहा था। अब उसे डर ने घेर लिया और अगले क्षण शांत न करने योग्य इच्छा ने उसे आगे बढ़ाया। क्या यह जादू था या नहीं था? वायलिन अपनी यशस्वी किरणों के साथ उसके पास आती हुई जान पड़ती थी, उसके सिर पर मँड़राने के लिए!

केवल पुन: तेजी से चमकने के लिए, एक क्षण के लिए यश पर अँधेरा छा गया। जादू, यह वास्तव में जादू था!

इतने में पवन चरचराई, वृक्ष खड़खड़ाए, बेलों ने कोमलता से कानाफूसी की और बच्चे को ऐसा लगा कि वह कह रही हो—'जाओ, जेनको जाओ, वहाँ कोई नहीं है, जेनको जाओ।'

रात साफ और चमकीली थी। बाग में जोहड़ के पास बुलबुल ने गाना शुरू किया—धीरे-धीरे फिर जोर से ऊँचे-ऊँचे। उसका गीत कह रहा था—'जाओ, साहस करो, उसे छू लो।' एक ईमानदार काला कौआ बच्चे के सिर पर कोमलता से उड़ा और काँव-काँव करने लगा—'नहीं, जेनको नहीं।' कौआ उड़ गया, परंतु बुलबुल रह गई और बेलें अधिक स्पष्टता से चिल्लाईं, 'वहाँ कोई नहीं है।'

सारंगी अब भी चाँद की किरण के रास्ते में लटक रही थी—झुकी हुई आकृति कोमलता से और ध्यानपूर्वक निकट आती गई और बुलबुल कहती रही, 'जाओ, जाओ, उसे ले लो।'

दरवाजे के रास्ते पर सफेद कमीज टिमटिमाई। काली बेलों से वह जल्दी से छिपाई न जा सकी। किनारे पर कोमल बच्चे की दु:खी तेज साँस सुनाई देती थी। एक क्षण के बाद सफेद कमीज लुप्त हो गई और केवल एक नंगा पाँव अभी तक सीढ़ियों पर खड़ा था। एक बार काला कौआ पुन: पास से काँव-काँव करता उड़ गया—'नहीं, नहीं'; जेनको पहले ही अंदर जा चुका था।

जोहड़ में मेढक जैसे एकाएक मौन हो गए थे वैसे ही एकाएक टर्राने लगे मानो किसी चीज ने उन्हें डरा दिया हो। बुलबुल ने गाना और वृक्षों ने कानाफूसी करना बंद कर दिया। इस बीच जेनको अपने खजाने की ओर धीरे-धीरे बढ़ा, परंतु डर ने उसे पकड़ा हुआ था। बेलों की छाया में उसने अपने को सुरक्षित पाया, मानो जंगल की झाड़ियों में जंगली पशु हो—अब वह फंदे में फँसे जंगली पशु की तरह काँपा। वह शीघ्रता से हिलडुल रहा था—उसकी साँस छोटी थी।

पूरब से पश्चिम तक चमकती गरमियों की बिजली मकान को थोड़ी देर के लिए जगमगा देती थी और विनीत जेनको लगभग अपने घुटनों और हाथों पर काँपते हुए अपने सिर को आगे सारंगी के पास दबाए हुए नजर आता था, परंतु गरमियों की बिजली रुक गई, एक बादल चाँद के आगे से गुजरा और फिर अँधेरे में कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया।

फिर थोड़ी देर के बाद, अँधेरे में एक धीमी दर्द भरी आवाज सुनाई दी, मानो किसी ने अकस्मात् तार को छू दिया हो और उस समय कमरे के कोने से कर्कश उनींदी आवाज आई, ''कौन है वहाँ?''

दीवार के साथ दियासलाई ने रगड़ खाई, छोटी ज्वाला निकली और फिर—'ओ, परमात्मा!' फिर कठोर गालियाँ, मुक्कों की बौछार, बच्चे की चीख-पुकार; 'ओह, परमात्मा के लिए!' कुत्तों का भौंकना, खिड़कियों के सामने लोगों का बत्तियाँ लिये हुए इधर-उधर भागना, सारे घर में कोहराम मच गया।

दो दिन के बाद विनीत जेनको न्यायाधीशों के सामने खड़ा था। क्या उसको चोरी के लिए अभियुक्त ठहराया जाए? वस्तुत:।

जैसे ही वह कटघरे में खड़ा हुआ, न्यायाधीश और मकान मालिक ने दोषी को देखा—मुँह में अंगुली डाले, भयानक छोटी, दुर्बल, गंदी, पराजित आँखों से घूरता हुआ और बता पाने में असमर्थ कि वह वहाँ क्यों और कैसे पहुँचा था या वे लोग इसके साथ क्या करनेवाले थे, खड़ा था।

न्यायाधीश ने सोचा कि ऐसे छोटे हतभाग्य व्यक्ति पर मुकदमा कैसे चलाया जा सकता है, जो केवल दस वर्ष का है और कठिनाई से अपनी टाँगों पर खड़ा हो सकता है? उसे जेल भेजा जाए या क्या...? बच्चे के साथ ज्यादा कठोरता से पेश नहीं आना चाहिए। क्या यह उचित नहीं रहेगा कि इसे चौकीदार के हवाले कर दिया जाए और वह इसे कुछ कोड़े मारे, ताकि यह पुन: चोरी न करे और मामला यहीं समाप्त हो जाए!

''ठीक है, बहुत अच्छा विचार है।''

स्टाच चौकीदार को बुलाया गया।

''इसको ले जाओ और चेतावनी के तौर पर कोड़े लगाओ।''

स्टाच ने अपना बेढंगा बड़ा सिर हिलाया और अपने बाजू के नीचे कुत्ते के पिल्ले की तरह जेनको को लेकर खलिहान की ओर चल दिया।

या तो बच्चे ने सारे मामले को समझा नहीं या फिर वह बोलने से डर रहा था; किसी भी हालत में वह बोला नहीं और एक भयभीत पक्षी की तरह अपने चारों ओर देखता रहा। वह जान भी कैसे सकता था कि वे इसके साथ क्या करना चाहते थे? जब स्टाच ने उसे पकड़ा, खलिहान के फर्श पर लिटाया और उसकी छोटी कमीज को बेंत से ऊपर उठाया तो जेनको चीखा ''मम्मी।'' और हर कोड़े पर चिल्लाया, ''मम्मी, मम्मी।'' परंतु हर बार धीमे और दुर्बलता से; कुछ कोड़े खाने के बाद वह चुप हो गया और मम्मी को पुकारना बंद कर दिया।

विनीत टूटी हुई सारंगी!

भद्दे, दुष्ट स्टाच! बच्चे को क्या किसी ने इस तरह से कभी पीटा है? विनीत बच्चा हमेशा से दुबला और पतला रहा था और कठिनाई से साँस उसके शरीर में थी।

अंत में उसकी माँ आई और बच्चे को अपने साथ ले गई, उसे उठाकर ले जाना पड़ा। अगले दिन जेनको नहीं जागा और तीसरे दिन तख्ते पर घोड़े के कपड़े से ढके उसके प्राण पखेरू शांति से उड़ गए!

वह लेटा हुआ था, खिड़की के सामने उगे चैरी के पेड़ पर अबाबील चिड़िया बोल रही थी; खिड़की के शीशे से होती हुई सूर्य की किरण आ रही थी और बच्चे के भोथरे बालों और रक्तहीन चेहरे को चमका रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि बच्चे की आत्मा को स्वर्ग में जाने के लिए किरण रास्ता बना रही थी।

उसके लिए, उसके अंतिम समय में वह चौड़े और सौर पथ से जाएगा इसके विपरीत कि जीवन में कँटीले रास्ते पर चलता। व्यर्थ पड़ी हुई छाती अब भी कोमलता से ऊपर-नीचे हो रही थी और ऐसा लगता था कि बच्चा खिड़की से आती हुई बाहरी दुनिया की प्रतिध्वनियों के प्रति अभी भी सचेत था। शाम हो गई थी; घास सुखाने के बाद किसान-लड़कियाँ गाती हुई पास से लौट रही थीं; पास में नदी मंद-मंद शब्द उत्पन्न कर रही थी।

जेनको ने अंतिम बार गाँव की संगीतमयी प्रतिध्वनियों को सुना। घोड़े के कपड़े पर उसकी बगल में सारंगी पड़ी थी जो उसने लकड़ी के पतले तख्ते से बनाई थी। एकाएक मरते हुए बच्चे का चेहरा चमक उठा और उसके होंठ—सफेद होंठ धीमे से बोले, ''मम्मी!''

''बोलो मेरे बच्चे।'' माँ ने सिसकियाँ भरते हुए कहा।

''मम्मी, परमात्मा मुझे स्वर्ग में असली सारंगी देगा।''

''हाँ, हाँ, मेरे बच्चे।'' माँ ने उत्तर दिया। वह अधिक कुछ न कह सकी क्योंकि उसके दिल में एकाएक दु:खमयी शोक उमड़ पड़ा था। वह केवल बड़बड़ाई, ''जीसू, मेरे जीसू!'' और मेज पर सिर रखकर रोने लगी—इस तरह रोने लगी जैसे मृत्यु ने उसका खजाना लूट लिया हो!

और यह ऐसे हुआ। जब उसने सिर उठाकर बच्चे की ओर देखा तो छोटे संगीतकार की आँखें खुली थीं, परंतु उसकी आकृति गंभीर, पवित्र और कठोर थी। सूर्य की किरण लुप्त हो चुकी थी।

''परमात्मा तुम्हें शांति प्रदान करे, नन्हें जेनको।''

❑

अगले दिन बेरन और उसका परिवार इटली से किले में लौट आया। औरों के साथ घर की बेटी और उसका

मंगेतर भी था।

''इटली कितना रमणीय देश है!'' भद्र पुरुष ने कहा।

''हाँ, और वहाँ के लोग! वह कलाकारों का देश है। इसको जानकर उनके गुणों को प्रोत्साहित करना आनंददायक है।'' युवा महिला ने उत्तर दिया।

जेनको की कब्र पर बबूल के पेड़ खड़खड़ा रहे थे।

❑

युक्ति

—गॉय दी मोपासाँ (फ्रांस)

आग के पास बैठे अनुभवी डॉक्टर और उसकी युवा मरीज बातें कर रहे थे। वास्तव में उसे कोई बीमारी नहीं थी, सिवाय उन अल्प स्त्री रोगों में एक, जिनसे सुंदर स्त्रियाँ प्राय: पीड़ित रहती हैं—थोड़ी रक्त की कमी, तंत्रिका आक्रमण और थकावट का संदेह; वह थकावट जो नव-विवाहित व्यक्ति को अपने दांपत्य जीवन के पहले महीने के अंत में, प्रेम के चातुरी खेल के बाद प्राय: पीड़ित करती है!

वह काऊच पर लेटी बातें कर रही थी। ''नहीं डॉक्टर, '' उसने कहा, ''औरत द्वारा अपने पति को धोखा देने की बात मैं कभी नहीं मान सकती। यदि मान भी लिया जाए कि वह उसे प्रेम नहीं करती, अपनी कसमों और वायदों की परवाह नहीं करती, फिर भी यह कैसे हो सकता है कि वह अपने आपको किसी दूसरे पुरुष के हवाले कर दे? वह दूसरों की आँखों से इस कटु-षड्यंत्र को कैसे छिपा सकती है? झूठ और विद्रोह की स्थिति में प्रेम करना कैसे संभव हो सकता है?''

डॉक्टर हँसा और बोला, ''यह बिलकुल आसान है, मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ कि जब औरत सीधे रास्ते से भटकने का निश्चय कर लेती है तो वह ऐसी सूक्ष्म बातों का खयाल नहीं करती। मेरा तो निश्चय है कि कोई भी औरत सच्चे प्रेम के लिए तब तक परिपक्व नहीं होती, जब तक वह विवाहित जीवन की समस्त बेचैनियों और दु:खों से गुजर नहीं जाती; जो एक प्रसिद्ध व्यक्ति के मतानुसार—दिन में दुर्भावनापूर्ण शब्दों के आदान-प्रदान और रात्रि में असावधानी से किए गए दुलार के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसमें अधिक सत्य नहीं है कि कोई भी औरत विवाह से पूर्व तीक्ष्णता से प्रेम कर सकती है।

''जहाँ तक बहानों का प्रश्न है, तो वे ऐसे अवसरों पर बड़ी मात्रा में औरतों की अंगुलियों पर रहते हैं, उनमें से अधिकतम सीधी-सादी विलक्षण रूप से युक्तिवान् होती हैं और बड़े-से-बड़े भ्रमजालों से अपने आपको अद्‌भुत ढंग से बचा लेती हैं।''

फिर भी युवा मरीज आश्वस्त नजर नहीं आई। ''नहीं डॉक्टर, '' उसने कहा, ''घटना घट जाने के बाद कोई नहीं सोचता कि एक खतरनाक मामले में उसे क्या करना चाहिए था। ऐसे अवसरों पर, औरतों के विचारहीन होने का दायित्व आदमियों की अपेक्षा औरतों पर अधिक है।''

डॉक्टर ने अपने हाथ उठाए—''तुम कहती हो घटना घट जाने के बाद! अपनी एक मरीज, जिसको मैं निर्दोष स्त्री समझता था, के साथ क्या बीती, मैं तुम्हें सुनाता हूँ। यह घटना एक प्रदेशीय नगर में घटी। एक रात जब मैं गहरी नींद में सो रहा था, जिस पहली और गहरी नींद में उठना कठिन होता है, मुझे स्वप्न में आभास हुआ कि नगर में अग्निसूचक घंटियाँ बज रही हैं और मैं चौंककर उठ गया। वह मेरे घर की ही घंटी तीव्रता से बज रही थी और मेरी नौकरानी दरवाजे पर उत्तर देती दिखाई नहीं दे रही थी। फिर मैंने अपनी चारपाई के सिरहाने से घंटी बंद कर दी। शीघ्र ही मैंने खामोश घर में धड़ाके और कदमों की आवाज सुनी। फिर जीन ऊपर आई तथा मुझे एक पत्र दिया जिसमें लिखा था—'मैडम लेलीवरे डॉ. साईमन से प्रार्थना करती है कि वह तत्काल उसके पास पहुँचे।'

''मैंने कुछ क्षणों के लिए सोचा और अपने आपसे कहा, 'एक तांत्रिक आक्रमण, भाप, अनर्थक।' मैं बहुत थका हुआ था; मैंने उत्तर दिया, 'मैं, डॉ. साईमन, चूँकि ठीक नहीं हूँ, इसलिए मैडम लेलीवरे से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया मेरे साथी एम. बोनेट को बुला लिया जाए।'

''मैंने पत्र को लिफाफे में डाला और फिर सो गया। आधा घंटे बाद ही गली में लगी मेरे मकान की घंटी फिर

बजी। जीन मेरे पास आई और कहने लगी—'नीचे एक व्यक्ति है जिसने अपने आपको इस तरह लपेटा हुआ है कि मैं बता नहीं सकती कि वह पुरुष है या स्त्री। वह आपसे तत्काल बात करना चाहता है। वह कहता है कि दो आदमियों के जीवन-मृत्यु का प्रश्न है। मैं उठकर बैठ गया और कहा कि उस व्यक्ति को अंदर आने दो।'

''एक प्रकार की काली छाया सामने नजर आई और ज्यों ही जीन कमरे से बाहर गई, उसने चेहरे से परदा हटाया। वह मैडम लेलीवरे थी, जो पूरी तरह से जवान थी और तीन साल से नगर के बड़े दुकानदार की विवाहिता थी तथा अड़ोस-पड़ोस में सबसे सुंदर युवती मानी जाती थी।

''वह अत्यंत पीली पड़ गई थी और उसका चेहरा सिकुड़ा हुआ था, जैसे कभी-कभी पागल व्यक्तियों का हो जाता है। उसके हाथ तीव्रता से काँप रहे थे। उसने बिना आवाज निकाले दो बार बोलने की कोशिश की, परंतु अंत में वह हकलाई, 'चलो, जल्दी चलो, डॉक्टर! चलो...मेरा...प्रेमी...अभी-अभी मेरे शयनकक्ष में मर गया है।' वह रुक गई; वेदना से उसका गला अवरुद्ध हो गया। फिर कहना शुरू किया—'मेरा पति जल्दी ही क्लब से घर आ जाएगा।'

''बिना सोचे कि मैं रात की पोशाक पहने हुए हूँ, मैं चारपाई से कूदा और कुछ ही क्षणों में कपड़े पहन लिये। फिर मैंने पूछा, 'क्या कुछ समय पहले तुम ही यहाँ आई थीं?'

''नहीं', उसने भय से पत्थर के बुत की तरह खड़े-खड़े कहा, 'वह मेरी नौकरानी थी, वह जानती है।' फिर थोड़ी चुप्पी के बाद कहने लगी—'मैं वहीं उसके पास ही थी।' और उसने भय भरी चीख मारी और गला घुटने के आवेग से हाँफने के बाद, ऐंठनवाली सिसकियों को एक-दो मिनट तक रोकते हुए बुरी तरह से रोई। फिर अचानक उसके आँसू थम गए, जैसे आंतरिक ज्वाला से सूख गए हों और शोकजनक निश्चलता से कहने लगी—'आओ, जल्दी आओ।' मैं तैयार था परंतु चिल्लाया—'मैं अपनी गाड़ी का प्रबंध करना बिलकुल भूल गया हूँ।'

'' 'गाड़ी मेरे पास है', उसने कहा, 'यह उसी की है जो उसका इंतजार कर रही थी।' उसने अपने चेहरे को पूरी तरह से ढक लिया और हम चल पड़े।

''जब वह गाड़ी के अंदर अँधेरे में मेरे साथ बैठी हुई थी, उसने अचानक मेरा हाथ थामा और अपनी कोमल अंगुलियों से पीसते हुए, अपने दिल से निकलती हुई काँपती आवाज में कहा, 'ओह, शायद तुम जानते हो, अगर तुम जानते कि मैं दु:खी क्यों हूँ! मैं उसे प्रेम करती थी, पिछले छह महीनों से मैंने उसे पागल औरत की तरह व्याकुलता से प्रेम किया है।'

'' 'क्या तुम्हारे घर में और भी कोई है?' मैंने पूछा।

'' 'नहीं, रोज के सिवाय, जो सबकुछ जानती है।'

''हम दरवाजे पर रुके। स्पष्ट रूप से हर कोई सो रहा था, हम सिटकिनी की सहायता से अंदर गए और दबे पाँव ऊपर चले गए। भयभीत नौकरानी जलती हुई मोमबत्ती अपने बराबर रखे ऊपरी सीढ़ी पर बैठी थी, क्योंकि मृतक के पास बैठने से वह डरती थी। मैं कमरे में गया। वह अस्त-व्यस्त पड़ा था जैसे उसमें कोई झगड़ा हुआ हो। चारपाई गिरी हुई थी और ऐसी लगती थी, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रही हो; चादर जमीन पर पड़ी थी और गीले रूमाल, जिनसे युवा आदमी की कनपटियों को धोया गया था, वाश-बेसिन और शीशे के निकट पड़े थे जबकि सिरके की तेज गंध कमरे में फैल रही थी।

''मृतक का शव कमरे के बीचोबीच अपनी पूरी लंबाई में पड़ा था। मैं उसके पास गया, उसको देखा और छुआ। मैंने उसकी आँखें खोलीं, हाथों को छुआ और औरतों की तरफ मुड़ा जो इस प्रकार काँप रही थीं जैसे सरदी में जम रही हों। मैंने उनसे कहा, 'इसे उठाकर चारपाई पर लिटाने में मेरी सहायता करो।' जब हमने धीरे से उसे चारपाई पर

लिटा दिया तो मैंने उसके दिल की धड़कन को सुना, शीशे से उसके होंठ देखे और कहा, 'सब समाप्त हो गया है, अब जल्दी से इसे कपड़े पहनाने चाहिए।' अत्यंत भयानक दृश्य था!

''मैंने एक-एक करके उसके अवयवों को पकड़ा, जैसे वे किसी बड़ी गुडिया के हों और उनको कपड़ों में डाला जो औरतें लाई थीं। उन्होंने उसे जुराब, जाँघिया, पतलून और वास्केट पहनाए और अंत में कोट। उसके बाजुओं को कोट के बाजुओं में डालना अत्यंत कठिन था।

''जब जूतों के तसमे कसने की बारी आई तो औरतें झुकीं और मैंने बत्ती थामी। चूँकि उसके पैर सूजे हुए थे, इसलिए यह कठिन काम था। वे बटन-हुक नहीं देख पा रही थीं, इसलिए उसने अपने बालों की सूइयों से काम लिया। ज्यों ही वह भयानक परिधान पहनाया गया, मैंने सारे काम को देखा और कहा, 'तुम्हें इसके बालों को सँवारना होगा।' नौकरानी जाकर अपनी मालकिन का बड़े दाँतोंवाला कंघा और ब्रुश ले आई लेकिन बालों की लंबी लटें निकालते हुए वह काँप भी रही थी। मैडम लेलीवरे ने उसके हाथ से कंघा ले लिया और बालों को इस प्रकार सँवारा जैसे वह उनसे दुलार कर रही हो। उसने माँग निकाली, दाढ़ी को ब्रुश किया, मूँछों को अपनी अंगुलियों की नरमी से गोल किया जैसा उनके षड्यंत्र में करने की उसकी आदत थी।

''इसपर उसने अचानक उसके बालों को छोड़ दिया और अपने प्रेमी के गतिहीन सिर को अपने हाथों में थाम लिया तथा निराशा से उसकी ओर काफी देर तक देखती रही जो अब उसके साथ हँस नहीं सकता था। फिर उससे लिपटकर और अपनी बाँहों में लेकर उत्सुकता से उसे चूमने लगी। इसके बाद मुँह और माथे पर, आँखों पर और कनपटियों पर उसके चुंबन झोंकों की तरह गिरने लगे और फिर उसके कानों के पास अपने होंठ रखते हुए, जैसेकि वह अभी सुन सकता हो, अपने आलिंगनों को और उत्सुकतापूर्ण बनाने के लिए, जैसे कान में कुछ कहना चाहती हो, उसने हृदय-विदारक आवाज में कई बार कहा, 'अलविदा, मेरे प्यारे, अलविदा!'

''उस समय घड़ी ने बारह बजाए और मैं चौंका, 'बारह बज गए।' मैं चिल्लाया—'इसी समय क्लब बंद होता है, आओ, मैडम! हमें एक क्षण भी खोना नहीं चाहिए।'

''वह चौंकी और मैंने कहा, 'हमें इसे ड्राइंग रूम में ले जाना होगा।' जब हम यह कर चुके, मैंने उसे सोफे पर बैठा दिया और फानूस जला दिए। ठीक उसी समय सामने का दरवाजा खुला और जोर से बंद हो गया। उसका पति लौट चुका था और मैंने कहा, 'रोज, तौलिया और चिलमची ले आओ, कमरे को साफ-सुथरा बना दो। परमात्मा के लिए जल्दी करो, एम. लेलीवरे अंदर आ रहा है।'

''मैंने सीढ़ियों पर उसके कदमों की आहट सुनी और दीवारों को छूते हुए उसके हाथ देखे। 'आओ मेरे दोस्त, ' मैंने कहा, 'यहाँ एक हादसा हो गया है।'

''मुँह में सिगार लगाए, हैरान पति दरवाजे पर नजर आया और कहने लगा—'क्या मामला है? क्या मतलब है इसका?'

'' 'मेरे प्यारे मित्र, ' उसके पास जाकर मैंने कहा, 'तुम हमें हड़बड़ाहट में देख रहे हो। मैं देर तक तुम्हारी पत्नी से बातें करता रहा और यह मेरा दोस्त जो अपनी गाड़ी में मुझे लाया था, अचानक बेहोश हो गया और तमाम यत्न करने के बाद भी दो घंटे से बेहोश है। मैं अजनबियों को बुलाना नहीं चाहता था और यदि इसे नीचे ले जाने में मेरी सहायता करो तो इसके अपने घर में मैं इसकी अच्छी देखभाल कर सकूँगा।'

''पति, जो हैरान था, परंतु शंकित नहीं, ने अपना हैट उतारा। फिर अपने रकीब को, जो भविष्य में उसके लिए दु:खदायी नहीं होगा, अपनी बाँहों में उठा लिया। धुरों के बीच घोड़े की तरह, मैंने उसे दोनों टाँगों के बीच से उठाया और हम सीढ़ियों से नीचे ले आए जबकि उसकी पत्नी ने हमें रोशनी दिखाई। जब हम बाहर आए तो कोचवान को

धोखा देने के लिए मैंने उसके शरीर को ऊपर उठाया और कहा, 'आओ प्यारे मित्र, यह कुछ नहीं; मेरे विचार से तुम पहले से अच्छे हो, हिम्मत करो और कोशिश करो, सब ठीक हो जाएगा।' लेकिन ज्यों ही मैंने महसूस किया कि वह मेरे हाथों से खिसक रहा है, मैंने उसके कंधे पर एक तमाचा मारा जिससे वह आगे हुआ तो उसे गाड़ी में गिरा दिया, तत्पश्चात् मैं गाड़ी में घुसा।

''एम. लेलीवरे, जो कुछ चौकन्ना हो गया था, मुझसे कहने लगा, ''तुम क्या सोचते हो, कोई गंभीर बात है क्या?' इसपर मैंने मुसकराते हुए उत्तर दिया, ''नहीं।'' जब मैंने उसकी पत्नी की ओर देखा तो वह अपना हाथ अपने पति के हाथ में डाले हुए थी और गाड़ी के भीतर देखने का प्रयत्न कर रही थी।

''मैंने हाथ मिलाए और अपने कोचवान को गाड़ी चलाने के लिए कहा। सारे रास्ते मृतक मेरे ऊपर गिरता रहा। जब हम घर पहुँचे तो मैंने कहा कि वह घर आते-आते रास्ते में बेहोश हो गया है और ऊपर लाने में मैंने सहायता की थी जहाँ आकर मैंने प्रमाणित कर दिया कि वह मर गया है। और इस प्रकार उसके विचलित परिवार के लिए एक और हर्ष-प्रधान नाटक किया। अंत में, मैं प्रेमियों के बारे में कुछ दृढ़ता से बिना कहे, अपने बिस्तर पर आ गया।''

डॉक्टर ने कहना बंद किया, भले ही वह अब भी मुसकरा रहा था और जवान औरत, जो बहुत ही बेचैन थी, कहने लगी, ''तुमने इतनी भयानक कहानी मुझे किसलिए सुनाई है?''

उसने वीरता से उसके सामने सिर झुकाया और उत्तर दिया, ''ताकि जरूरत पड़ने पर मैं आपको अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकूँ।''

❑

पितृहत्या

—गॉय दी मोपासाँ (फ्रांस)

वकील ने उसे पागल ठहराया था; नहीं तो इतने अजीब अपराध का कारण और क्या हो सकता था?

एक प्रात: चेटोन के निकट नरकंटो में एक-दूसरे की बाँहों में लिपटे दो मृत शरीर पाए गए—एक पुरुष और दूसरी उसकी पत्नी। वह जोज समाज में अच्छा जाना-माना, धनी, प्रौढ़, गत वर्ष से विवाहित था; औरत तीन वर्ष पूर्व पहले पति को खो चुकी थी।

उनका कोई शत्रु नहीं था और उनको लूटा भी नहीं गया था। वह स्पष्टतया लोहे की छड़ों से, एक के बाद दूसरे को पीटने के बाद किनारे पर नदी में फेंका गया था।

जूरी की छानबीन से किसी बात का पता नहीं चला। नाविकों से पूछताछ की गई; वे कुछ भी नहीं जानते थे। मामले को बंद किया ही जा रहा था कि पड़ोसी गाँव का बढ़ई जॉर्ज लुई, जो जेंटलमैन के नाम से जाना जाता था, ने अपने आपको पेश किया।

उसने सारे प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार कर दिया, सिवाय इसके—

''मैं उस आदमी को दो वर्षों से और उस औरत को छह महीनों से जानता था। वे प्राय: मेरे पास पुराने फर्नीचर की मरम्मत के लिए आया करते थे क्योंकि मैं अच्छा काम करता था।''

जब उससे पूछा गया कि 'फिर तुमने उन्हें जान से क्यों मार दिया?' तो उसने हठपूर्वक उत्तर दिया, ''मैंने उन्हें मार डाला, क्योंकि मैं उन्हें मार डालना चाहता था।''

इससे अधिक उससे पता नहीं चल सका।

वह आदमी निस्संदेह जॉर्ज था जिसे पहले जनपद की नर्स को सौंपा गया था और बाद में छोड़ दिया गया था। उसका कोई नाम नहीं था सिवाय जॉर्ज लुई के, परंतु ज्यों ही वह बड़ा हुआ, उसने अपनी रुचियों और स्वाभाविक कोमलता से, जिनसे उसके साथी असंबंध थे, अपने आपको असाधारण बुद्धिमान् सिद्ध किया, इसीलिए उसका उपनाम 'जेंटलमैन' पड़ गया था तथा इस नाम के अतिरिक्त किसी और नाम से पुकारा नहीं जाता था। व्यवसाय के कारण उसे एक स्मरणीय कुशल बढ़ई माना जाता था। वह लकड़ी में थोड़ी-बहुत नक्काशी करने का काम भी कर लेता था। यह भी कहा जाता था कि अपनी स्थिति की बाबत उसके अपने विचार थे; वह साम्यवादी सिद्धांतों का अनुसरण करता था, यहाँ तक कि नाशवाद का भी। वह साहसी और हिंसा-प्रधान कल्पित उपन्यासों को पढ़ने का बड़ा शौकीन था; एक प्रभावशाली चुननेवाला और श्रमिकों अथवा किसानों के वाद-विवाद समितियों में बोलनेवाला चतुर वक्ता था।

वकील ने उसे पागल ठहराया था।

सच देखा जाए तो यह कैसे माना जा सकता है कि उसने अपने सबसे अच्छे ग्राहकों को मार डाला जो धनी और उदार थे (जैसाकि उसने माना), वे—जिन्होंने दो वर्षों में इतना काम दिया था जिससे वह तीन हजार फ्रेंक कमा सका था (उसकी किताबें साक्षी थीं)। इसकी एक ही व्याख्या थी—पागलपन; उस व्यक्ति की प्रेतवादिता जो अपनी श्रेणी से फिसलकर और अपने आपको सर्वोपरि मानकर दो भले व्यक्तियों की हत्या करके समाज से बदला लेता है और वकील उसके उपनाम 'जेंटलमैन' का साफ संकेत करता है जो इस बहिष्कृत को तमाम पड़ोसियों ने दिया था।

''स्थिति की विडंबना पर ध्यान दीजिए!'' वह चिल्लाया, ''क्या यह दु:खी युवक जिसका न बाप है न माँ, इससे अधिक प्रबल उत्तेजना के योग्य नहीं था क्या? यह एक उत्कट प्रजातंत्रवादी है, नहीं, यह उस राजनैतिक पार्टी से

संबंध है जिसके सदस्यों को कभी सरकार गोली मार देना चाहती थी, देश निकाला देना चाहती थी लेकिन आज खुले हाथों उनका स्वागत करती है, वह पार्टी जिसका पहला उसूल आगजनी है और हत्या पूरी तरह से सादी योग्यता।

''इन शोचनीय सिद्धांतों ने, जिनका वाद-विवाद समितियों में स्वागत किया जाता है, इस युवक को बरबाद कर दिया। एम. केम्बेटा और एम. ग्रेवी के खून की माँग करनेवाले प्रजातंत्र पार्टी के पुरुषों और औरतों को भी इसने सुना है और इसका रोगग्रस्त मस्तिष्क वशीभूत हो गया है; यह खून का प्यासा है, कुलीन लोगों के खून का प्यासा!

''यह आदमी नहीं बल्कि कम्यून है, श्रीमान्, जिसे दंडित करना चाहिए!''

अनुमोदन की फुसफुसाहट इधर-उधर दौड़ने लगी। यह प्राय: महसूस किया जा रहा था कि वकील बहस जीत गया था; सरकारी अभियोजक ने कोई उत्तर नहीं दिया।

फिर न्यायाधीश ने अभियुक्त से पारंपरिक प्रश्न किया, ''अभियुक्त, क्या तुम अपनी सफाई में कुछ और कहना चाहोगे?''

आदमी खड़ा हो गया। वह कद-काठी में नाटा था, सन के-से बाल, स्थिर, चमकीली भूरी आँखें। इस दुर्बल युवक के गले से एक प्रबल, उदार और सुरीली आवाज निकली और अपने पहले ही शब्दों से लोगों का विचार बदल दिया जो उन्होंने इसके प्रति बनाया था।

वह ऊँचे आलंकारिक ढंग से बोला लेकिन इतना स्पष्ट कि उसका धीमे-से-धीमा शब्द भी बड़े न्यायालय के दूसरे छोर तक सुनाई देता था।

''न्यायाधीश महोदय, चूँकि मैं पागलखाने जाना नहीं चाहता और यहाँ तक कि फाँसी को प्राथमिकता देता हूँ, इसलिए मैं आपको सबकुछ बता दूँगा।

''मैंने उस पुरुष और औरत की इसलिए हत्या की क्योंकि वह मेरे माता-पिता थे।

''अब आप मेरी बात सुनिए और न्याय कीजिए। एक औरत ने बेटे को जन्म देकर उसे नर्स के पास भेज दिया। यह अच्छा रहता कि उसे पता होता कि उसके अपराध में साथ देनेवाली, नन्हें बच्चे को—उस निरपराध को कौन से जनपद में ले गई थी—निरपराध परंतु लंबे दु:ख के लिए, जारजिक प्रसूति के लिए, इससे भी बड़ी मृत्यु के लिए अपराधी बनाया गया था क्योंकि उसे विलाप के लिए, भूखा मरने के लिए, अपेक्षाकृत सड़ने के लिए त्याग दिया था या नर्स को मासिक खर्च नहीं दिया गया था।

''जिसने मुझे दूध पिलाया था वह औरत निष्कपट थी—अधिक सच्ची, अधिक स्त्रीत्वयुक्त, महान् आत्मा, मेरी अपनी माँ से अच्छी माँ। उसने मुझे पाला। वह अपना दायित्व निभाने में असमर्थ थी। अभागे व्यक्तियों को मृत्यु के लिए छोड़ देना ही बेहतर है जिन्हें ग्रामों में इस तरह फेंक दिया जाता है जैसे सड़कों के किनारे कूड़ा-करकट!

''मैं इस संदिग्ध विचार के साथ बड़ा हुआ कि मैं किसी अपमान को लिये हुए हूँ। एक दिन दूसरे बच्चों ने मुझे दोगली संतान कहा! उनको इस शब्द का अर्थ नहीं आता था। उनमें से एक ने अपने घर पर सुना था। न ही मुझे इसका अर्थ पाता था परंतु मैंने भाँप लिया।

''मैं निष्कपटता से कह सकता हूँ कि स्कूल में अत्यंत बुद्धिमान् बच्चों में से मैं भी एक था। मुझे एक सच्चा व्यक्ति होना चाहिए था, श्रीमान्, शायद एक स्मरणीय व्यक्ति यदि मेरे माता-पिता ने मुझे छोड़ने का अपराध न किया होता!

''और यह अपराध मेरे ही विरुद्ध किया गया। मैं पीड़ित व्यक्ति था और वे पापी। मैं रक्षाविहीन और वे दयाहीन। उन्हें मुझे प्यार करना चाहिए था, परंतु बहिष्कृत कर दिया।

''मेरा जीवन उनका ऋणी था, परंतु जीवन क्या उपहार है? कुछ भी हो, मेरा जीवन दुर्भाग्यपूर्ण था। मेरे लज्जापूर्ण परित्याग के बाद मुझे उन्हें प्रतिकार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देना था। उन्होंने मेरे विरुद्ध अत्यंत अमानवीय, अत्यंत लज्जाकर, अत्यंत राक्षसी अपराध किया था जो किसी मनुष्य के साथ किया जा सकता है। एक अपमानित व्यक्ति चोट करता है, लूटा जानेवाला व्यक्ति अपनी शक्ति से लूटा गया माल वापस ले लेता है, एक धोखा खाया हुआ व्यक्ति, एक ठगा हुआ व्यक्ति, एक संतप्त व्यक्ति हत्या करता है; मुँह पर तमाचा खाया हुआ व्यक्ति हत्या करता है, एक अपमानित व्यक्ति हत्या करता है। मुझे क्रूरतापूर्वक लूटा गया, धोखा दिया गया, संतप्त किया गया, मुँह पर तमाचा मारा गया, उन आदमियों से अधिक अपमानित किया गया जिनके गुस्से को आप क्षमा कर देते हैं।

''मैंने स्वयं बदला लिया है, मैंने हत्या की है। यह मेरा नैसर्गिक अधिकार था। मैंने उस भयानक जीवन, जो उन्होंने मुझपर थोपा था, के बदले में उनका सुखी जीवन ले लिया।

''आप इसे पितृहत्या कहेंगे! मेरे माता-पिता कहाँ हैं, वे व्यक्ति जिनपर घृणित बोझ था; एक भय, एक कलंक का धब्बा; जिनके लिए मेरा जन्म संकट था और मेरा जीवन लज्जा के लिए धमकी! उन्होंने स्वार्थपूर्ण खुशी ढूँढ़ी, बच्चा पैदा किया जिसकी इच्छा नहीं थी। उन्होंने इस बच्चे का शमन कर दिया। उनको उसी प्रकार प्रतिफल देने की मेरी बारी थी।

''और फिर भी अंत में मैं उनसे प्यार करने को तैयार था।

''अब दो वर्ष हो गए, जैसा मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ, जब मेरा पिता पहली बार मेरे घर आया था, मुझे किसी प्रकार की शंका नहीं थी। उसने फर्नीचर की दो वस्तुओं का ऑर्डर दिया; मुझे बाद में पता चला कि गाँव के पादरी से खुफिया वायदे के अंतर्गत उसने जानकारी प्राप्त की थी।

''वह प्राय: आता, मुझे काम देता और कुछ पैसे भी देता। कभी-कभी विभिन्न विषयों पर मुझसे बातचीत भी करता। मैंने उसके लिए थोड़ा-बहुत प्यार महसूस किया।

''इस वर्ष के आरंभ में वह अपनी पत्नी—मेरी माँ—को लाया। जब वह अंदर आई तो जोर से काँप रही थी—मैंने सोचा कि वह नाड़ी-मंडल की व्याधि से ग्रस्त है। उसने कुरसी और एक गिलास पानी माँगा। उसने कुछ नहीं कहा और पागलों की तरह मेरे माल को घूरती रही और मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों का कोई उत्तर उसने नहीं दिया—केवल असंगत हाँ और न के सिवाय। जब वह चली गई तो मैंने सोचा कि उसका दिमाग कुछ ठीक नहीं था।

''वह अगले महीने फिर आई। वह शांत थी, अपने आपकी स्वामिनी। उस दिन काफी लंबे समय तक वे बातें करते रहे और मुझे एक बड़ा ऑर्डर दिया। बिना शंकित हुए, मैंने उसे तीन बार देखा, परंतु एक दिन, वह मेरे जीवन के बारे में, मेरे बचपन के बारे में, मेरे माता-पिता के बारे में बातें करने लगी। मैंने उत्तर दिया—'मैडम, मेरे माता-पिता दुरात्मा थे जिन्होंने मुझे त्याग दिया।' इसपर उसने अपना हाथ दिल पर रखा और बेहोश होकर गिर गई। मैंने तुरंत विचार किया—'यही मेरी माँ है!' परंतु अपना शक जाहिर न करने के लिए मैं सावधान था। मैं चाहता था कि वह आती-जाती रहे।

''इस तरह अपनी बारी में मैंने पूछताछ की। मुझे पता चला कि उनका विवाह अभी गत जुलाई में हुआ था, मेरी माँ केवल तीन वर्षों तक विधवा रही थी। काफी अफवाहें थीं कि पहले पति के जीवनकाल में ये दोनों प्रेमी थे, परंतु कोई सबूत सामने नहीं आ रहा था। मैं ही सबूत था जिसको पहले छिपाए रखा और अंत में नष्ट करने की आशा किए बैठे रहे।

''मैंने प्रतीक्षा की। वह सायंकाल आई, हमेशा की तरह मेरे पिता के साथ। उस दिन वह अत्यंत उत्तेजित प्रतीत हो रही थी, मैं नहीं जानता क्यों? फिर जब वह जा रही थी, उसने मुझसे कहा, 'तुम्हें मेरी शुभकामनाएँ, क्योंकि मेरा

विश्वास है कि तुम निष्कपट लड़के हो और अच्छे कारीगर। इसमें शक नहीं कि तुम एक दिन विवाह के लिए सोचोगे—मैं तुम्हारे लिए यह संभव बनाने के लिए आई हूँ कि तुम स्वतंत्रता से अपनी पसंद की लड़की चुन लो। मैंने पहली बार अपने दिल की इच्छाओं के विरुद्ध विवाह किया था। इसलिए जानती हूँ कि इससे कितना कष्ट होता है। अब मैं अमीर हूँ, बिना बच्चे के, स्वतंत्र अपनी संपत्ति की मालिक। यह है तुम्हारे विवाह का अंश।

''उसने एक बड़ा लिफाफा मुझे थमा दिया।

''मैंने आँखें जमाते हुए उसको घूरा, फिर पूछा—क्या तुम मेरी माँ हो?''

''वह तीन कदम पीछे हट गई और अपनी आँखों को हाथों से ढाँप लिया ताकि वह मुझे और न देख सके। उस आदमी—मेरे पिता—ने उसे अपनी बाँहों का सहारा दिया और मुझपर चिल्लाया—'तुम पागल हो।'

'' 'नहीं, बिलकुल नहीं।' मैंने उत्तर दिया, 'मैं भली-भाँति जानता हूँ कि आप लोग मेरे माता-पिता हैं। मुझे आसानी से धोखा नहीं दिया जा सकता। इसको मान लें और मैं आपका भेद बनाए रखूँगा, किसी प्रकार की ईर्ष्या नहीं करूँगा। मैं आज जो कुछ हूँ, वही रहूँगा—बढ़ई।'

''वह अभी भी अपनी पत्नी को सहारा देते हुए दरवाजे की तरफ मुड़ा, उसने सिसकियाँ भरनी शुरू कर दी थीं। मैंने दौड़कर दरवाजे में ताला लगा दिया और चाबी अपनी जेब में रख ली तथा कहना जारी रखा—'मेरी तरफ देखो और फिर इनकार करो कि वह मेरी माँ नहीं है।'

''इसपर उसने आत्म-नियंत्रण खो दिया और अधिक पीला पड़ गया, इस विचार से भयभीत होकर कि जिस कलंक को अब तक छिपाए रखा वह अब एकाएक सामने आ जाएगा, उनकी स्थिति, उनकी ख्याति, उनका मान —एक ही झटके में समाप्त हो जाएँगे।

'' 'तुम नीच हो, ' वह चिल्लाया—'तुम हमसे पैसा हथियाना चाहते हो। लोग फिर भी कहते हैं कि साधारण आदमियों से अच्छा व्यवहार करो, आपत्तिकाल में उनकी सहायता करो, मूर्ख आदमी।'

''मेरी माँ व्याकुलता से बार-बार दोहराती रही—

'' 'आओ चलें, आओ चलें!'

''तब क्योंकि दरवाजे पर ताला लगा था, वह चिल्लाया—

'' 'यदि तुम तुरंत दरवाजा नहीं खोलते तो मैं तुम्हें भयादोहन और आक्रमण के अभियोग में कैद करवा दूँगा!'

''मैंने आत्म-नियंत्रण बनाए रखा और दरवाजा खोल दिया, फिर उनको अँधेरे में अदृश्य होते देखा।

''उस समय मैंने अचानक ऐसा महसूस किया कि मैं अभी-अभी अनाथ हो गया था, त्याग दिया गया था और गंदे नाले में फेंक दिया गया था। गुस्से, घृणा और निराशा से भरी भयानक उदासी ने मुझे घेर लिया था। मैंने अपने सारे शरीर में भावनाओं का सूजा हुआ जमघट, न्याय की उभरती लहर, सचाई, मान, तिरस्कृत प्यार को अनुभव किया। मैंने उनको पकड़ने के लिए सीन नदी के किनारे की तरफ दौड़ना शुरू कर दिया क्योंकि चेटोन स्टेशन पर पहुँचने के लिए वे वही रास्ता अपनाया करते थे।

''मैंने बहुत पहले ही उन्हें पकड़ लिया। रात गहरी अँधेरी हो गई थी। मैं घास पर चुपके-चुपके दौड़ने लगा ताकि वे मेरी आहट न सुन सकें। मेरी माँ अभी भी रो रही थी, मेरा पिता कह रहा था, '' 'यह तुम्हारी अपनी गलती है, उससे मिलने के लिए क्यों जोर देती थी? हमारा यह पागलपन था। हम बिना उसे बताए चोरी-चोरी उसपर दया दिखा सकते थे, यह देखते हुए कि हम उसे पहचान नहीं सकते, इस प्रकार के भययुक्त भेदों का क्या लाभ था?'

''फिर मैंने अपने आपको उनके रास्ते में गिरा दिया, प्रार्थी की तरह।

'' 'स्पष्ट रूप से आप मेरे माता-पिता हैं, ' मैं हकलाया—'तुम एक बार मेरा बहिष्कार कर चुके हो, क्या दोबारा

मुझे स्वीकार नहीं करोगे?'

''इस पर, न्यायाधीश महोदय, उसने मेरी तरफ हाथ उठाया। मैं अपने मान, अपने कानून तथा अपनी सरकार की कसम खाकर कहता हूँ—उसने मुझे चोट पहुँचाई और मैंने उसे कोट के कॉलर से दबोचा। उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली। मैंने लाल रंग देखा, मुझे मालूम नहीं कि मैंने क्या किया। मेरी जेब में केलीपर थे, मैंने उन्हें घुसा दिया अपनी सारी शक्ति के साथ।

''फिर औरत शोर मचाने लगी—'सहायता, हत्या' और मेरी दाढ़ी नोचने लगी। जाहिर है कि मैंने उसे भी मार डाला। मैं कैसे जान सकता हूँ कि उस क्षण मैंने क्या किया?

''जब मैंने दोनों को भूमि पर लेटे देखा, मैंने बिना सोचे, उनको सीन नदी में फेंक दिया।

''बस, इतना ही, अब मेरा न्याय कीजिए।''

अभियुक्त पुन: बैठ गया। इस रहस्योद्घाटन के पश्चात् अभियोग को अगले सत्र तक मुल्तवी कर दिया गया। यह जल्दी ही दोबारा सामने आएगा। यदि आप और मैं, जूरी होते तो इस पितृहत्या के मामले में क्या करते?

❑

विल्ली नृत्य

—जोहन मेलऐथ (हंगरी)

अभिमानी वेरन वोन ल्योवंसटन के अपने किले की मुँड़ेर पर खड़ा उस सड़क की ओर कुटिल दृष्टि से देख रहा था जो टेनसिन की ओर जाकर वाग नदी के साथ-साथ घनी बसी हुई समतल भूमि को जाती थी। जैसे ही उसने सुंदर, पतली-दुर्बल आकृतिवाले युवा आदमी को अपने किले के द्वार से फौजी घोड़े पर सवार और फिर सरपट दौड़ते देखा तो भद्दी तरह जोर से हँसा और अपने प्रधान सेवकों में से एक को अपनी बेटी एमेलका को बुला लाने को कहा।

काले आकाश में चमकते सितारे की तरह सुंदर वह अपने पिता के कमरे में आई। वह उसे किले की संगमरमर की प्राचीर पर ले गया और पूछा, ''क्या तुम सरपट जा रहे उस घुड़सवार को जानती हो? पहचानती हो उसे?''

अपने भय को छिपाते हुए उसने उत्तर दिया—''हाँ पिताजी! यह आपका सेवक ग्युला है।''

''तुम उसे पुनः नहीं देखोगी।'' वह उदासीनता से चिल्लाया।

वह अचेत हो गई और नीची दीवार पर गिर जाती, यदि उसको पिता का शक्तिशाली बाजू नहीं थामता। बेटी को कमरे में औरतों की देख-रेख में छोड़ दिया। इस बीच ग्युला बेखौफ अपने गंतव्य पोस्टेनी में टेम्पलर होस्पीटियम की ओर चलता रहा। वह मठधारी के लिए पत्र ले जा रहा था जिसे गुप्त रूप से देने के लिए आदेश दिया गया था। उसने वेरन के भरोसे को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किया था। इस गुप्त काम को करने के लिए उसकी नियुक्ति उसी भरोसे का प्रमाण थी। कौन जानता है कि उसके मन में कैसे-कैसे मधुर विचार आ रहे थे क्योंकि वह एमेलका को प्यार करता था और वह भी उससे प्यार करती थी।

❑

संध्या समय ग्युला मठ के पास जंगल में ठहर गया ताकि थोड़ा अँधेरा हो जाने पर मठधारी के पास जा सके। यह मई महीने का सबसे प्यारा दिन था। शानदार बैंगनी-लाल सूर्यास्त, आकाश का गहरा नीला रंग, बुलबुल का आश्चर्यपूर्ण गान, फूलों की मधुर सुगंध—सबने उसका दिल इतना प्रफुल्लित कर दिया कि वह संसार को अपनी छाती से लगा सकता था, परंतु दूर बजते घंटे, आकाश में उभरते सितारे और जंगल में बढ़ते सन्नाटे ने याद दिलाया कि अब चलने का समय आ गया है। जैसे-जैसे वह बढ़ता गया विश्व की पवित्र आकृति को अनुभव किया।

एकाएक वह मठ पर आ गया। वह मौन, गंभीर और उदासीन खड़ा था। जैसे वेरन ने आदेश दिया था, इसने संकेत दिया और भारी दरवाजा चुपचाप अपने कब्जों पर पीछे को झुक गया। एक आवाज ने पूछा —''मठाधिकारी?''

''नहीं, वेरन वोन ल्योवंसटन से मठधारी के लिए।''

''अंदर आ जाओ और मेरे पीछे चलो।''

वे तंग ऊँचे रास्ते से होते हुए सीढ़ी पर चढ़े और दरवाजे के सामने खड़े हो गए, जिसको सेवक ने तीन बार खटखटाया। शीघ्र ही, परंतु धीमी आवाज ने उत्तर दिया—''मैं अकेला हूँ।'' सेवक ने द्वार की ओर संकेत किया और सीढ़ियों के नीचे लुप्त हो गया। ग्युला अंदर गया।

ऊँची और नक्काशी की गई बड़ी कुरसी पर मठधारी निश्चल बैठा था। मोमबत्ती से मद्धिम रोशनी आ रही थी। ज्यों ही वह रोशनी के घेरे में आया तो बूढ़ा मठधारी उसकी आकृति को पहचान पाया। उसने मुँह और भौंहों पर इस तरह हाथ फेरा, मानो कोई भूली बात याद करना चाहता हो। उसने मोहर को तोड़ा और वृत्तांत को चुपचाप पढ़ने

लगा। जैसे ही उसने पढ़ा उसकी दृष्टि की गंभीरता और बढ़ गई, ऐसा लगता था कि उसकी आँखें पत्र से बँध गई थीं।

''तुम्हारा नाम?'' मठधारी ने धीमे से पूछा।

''ग्युला फरगई।''

''और तुम्हारे पिता का नाम?''

''गईसा फरगई।''

''माता?''

''सोस लोरंडी, परंतु दोनों मर गए हैं।''

''तुम्हारी अंगुली में यह अँगूठी?''

''मेरी माँ का अंतिम उपहार।''

कोमल लाल रंग मठधारी के पीले चेहरे पर उभर आया।

''मेरे पूर्व-अधिकारी को यहाँ से एकाएक जाना पड़ा और वह वेरन को अपने प्रस्थान की बाबत बताना भूल गया। यह पत्र उससे संबद्ध है।'' उसने ग्युला को कुरसी पर बैठने का संकेत किया, ''वह लिखता है—'मृत्यु को प्राप्त हो यह पत्रवाहक, मृत्यु को; यह नीच कुल का होते हुए भी मेरी बेटी से प्रेम करने का साहस करता है। मृत्यु गुप्त ढंग से हो ताकि फिर कभी इसका मुँह न देख सकूँ।'''

''क्या प्रेम कुल के अभिमान का ध्यान रखता है?'' युवक चिल्लाया।

''शांत, '' मठधारी ने हुक्म दिया—''मुझे अपने श्रेष्ठ की आज्ञा का पालन करना है।'' जबकि ग्युला हक्का-बक्का होकर उछल पड़ा, मठधारी कहता रहा—''परंतु वेरन जिस बात की आज्ञा देता है, मैं तुम्हें वह क्षति नहीं दे सकता; इस बात की शपथ लो कि जो बात मैं तुम्हें कहने जा रहा हूँ उसकी बाबत तुम चुप रहोगे!'' युवा दया से प्रेरित हो गया और आभारपूर्वक वृद्ध आदमी का हाथ अपने हाथ में ले लिया, परंतु वह कहता रहा—

''तुम यहाँ से तुरंत चले जाओ। यह पत्र करोशिया में हमारे मालिक के लिए है। किसी दूसरे व्यक्ति को इसे ले जाना था, परंतु अब तुम वाहक बनोगे। इसको पढ़ो। मालिक तुम्हें हमारी सेना में भरती कर लेगा। अपना ध्यान और परमात्मा पर भरोसा रखो और जरूरत पड़े तो मेरे पास आना।''

''परंतु मुझपर इतनी दया और कृपा किसलिए की, श्रीमान्?''

''तुम मेरे दिल को बहुत पुराने समय में ले गए हो। मेरा दिल तुम्हारी ओर खिंच गया है और तुम वे बातें सुनोगे जो आज तक मेरे होंठों से नहीं निकलीं। तुम अपने जीवन के लिए अपनी मधुर माँ के कर्जदार हो। मैं अपने युवा दिल की गहराई से उसे प्यार करता था। मैं अब भी तूफान भरे सागर में मार्गदर्शक स्तंभ की तरह उससे प्यार करता हूँ; मैं उसे—लड़की को—उसके पिता के किले में प्राय: मिला करता था। काश! तुम्हारा पिता भी उसे वहाँ मिलता और मेरी तरह ही प्यार करता! प्यार को कौन रोक सकता है? अपने दिल के सारे दुखड़े तुम्हें बताऊँ? मैं अनिश्चय को सहन नहीं कर सका, अत: मैंने अपने भाग्य को दाँव पर लगा दिया। मैं अपना प्यार घोषित करने के लिए घोड़े पर सवार होकर उसके पिता के किले में गया। वहाँ तुम्हारे पिता के अंगरक्षकों में से एक को मिला जिसने मुझे जल्दी करने के लिए कहा ताकि सुसे की सगाई पर समय से पहुँच जाऊँ। मैंने अपना घोड़ा मोड़ लिया और उस आदमी को, तुम्हारी माँ के लिए उपहार में यह अँगूठी दी जो अब तुम पहने हुए हो; फिर मैं सरपट लौट आया। मैं वकालत पढ़ने लगा। वह कुछ समय तक विवाहित रही। मेरे अपने संकल्प थे। जब एक दिन एक श्रेष्ठ पुरुष आकर हमारे मठ में ठहरा और उसने लंबा भाषण दिया तो मैंने उसकी अवहेलना की। फिर तुम्हारी माँ का नाम मेरे

कानों तक पहुँचा और उससे पता चला कि तमाम खुशियाँ भी उसके चेहरे पर मुसकराहट न ला सकीं और हर तरफ बात फैल गई कि वह किसी दूसरे आदमी को प्यार करती है और उसका विवाह जबरदस्ती किया गया था। इन बातों से मैं उन्मत्त हो गया और मृत्यु के लिए दूर पूरब में धर्मयुद्ध में शामिल हो गया। देखो, मूल्यवान समय बीत रहा है, तुम्हें चले जाना चाहिए।''

युवक ग्युला ने बूढ़े आदमी का आलिंगन किया। मठधारी ने सेवक के लिए घंटी बजाई और लड़खड़ाते कदम भरता चला गया। उसने शोकपूर्ण ल्योवंसटन के रास्ते से घोड़े का मुँह मोड़ा, दु:ख के साथ नवीन जीवन के लिए चल दिया।

❑

ल्योवंसटन के किले में खामोशी छाई हुई थी। कठिनाई से एमेलका अपने बेहोशी के दौरे से उबर पाई थी। तभी संदेशवाहक मठधारी से सूचना लेकर आया—'ल्योवंसटन का सेवक घर लौटते समय पुल से गिरकर वाग नदी में बह गया है।'

एमेलका अब गंभीर बीमारी से ग्रसित हो गई। वेरन भी दु:खी हो गया क्योंकि वह उसकी एकमात्र संतान थी। एक विद्वान् भिक्षु को अंदर बुलाया गया। वह भले ही बीमारी को बढ़ने से रोक पाया, परंतु उसकी जड़ तक नहीं पहुँच सका। वह दिन-प्रतिदिन दुबली होती चली गई। वेरन शिकार के लिए जाता और कई दिनों तक बाहर ही रहता। वह टेमरवेना किले में रह रहे श्रेष्ठ व्यक्ति अपने भाई से भी प्राय: मिलता और गंभीर धंधे की बाबत विचार-विमर्श करता था। किले में इन एकांत के दिनों में एमेलका दिवान पर आराम करती थी और उसकी सेविका गुँज उसको कहानियाँ सुनाती—प्राचीन हंगरी निवासियों की प्रथम परिभ्रमण की कहानियाँ, निरंतर प्रेम की प्रसन्नता की कहानियाँ, झूठी गवाही के दंड से असंभव बचाव की कहानियाँ और जीवन में बिछुड़े हुए प्रेमियों की अंत में दूसरी दुनिया में मिलने की कहानियाँ! वह विशेषकर विल्ली की कथा में रुचि लेती थी जिसको बूढ़ी औरतें प्राय: इस प्रकार सुनाया करती थीं—''विल्ली, मेरी प्यारी विल्ली, उस लड़की का नाम है जो दुलहन बनते ही मर गई। विल्ली लोग, बिना आराम के देश में घूमते थे और चौराहों पर नाचते थे। यदि कोई व्यक्ति उनको वहाँ मिल जाता तो उसको नाच-नचाकर मार देतीं। तब वह सबसे छोटी लड़की का दूल्हा बन जाता और इस प्रकार लड़की को शांति मिल जाती! ऐसी ही मेरी बहन है। आह, मैंने उसे प्राय: चाँदनी में देखा है।'' और फिर उसने उसके दु:ख का हृदय-विदारक वृत्तांत सुनाया और विनीत लड़की के प्रेम और उसके अंत की कहानी सुनाई।

❑

सरदी बीत चुकी थी, वसंत ऋतु का आगमन हो चुका था, जब एमेलका के पिता ने उसको बताया कि टेमरवेनी का लॉर्ड उसका होने वाला दूल्हा है। वह वेरन की हठी इच्छा को जानती थी। इसलिए चुपके से वहाँ से चली गई। ल्योवंसटन के मालिक ने संतुष्ट होकर अपनी और अपने दामाद की भूमि को इस विचार से खुश होकर देखा कि वह अब सारे क्षेत्र में आजादी से शिकार कर सकेगा।

परंतु एमेलका ने अपनी निराशा में परमात्मा से प्रार्थना की कि वह उसे अपने पास बुला ले। वह उस दिन से दुबली-पतली होती चली गई और अंत में मर गई। ''पिता, ग्युला को मुझसे दूर भेजने के लिए मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ।'' उसके ये अंतिम शब्द थे। कठोर हृदयी वेरन ने अपनी रगों में रक्त को जमते महसूस किया। वह उसके कफन को जंगल में एक गुफा में ले गया और वहाँ उसे दफना दिया। उसी समय से बिना एक भी शब्द बोले वह वहीं रहने लगा।

जो घटना ल्योवंसटन में घटी थी, वह शीघ्र ही क्रोशिया में ग्युला के कानों तक पहुँच गई। वह तुरंत, यह कहता

हुआ, घर की यात्रा पर चल दिया—''यदि वेरन अपने साथ मुझे उसकी कब्र की रखवाली नहीं करने देगा तो वह मुझे मार डालेगा; उस हालत में मुझे कम-से-कम उसी भूमि में अपनी प्रेमिका के पास रहने का अवसर तो मिल जाएगा।''

जब ग्युला ल्योवंसटन के जंगल में पहुँचा तो काफी रात हो चुकी थी। जुगनू नाच रहे थे और पवन वृक्षों से कानाफूसी कर रही थी, चाँद उदय हो चुका था; और ज्यों ही बारह बजे, उसने अपने आपको विल्ली लोगों के चौराहे पर पाया। उनकी आवाजें निश्चलता में धीरे-धीरे तैरीं; नर्तकियाँ जल्दी और तेजी से घूमीं, उनके लंबे बाल चाँदनी की किरणों में लहराए; फिर उनमें से एक आगे बढ़ी और उसको बाजू से पकड़ा। ''एमेलका!'' उसने पुकारा। इसने उसकी आँखों में देखा और इसकी दृष्टि जम गई; उसने इसको अपनी छाती से लगा लिया और निश्चल खड़ी हो गई। उसने इसको चूमा और वह मर गया।

प्रात:काल ज्यों ही वेरन उतरकर घाटी में आया तो उसने शव को देखा और पहचान लिया कि यह उसके भूतपूर्व सेवक का है। ''ओह, प्रभु, मेरे पापों को क्षमा करना।'' उसने आकाश की ओर अपनी आँखें उठाते हुए कहा और मृतक युवक को अपनी पीठ पर उठाकर गुफा में ले आया और अपनी बेटी की बगल में दफना दिया।

इसके बाद सेवक और उसकी बेटी भोर के तारे की तरह चमकते, उसके स्वप्नों में आते और क्षमा करते हुए तथा सांत्वना देते हुए उसकी ओर देखते थे!

❑

शुक्र की खोज

—आरपाड बरजिक (हंगरी)

एक दिन पस्थ की सड़क पर बिना किसी विशेष प्रयोजन के टहलते हुए मैंने एकाएक अपने आपको दो छोटे सुंदर पैरों के पीछे पाया। मैं अपने आपको जन्मजात सौंदर्यशास्त्री मानता हूँ; और चूँकि नन्हें पैरों की एक जोड़ी में इतना सौंदर्य था कि परमात्मा ही जानता है कि कितनी विद्वत्तापूर्ण पुस्तकों में उसका वर्णन है तथा चूँकि मैं केवल जीवित वस्तुओं पर ही सौंदर्य की कला का अन्वेषण करता हूँ। इसलिए इस सौंदर्य की जोड़ी के पीछे शीघ्रता से जाने के अतिरिक्त मेरे पास कोई विकल्प नहीं था—मेरा अभिप्राय उस बहुमूल्य टखनों की जोड़ी से है।

ये टखने अविश्वसनीय कुदान की चाल से चलते एवं तैरते जा रहे थे और मैं भी उतनी ही शीघ्रता से उनका पीछा कर रहा था। दुर्भाग्य से जब मैंने एक कोने पर मोड़ लिया तो पुराने फेरीवाले की पत्नी के सामान के बीचोबीच टकराया। मेरे शक्तिशाली शरीर ने उसका आधा सामान नष्ट कर दिया; उसकी गालियों और क्रोध की सीमा न रही। वह शीघ्र ही खड़ी हो गई और मेरे पीछे पड़ गई; केवल एक नोट उसकी ओर फेंकने की मेरी दक्षता ने मुझे उसके चंगुल से बचा लिया। मेरा विचार है कि वह नोट नीले रंग का था—दस फ्लोरिन या कहो एक पाउंड का।

इस मलहम ने उसका घाव भर दिया और मुझे मेरे उद्यम के लिए छोड़ दिया। व्याकुलता में मैंने अपने आगेवाले कदमों को सावधानी से देखा (मेरा अभिप्राय पुराने फेरीवाले की पत्नी से नहीं अर्थात् उनके कदमों से है)। अंत में वे मुझे पुन: मिल गए—ओह, कितना परम सुख प्राप्त हुआ मुझे उस क्षण! उस सुंदर पैरोंवाली ने अपना सिर घुमाया और मुझे देखा। वह घोड़ा-गाड़ियों के अड्डे की ओर गई—तनिक रुकी—फिर उसका पैर गाड़ी के अंदर गया। मैंने भी वैसा ही किया। वह गाड़ी में चली गई। मैंने उसका पीछा किया।

इस प्रसन्नचित्त सवारी के लिए अतिरिक्त गति और अतिरिक्त खर्च के साथ मुझे पाँच फ्लोरिन देने पड़े।

मेरे विचारानुसार हमारे चालक दौड़ लगा रहे थे क्योंकि उनकी गति भयंकर थी। उसने अपनी गाड़ी एक प्रसिद्ध दुकान के सामने रोक दी। मैंने भी वही किया। वह गाड़ी से उतरकर दुकान के अंदर गई। क्या मुझे बताना होगा कि मैंने भी उसका ध्यानपूर्वक अनुसरण किया? इस बार हमारे कार्य साथ-साथ हुए।

दुकान में उसकी दृष्टि मुझपर पड़ी और उसने मुझे सिर से पैर तक सूक्ष्म रूप से नापा। अंतत: जिस बात का संदेह अब तक था, वह दूर हो गया—उसका चेहरा उसके पाँव से सुंदर था, उसकी आँखें उसके चेहरे से सुंदर थीं जबकि उसकी आकृति इन सबको मात कर रही थी।

दुकानदार ने मुझे हैरानी से देखा और पूछा, ''मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ, श्रीमान्?''

मैं हिचकिचाया—''क्या तुम मुझे...?''

''कृपया सिल्क दिखाएँगे?'' चाँदी की घंटी जैसी आवाज मेरे निकट गूँजी। आवाज इतनी दिव्य थी कि मेरे अंदर बिजली कौंध गई और मैंने विचार किया कि क्रिसमस के दिनों में देवदूत ऐसे ही गाते होंगे। मैंने उसी लय में दोहराया—''कृपया मुझे सिल्क दिखाइए।''

''रंग कौन सा?''

स्पष्ट रूप से काला। उसकी आँखों और बालों का रंग काला नहीं था क्या? अत: 'काला' मैंने उत्तर दिया।

सुंदर अजनबी ने एक बार मेरी ओर ध्यान देने का पुन: प्रयत्न किया और उसके चंचल चेहरे पर मुसकान फैल गई। ओह, इसका कारण मुझसे मत पूछो। मैं स्वयं चकित था कि पृथ्वी पर ऐसा चित्र फिर कब देख पाऊँगा —'सिल्क में सूक्ष्म अन्वेषण करता हुआ जीवित शुक्र।'

वह दुकानदार, हाँ, वह भयानक जंगली! प्रश्नों से मुझे किस प्रकार दु:ख दे रहा था। क्या वह प्रश्न करना बंद करेगा? मैं उसके सामान की क्या परवाह करता हूँ कि वह मुझे क्या और कितना बेचता है। यदि वह अपनी बकवास बंद करे तो सौदेबाजी करती अपनी देवी को बिना किसी रुकावट देखने का अवसर मुझे मिले। क्या वह कभी नहीं समझेगा कि उसके कारण ही मैं उसकी दुकान पर आया हूँ? हाँ, केवल उसी के कारण—उसके पैर, उसका सिर, उसकी आकृति...।

अंतत: मुझे शांति मिली; मेरी खरीदारी समाप्त हो गई, परंतु मेरी देवी लगी रही। सौदेबाजी चलती रही, परंतु यह शाईलॉक दुकानदार का राक्षसपन अपनी कीमतों पर जोंक की तरह चिपटा रहा; क्यों—वह घुटने टेककर, हाथ जोड़कर, कीमतें गिराकर अपनी सारी-की-सारी दुकान क्यों बेचे; देखो, अपनी उत्साहहीन रसीदों में किस प्रकार वह एक पाउंड मांस ले रहा है। जैसे-जैसे यह दृश्य चल रहा है, मेरी पोटलियों का ढेर बढ़ता जाता है क्योंकि अपना मंच शुक्र के निकट रखने के लिए ही मैंने अधिक खरीदारी की थी और वह अभी तक कीमतों के बारे में ही वाद-विवाद कर रही थी।

और जब वह धीरे से बाहर निकली, मेरी चीजों से गाड़ी भर चुकी थी और बहुत पोटलियाँ पीछे छूट गई थीं।

उसकी गाड़ी गतिमान हो गई और उद्यम नए सिरे से शुरू हो गया। मेरा गाड़ीवान एकाएक रुक गया। यह कैसी घटना थी? क्या कुत्ता नीचे आ गया था? तुम्हारा भला हो, भाई, हम इसके लिए रुकते नहीं! काश! बहुत देर हो गई; एक बूढ़ी औरत और उसका संकर जाति का कुत्ता दोनों सुप्रतिष्ठित थे; हमें घेर लिया गया। मैंने भयभीत होकर शव को और व्याकुल होकर अपने शुक्र के रथ को दूर गायब होते देखा; समय व्यर्थ गँवाने के लिए था। इसलिए मैंने शीघ्र ही मुट्ठी भर सिक्के भीड़ में फेंके—हलचल मच गई और हम पुन: चल दिए। ज्यों ही हम मिले, मेरी रानी अपनी गाड़ी से उतरी और मुझे प्रतीक्षा करने के लिए छोड़कर एक भवन में चली गई। एक पाउंड और खर्च हो गया। वह किसी से मिलने गई होगी क्योंकि उसकी गाड़ी अभी वहीं खड़ी थी—पंद्रह मिनट बीत गए—कितनी अविवेकी है यह औरत! उस भाग्यशाली भवन, जिसमें मेरी देवी थी, के सामने एक चाय की दुकान थी; दुकान की नौकरानी मेरे सामान से भरी गाड़ी को देखकर मुझे आकर्षित करते हुए हँसी से लोटपोट हो रही थी। सरदी के कारण ऐंठे हुए अपने अवयवों को ढीला करने तथा समय बिताने के लिए मैं चाय की दुकान में चला गया। मैंने प्रसन्नतापूर्वक विचार किया कि नौकरानियाँ मेरे बिना देखे खरीदी गई शोभायमान चीजों को पसंद करेंगी। मैंने उनको उन्हें दे दिया। ज्यों ही चीजों को गाड़ी से उतारा जा रहा था, मेरा शुक्र प्रकट हो गया और मेरी ओर अपनी घृणा और तिरस्कार को बुरी तरह फेंकता हुआ गाड़ी में चला गया...।

अगले दिन मुझे आश्चर्यजनक सूचना मिली। मेरा सेवक उसकी नौकरानी से प्रेम करता था और वह मुझे हर वह बात बता सकता था जो मैं जानना चाहता था। बीस शिलिंग देकर मैंने सूचना खरीद ली कि मेरी देवी विधवा है और उसका नाम जानने के लिए, मैंने प्रसन्नता से उसके वेतन में वृद्धि कर दी। ऐसे अवसर पर वह अपनी प्रेमिका को भूल न सका। उसको इनाम देने के लिए इसने थोड़े उधार के लिए भी याचना की और वह भी उसे दे दिया गया।

इससे अधिक सफलता मुझे नहीं मिली। हमें परिचित करवाने के लिए कोई भी मित्र प्रकट नहीं हुआ। जिस किसी को वह जानती थी, मेरा बटुआ उसकी ओर नहीं गया हालाँकि मैं बीस पाउंड व्यर्थ खर्च कर चुका था। प्रत्यक्ष रूप से मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया और मैं पतला एवं चिंताग्रस्त हो गया।

''हुजूर, '' मेरे सेवक ने जो प्रत्यक्ष रूप से मेरी हालत जानता था, एक दिन मुझसे कहने लगा—''यदि, श्रीमान्, आज्ञा दें तो मैं कुछ कहूँ और थोड़ा इनाम दें तो आपकी माननीय महिला से आपके परिचय का प्रबंध करूँ?''

मेरा हृदय आनंदित हो गया, परंतु मैंने जाहिर होने नहीं दिया और उसे चुप रहने के लिए कठोरता से कहा। हो

सकता है, यह कोई तरीका जानता हो? परंतु नहीं, मैं जान-पहचानवाले नौकरों को मुँह नहीं लगाता।

''हुजूर, '' उसने पुन: कहना शुरू किया—''मैं जान-पहचान बढ़ाना नहीं चाहता, परंतु आपको दु:खी होते भी नहीं देख सकता। आपका कोई-न-कोई कपड़ा छोटा करवाने के लिए प्रतिदिन दरजी के पास जाना पड़ता है। आखिर यह कहीं समाप्त भी होगा। मैं सायं की सेवा नहीं कर सकता।''

इससे मेरा निर्णय हो गया। ''हाँ, मेरे आज्ञाकारी जेकसी, '' मैंने कहा, ''मैं सहमत हूँ, तुम अपना प्रयास कर सकते हो और जिस दिन मेरी माननीय महिला मुझे मिलेगी उसी दिन दस पाउंड तुम्हें मिल जाएँगे।''

तीन दिन बाद जेकसी ने निम्नलिखित पत्र दिया—

''प्यारे महोदय,

आज दोपहर साढ़े बारह बजे घर पर रहने से मुझे प्रसन्नता होगी।

तुम्हारी भवदीया

विडो वोन सूजानफैलवे।''

कैसी प्रसन्नता, कैसी शांति—मैं आनंदित हो अपनी कुरसी से कूद पड़ा और अपने सेवक का आलिंगन सा किया; यह जादूगर, यह कूटनीति से परिपूर्ण!

''अरे, भले आदमी, यह सब कैसे किया?''

''हुजूर, मुझे क्षमा करें। मैं अत्यंत सावधान रहना चाहता हूँ; यदि हजूर समय पर उपस्थित हो जाएँ तो सब ठीक हो जाएगा।'' उसी समय दस पाउंड उसके हाथों में चले गए। निर्मल कपड़े पहनाने में मेरी सहायता करते हुए उसने बताया कि उसकी प्रेमिका जुकजी, हमारी विश्वस्त रूप से जोड़नेवाली बाकी सबकुछ कर लेगी; और उसने आगे कहा कि उसने जीवन में उसे इतना उत्तेजित कभी नहीं देखा था; और मैं उससे पूर्णतया सहमत था। अंतत: मैं तैयार हो गया और ठीक बारह बजकर तीस मिनट पर विडो वोन सूजानफैलवे के मकान की घंटी बजा दी।

जुकजी ने दरवाजा खोला। वह उत्तेजित सी जान पड़ी, परंतु मुझे देखकर प्रसन्न हुई।

''कृपया अंदर आ जाएँ, मेरी मालकिन आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।'' उसने मेरे कान में कहा और एक और बैंक नोट की शांत चित्त से अदला-बदली हो गई।

मैंने विचार किया कि उसकी आँखों में पहली प्रेम प्रभा देखने के लिए यह शोभायमान बैठक कितनी अनुकूल है जहाँ मैं शीघ्र ही अपनी प्रचंड उत्कंठा को स्वीकार करूँगा। आह, वह आ गई—मेरा फरिश्ता, मेरी रानी!

अपने घुटनों पर गिरकर उसके नन्हें पाँवों को चूमने की अपनी पहली प्रवृत्ति को विवेकहीन जानकर, मैंने शीघ्र कहना शुरू कर दिया—

''हजार अपराध क्षमा, मैडम कि..., '' परंतु उसने मुसकराते हुए मुझे टोका और बैठने के लिए प्रार्थना की।

''मुझे प्रसन्नता है कि तुम आ गए, नहीं तो मैं तुम्हें मिलने आती।''

मुझे मिलने? ईश्वर भला करे; यह मैं क्या सुन रहा हूँ। क्या यह संभव था?

''यह मामला वास्तव में हम दोनों के लिए रुचिकर है; यदि मैं कहूँ, हम दोनों इससे संबंध हैं।''

यह मामला—यह इसको मामला कहती है? क्या शांति है?

''तो मैडम, इस मामले के बारे में जानती हैं?'' मैं केवल हकलाया।

''इसके बारे में जानना? क्यों, मैं वास्तव में जानती हूँ। जेकसी से जुकजी को और जुकजी से मुझ तक—इससे सादी बात और क्या हो सकती है?''

उसने पूजाविधि से अपने कंधे झटक दिए; वह दिव्या है, वह मेरी है।

''और मैडम को कोई आपत्ति नहीं?''

''आपत्ति? क्यों, मेरे प्यारे श्रीमान् (पूजाविधि से कंधे पुन: झटकाए) जिनको परस्पर रुचि होती है, उनके लिए प्रेम के रास्ते सदा सीधे एवं साफ चलते हैं। लो अपना हाथ देती हूँ और विवाह के लिए अपनी सहमति देती हूँ।''

''विवाह के लिए?'' क्या मैं ठीक सुन रहा हूँ? मेरी ज्ञानेंद्रियाँ तो ठीक हैं?

''ठीक हैं, हाँ।''

मैं तुरंत अपने घुटनों के बीच दुबक गया और उसके फैले कोमल छोटे हाथ को चुंबनों से ढक दिया—मेरा हाथ!

''हजार अपराध क्षमा, लाखों धन्यवाद, प्यारी महिला।''

उसने डरकर अपना हाथ खींच लिया और कई कदम पीछे हट गई। मैंने महसूस किया कि मेरी उत्कंठा ने उसका मान भंग किया था।

''तुम्हें हो क्या गया है, बोलो?'' वह चिल्लाई।

''ओह, मुझे क्षमा करना, हजार धन्यवाद।'' घुटनों के बल होकर मैंने पुन: कहा।

''मेरी प्रार्थना है कि उठो; यह क्या मजाक है? इसका कारण क्या है?''

''क्यों, तुमने विवाह के लिए मुझे अपना हाथ और सहमति दी है।''

''ह...मा...रा विवाह? तुम मजाक कर रहे हो। मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही।''

''फिर किसका विवाह?'' मैं चीखा।

''जेकसी और जुकजी का—(पूजाविधि से पुन: झटकी) मुझे बताया गया था कि वे विवाह करना चाहते थे और जुकजी अनाथ और मेरी धर्म-पुत्री है; मेरा खयाल था कि अपने सेवक जेकसी के लिए उसका हाथ माँगने के लिए तुम आज आने वाले थे।''

''और तुमने मेरा स्वागत इसीलिए किया, प्यारी महिला!''

''हाँ। मुझे खेद है, मैं स्वयं अगले सप्ताह अपना पुनर्विवाह कर रही हूँ।''

❑

मैंने शुक्र के मकान का दरवाजा हलके से बंद किया, सिगरेट सुलगाई और मौन विचारों में खो गया, साथ ही मामले के उद्यम में खर्च का अनुमान लगाने लगा। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इस खर्च को डालूँ तो किसके खाते में!

❑

प्रथम प्रवृत्ति

—एहसान मुसलिफ बजुर्ग (ईरान)

तूरीरी बगदाद का धनी नागरिक था। वह अपने भले कामों के कारण हर जगह प्रसिद्ध था। वह निर्धनों की केवल इस हद तक सहायता नहीं करता था कि उनके विलासितापूर्ण जीवन की संभावनाएँ कम हों और वे सादा जीवन व्यतीत करें, बल्कि जो भी दुखिया उसके पास आता था, उसकी शिकायतों को उत्कट और विनीत भाव से सुनता, अच्छे शब्दों में सांत्वना देता और हर संभव तरीके से सहायता करता था।

उसने एक हजार एक छोटे-बड़े दु:खों को, जो मानव जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा बनाते हैं, ईश्वरीय इच्छा से सहन किया। वह अति सहनशील था और यह जानकर कभी क्रुरद्ध नहीं हुआ था कि सब लोग एकमत नहीं हैं। चूँकि वह स्वयं कठिन और अतुल्य सदाचारी था और चूँकि प्रत्येक व्यक्ति की हार्दिक इच्छा होती है कि बाकी मानव जाति उससे तुच्छ है, वह चाहता था कि सभी लोग उस जैसे हो जाएँ।

झगड़ालू स्त्री से विवाहित, वह उसके प्रति विश्वसनीय रहा; उसके बुरे स्वभाव को क्षमा करता रहा और उसे कभी महसूस नहीं होने दिया कि वह न तो युवा थी और न ही सुंदर। लेखक और कवि होते हुए वह अपने विरोधियों की सफलता से प्रसन्न होता था और नम्र एवं ईमानदार भावों से उनके प्रति मंगलकामना और मित्रता दिखाता था।

एक वाक्य में कहा जाए तो उसका जीवन पूर्ण करुणा, मधुरता, अनुराग एवं नि:स्वार्थता से भरा था और वह एक ही समय में संत और भद्र पुरुष माना जाता था।

फिर भी उसके चेहरे पर वह स्थिरता नहीं थी जो प्राय: संत लोगों की आकृति का गुण माना जाता है। वह उस आदमी के चेहरे की तरह पंक्तिबद्ध था जिसे तीव्र उत्कंठा ने हिलाकर रख दिया हो अथवा किसी गुप्त मानसिक वेदना ने कष्ट दिया हो। वह प्राय: आँखें झुकाए खड़ा देखा जाता था ताकि वह अपने आपको केंद्रीभूत कर सके अथवा लोगों को अपने विचार जानने से रोक सके, परंतु कोई भी इस ओर ध्यान नहीं देता था।

बगदाद के निकट ही मैत्रया नामक एक चमत्कारी फकीर रहता था जिसके स्थान पर उपासना करने के लिए कई तीर्थयात्री आते थे। मैत्रया अपने आपको सामान्य मानव स्थितियों से ऊपर उठाकर इस अचलता से रहता था कि चिड़ियों ने उसके कंधों पर घोंसले बना लिये थे। पवित्र गायों की दुम की तरह उसकी दाढ़ी अपवित्र थी और उसकी कमर तक पहुँचती थी; उसका शरीर सूखे वृक्ष के तने की तरह था। अपने लक्ष्यानुसार वह नब्बे वर्ष तक जीवित रहा।

एक दिन उसने एक तीर्थयात्री को कहते सुना—

''तूरीरी ओरमुज का अवतार मालूम पड़ता है, वह कितना अच्छा है। यदि ऐसा आदमी जो कुछ वह करना चाहता है, करे तो पृथ्वी से तमाम दु:ख समाप्त हो जाएँ।''

मैत्रया की अचलता और कठोर हो गई। यह प्रत्यक्ष था कि पवित्र आदमी ने अपना ध्यान सीधा ओरमुज से लगा लिया था। कुछ क्षणों तक सोचने के उपरांत उसने तीर्थयात्री से कहा—

''मैं ओरमुज से यह नहीं माँग सकता कि वह तूरीरी को उसकी समस्त इच्छाएँ पूरी करने की शक्ति दे क्योंकि तब वह स्वयं परमात्मा बन जाएगा, परंतु ओरमुज ने अपनी कृपा से आज्ञा दे दी है कि कल से उसके जीवन की समस्त परिस्थितियों में उसकी प्रथम प्रवृत्ति पूरी हो जाएगी।''

''यह तो एक ही बात है!'' तीर्थयात्री ने कहा। तूरीरी की अन्य इच्छाओं की तरह उसकी प्रथम प्रवृत्ति भी उदार और दयालु होगी। पूज्य मैत्रया, तुमने मुझे वह तथ्य बताया है जो बहुत से मनुष्यों की प्रसन्नता का कारण बनेगी

और मैं तुम्हें अपना धन्यवाद देता हूँ।

यदि मैत्रया की दाढ़ी कम घनी होती तो तीर्थयात्री उसके पथरीले होंठों पर मुसकराहट की छाप देख सकता, परंतु फकीर शीघ्र ही अपनी अनंत पूजा के स्वप्न देखने लगा।

उन दयालुतापूर्ण कामों की बाबत, जिनको बुद्धिमान तूरीरी की शक्ति से कल से शुरू करेगा, सोचता हुआ तीर्थयात्री शहर को लौट आया।

अगली प्रातः तूरीरी अपनी पत्नी से पहले जागा और एक क्षण के लिए उसकी ओर देखा। किसी दुर्बोध शक्ति से गतिमान वह एकाएक उठी, खिड़की तक गई, देहली के ऊपर से कूद गई और पैदलपथ के पत्थरों से सिर फोड़ लिया।

घर से जाने के बाद, भिखारियों की भीड़ ने भीख के लिए उसे पुकारा। उसने उन्हें कुछ नहीं कहा और उसका हाथ स्वतः उसकी जेब में गया, परंतु इसके पूर्व कि वह जेब से हाथ निकाले, सारे भिखारी उसके सामने मर गए।

आगे चलकर वह सुंदर मंदानकी से मिला—बुद्धिमान् और नेक तूरीरी—उसके सामने झुका और उसके घर तक उसका पीछा किया। वहाँ जब वह अपने जीवन की कहानी सुना रही थी, वह इसके हाथों में ही मर गई। इसने उसे कोमलता से अपनी छाती से लगा लिया।

मंदानकी का घर छोड़ने के पश्चात् चौराहे पर उसको कई गाड़ियों ने रोक लिया जो भीड़ में फँस गई थी; यह अपना धैर्य खोने लगा। तत्पश्चात् तमाम कोचवान अपनी सीटों से गिर गए और घोड़ों की पेशियाँ कट गईं, जैसे कोई गुप्त दराँती चल गई हो!

सायंकाल वह थिएटर गया; वह विद्वान् सर्वीलाका से एक कविता पर झगड़ पड़ा। सर्वीलाका का मत था कि वह निसमी की लिखी हुई थी जबकि तूरीरी को विश्वास था कि उसे गुलाबों के कवि सादी ने लिखा था। एकाएक विद्वान् सर्वीलाका अपनी सीट पर पीठ के बल गिर गया और काले रक्त का वमन किया। सुखांत नाटक, जो उस रात खेला गया, वह अत्यंत सफल रहा और अभिनेताओं को एकमत से सराहा गया। फिर भी जब तूरीरी नाटककार की श्रेष्ठता को सरहाने जा रहा था, नाटककार ने अप्रत्याशित ढंग से अपनी आत्मा को उसके बनानेवाले के पास भेज दिया।

इस संपूर्ण मनुष्य संहार से भयभीत हुआ तूरीरी घर लौटा और अपने आपको यह जानने में असमर्थ पाकर कि यह सब कैसे हुआ, उसने अपने हृदय में कटार घोंपकर आत्महत्या कर ली।

पवित्र फकीर मैत्रया भी उसी रात इसी प्रकार मर गया।

दोनों एक ही समय बुद्धिमान् ओरमुज के सम्मुख पेश हुए। फकीर सोच रहा था, 'यदि इस झूठे संत को, जिसकी नेकियों की प्रशंसा ने फारस के लोगों को मूर्ख बनाया, दंड मिलता है तो मैं नाराज नहीं होऊँगा, परंतु एक दिन, जो इसे यह दिखाने के लिए दिया गया था कि वह कैसा था, ये अनगिनत पाप और अपराध कैसे कर पाया?'

परंतु बुद्धिमान् ओरमुज ने कहा, ''भला तूरीरी, वास्तव में अच्छा और दयालु व्यक्ति, मेरा आज्ञाकारी और भक्त सेवक अनंत शांति को प्राप्त होता है।''

''यह वास्तव में अच्छा मजेदार मजाक है।'' फकीर ने कहा।

''मैं अपने जीवन में इतना गंभीर कभी नहीं हुआ हूँ।'' ओरमुज ने उत्तर दिया—''तूरीरी, तुमने अपनी पत्नी को इसलिए मिटाना चाहा कि वह दयालु नहीं थी और सुंदर भी नहीं रही थी; और भिखारियों की मृत्यु इसलिए चाही क्योंकि वे दृढ़ाग्रही थे और तुम्हारे लिए कष्टकारी थे; तुम्हारी प्रेमिका मंदानकी मूर्ख थी—कोचवानों और घोड़ों की मृत्यु इसलिए हुई कि उन्होंने तुम्हारा रास्ता रोका, जब तुम जल्दी में थे। तुमने विद्वान् सर्वीलाका की मृत्यु इसलिए

चाही क्योंकि वह तुमसे सहमत नहीं था और सुखांत नाटककार की इसलिए कि उसे तुमसे अधिक सफलता मिली थी। ये समस्त इच्छाएँ पूर्णतया स्वाभाविक थीं। जितनी भी हत्याएँ तुमने कीं और जिनके लिए मैत्रया तुम्हें दोषी मान रहा है, बिना तुम्हारी जानकारी और प्रथम प्रवृत्ति के कारण थीं; प्रथम प्रवृत्ति जिसपर किसी का नियंत्रण नहीं है। व्यक्ति हर उस चीज से घृणा करता है जो उसके लिए रुकावट बनती है और जो रुकावट बनती है, वह उसे मिटा देती है। प्रकृति स्वार्थी है और स्वार्थ का नाम है विनाश! अत्यंत भला आदमी दिल से दुरात्मा बनकर शुरू होता है और यदि उसे प्रथम प्रवृत्ति और अनचाही इच्छा का साक्षात्कार कराया जाए तो मानव जीवन के बिना संसार मरुस्थल बन जाए। तूरीरी यही था जो तुम्हें उदाहरण देकर दिखाना चाहता था। आदमी को उसकी दितीय प्रवृत्ति से जाना जाता है क्योंकि वह उसके संकल्प पर आधारित होती है। बिना दुर्बोध उपहार के, जिसने तुम्हारे श्रेष्ठ दिन को, तुम्हारे न चाहते हुए भी हत्यारा बनाया, तुम्हारा जीवन भलाई और उदारता में व्यतीत होता। यह प्रकृति नहीं बल्कि तुम्हारा संकल्प है जिसको मैं तुम्हारे अंदर देखता हूँ जो सदा अच्छाई के लिए था और तुमने जिसका प्रयोग प्रकृति को ठीक करने में किया और मेरे अधूरे काम को पूरा किया। इसलिए, प्यारे साथी! मैं तुम्हारे लिए आज अपने स्वर्ग के द्वार खोलता हूँ।

''यह उत्तम है।'' मैत्रया ने कहा, ''इस मामले में तुम मेरे लिए क्या करना चाहते हो? मेरे लिए क्या प्रतिफल है?''

''वही कुछ, '' ओरमुज ने उत्तर दिया—''भले ही तुमने इसे अपूर्णता से कमाया है। तुम संत थे, परंतु यदि तुम्हें अहंकार न होता तो केवल मनुष्य से अधिक न होते। तुमने प्रथम प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त कर ली है, परंतु यदि तमाम आदमी तुम्हारी तरह रहें तो पृथ्वी से मानव जाति का इससे भी जल्दी सफाया हो जाएगा जितनी जल्दी दुर्बोध, परंतु सांघातिक शक्ति से एक दिन में हुआ, जिसकी जानकारी मैंने अपने सेवक को दी थी। मैं चाहता हूँ कि मानव जाति चलती रहे क्योंकि इससे मुझे प्रसन्नता होती है और चूँकि जो दृश्य यह प्रस्तावित करती है, वह अत्यंत प्रभावशाली है। दु:खी संन्यासी, तुम्हारे प्रयास एक सुंदरता से बिलकुल शून्य नहीं थे। इसलिए मैं तुम्हारी कठोर गलती को क्षमा करता हूँ। परिणामस्वरूप तूरीरी के लिए मैं स्वर्ग के द्वार खोलता हूँ और उसका अपने हृदय से स्वागत करता हूँ क्योंकि मैं न्यायी हूँ और मैत्रया! मैं तुम्हें प्रवेश की आज्ञा देता हूँ क्योंकि मैं कृपालु हूँ।''

''परंतु...'' मैत्रया ने कहा।

ओरमुज ने अपना कठोर चेहरा उठाया—''मैंने कह दिया, बस।''

❑

मारक शत्रु

—स्वेटोजार चोरोविच (सर्बिया)

हम दोनों इकट्ठे यात्रा कर रहे थे। मेरे पास केवल एक ही घोड़ा था—अच्छा घोड़ा—मैं जानता हूँ कि वह अच्छा घोड़ा था क्योंकि मैं कई बार उससे नीचे गिर चुका था। मैं प्राय: केवल अच्छे घोड़े से ही गिरता हूँ। वह गर्वीली और सरपट चाल चलता था और अपना सिर हवा में ऊँचा रखता था। मेरा साथी अपनी सफेद घोड़ी पर चुपचाप सवार था। चार या पाँच लद्दू घोड़े, जिनपर कोई बोझ नहीं था, पीछे-पीछे आ रहे थे।

वह अच्छा सुडौल आदमी था—लंबा और चौड़े कंधोंवाला, कुछ-कुछ मृतक के समान पीला चेहरा, परंतु वास्कट के सामने कई चमकीले बटनों के साथ उसकी राष्ट्रीय वेशभूषा और सिर पर चमकीली सिल्क का रूमाल बाँधे जिसके किनारे कंधों पर लटककर उसकी छाती तक आते थे और उसे इतना भाते थे कि उनसे अपनी आँखें हटा नहीं सकता था। उससे बात करने से मैं घबराता था क्योंकि जो आनंद मुझे उसके बारे में चुपचाप सोचने में आ रहा था, उसके खंडित होने का डर था।

उसका नाम था—ड्योको म्राओविच।

मैंने उसके बारे में अद्भुत कहानियाँ सुनी थीं; बेजोड़ शूरवीर होने के नाते लोग उसकी बहुत प्रशंसा करते थे और भूतपूर्व डाकू होने के नाते उससे सावधान रहते थे क्योंकि कुछ समय पहले उसने हरजीगोविना के बड़े भाग में आंतक फैलाया था; और इसी कारण उसके प्रति मुझमें अत्यंत रुचि थी।

''तुम इतने लद्दू घोड़े क्यों रखते हो, जब ले जाने के लिए तुम्हारे पास कोई बोझ नहीं है?'' मैंने लंबी चुप्पी के बाद प्रश्न किया ताकि बातचीत शुरू की जा सके।

''मैं अपना बोझ नगर में ले जाता हूँ, जहाँ से लौट रहा हूँ।''

''क्या ले जाते हो तुम?''

''कई प्रकार की चीजें—डबल रोटी, आलू, बंदगोभी।''

''किसके लिए?''

''स्वर्गीय अली मूयागविच के बच्चों के लिए।''

मैं रुक गया और हैरानी से उसको देखा। अली मूयागविच अत्यंत शूरवीर और निर्दयी तुर्क था और उससे अधिक म्राओविच का मारक शत्रु था।

''क्यों, क्या तुमने कोई खलिहान किराए पर लिया है?''

''नहीं, परंतु मैं उनका ऋणी हूँ, बहुत अधिक ऋणी।''

वह चुप हो गया, सिर झुकाया और अपने घोड़े की गरदन पर हाथ मारा, भले ही घोड़ा पहले ही तेज चल रहा था। घोड़ा पीछे हटा और मुड़ा। उसने एक बार फिर हाथ मारा तो वह पुन: सीधा आगे चलने लगा।

यह देखकर मैंने आगे पूछताछ नहीं की और लगामें ढीली कर दीं। मैंने धीमी आवाज में गाना शुरू कर दिया; मुझे अब याद नहीं रहा कि वह गाना किस प्रकार का था।

वह इसे पसंद करता हुआ दिखाई दिया क्योंकि वह अपना घोड़ा मेरे निकट ले आया और ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

''ऊँचे गाओ।''

मैंने अपनी आवाज ऊँची कर दी। गाने पर सिर हिलाते हुए उसने रूमाल को, जो सिर पर बाँध रखा था, अपनी गरदन के पीछे तक खींच लिया।

अंतत: मैं रुक गया।

''और गाओ।''

''मुझे इससे अधिक नहीं आता।''

वह नाराज होकर मुड़ गया, लगाम खींची और जंगल की ओर जानेवाले रास्ते पर चल दिया।

''तुम किधर जा रहे हो?''

''जंगल में, चलो, थोड़ा आराम कर लें।''

मैं उसके पीछे हो लिया। जंगल में पहुँचकर हम घोड़ों से उतरे और उनको चरने के लिए छोड़ दिया; हम एक बड़े बबूल की छाया के नीचे बैठ गए; तंबाकू की अपनी छोटी थैलियाँ निकालीं और पाईप भरे।

घोड़ों की चपर-चपर और काष्ठकूट की चोटों को सुनते हुए चुपचाप बैठे रहे।

''तुम अली के ऋणी कब बने?'' मैंने चुप्पी तोड़ी और बातचीत करने के लिए प्रश्न किया।

ड्योको ने त्योरी चढ़ाकर और हाथ हिलाकर उत्तर दिया—''बहुत समय पहले।''

''और क्या तुमने पहले ही ऋण उतार दिया?''

''ओह, नहीं, मुझे उसे उतारने में काफी समय लगेगा।''

धुएँ के दो-तीन छल्ले निकालने के बाद, उसने मेरी ओर एक क्षण के लिए देखा और फिर बोला, ''सुनाने के लिए यह लंबी कहानी है; हालाँकि मेरे लिए प्रसन्नता की बात नहीं है, फिर भी मैं तुम्हें सुनाऊँगा—

''तुर्कों की क्रूरता ने मुझे डाकू बनने के लिए विवश कर दिया। मानव अधिकारों के बिना तुर्की के अधीनस्थ अपने जीवन से मैं तंग आ गया था। हर-एक के सामने झुकने और तिरस्कृत होने से मैं थक गया था। अत: मैंने आधा दर्जन साथियों के साथ बंदूक संभाल ली और जंगली पहाड़ियों की ओर निकल गया। वहाँ हमने तुर्कों की चौकसी की और उनपर झपट पड़े। कोई भी दिन उनसे सामना हुए बिना नहीं रहता था और कुछ-न-कुछ मिल जाता था। अंत में हमें मूयागविचों से भी हिसाब चुकाना था। हमने उनके घर पर आक्रमण कर दिया और परिवार के तीन व्यक्तियों को मार डाला, परंतु अली भागने में सफल हो गया। लंबी खोज के बाद भी हम उसे ढूँढ़ नहीं पाए। हमने घर को लूटा और लूट के साथ अपनी गुफा में आ गए।

''परंतु इसके लिए हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। अली ने हमसे अधिक शक्ति एकत्र कर ली तथा पहाड़ियों और घाटियों में हमारा पीछा तब तक किया जब तक हमें मरुस्थल तक खदेड़ नहीं दिया, जहाँ पहाड़ी भेडें तक नहीं जातीं। यहाँ हमने दुर्गबंदी कर ली और अंत तक लड़ने का निर्णय लिया। अली और उसके साथियों ने हमें चारों ओर से घेर लिया और डेरा डाल दिया। हमारे लिए सुख के अभाव और घोर पीड़ा का समय शुरू हो गया। हमारे पास न खाना था, न पानी और किसी को भी चोरी करके कुछ लाने का साहस नहीं हुआ। हम भूखे और प्यासे मर रहे थे। मेरे साथी उदास चेहरे लिये इधर-उधर घूम रहे थे, परंतु किसी ने भी अपने भाग्य को गाली नहीं दी, बुरा-भला नहीं कहा और न ही दु:ख प्रकट किया।

''अंत में मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि यह सब आगे नहीं चलेगा और अपने साथियों से कहा, ''देखो भाइयो, क्या तुम नहीं सोचते कि घेराव तोड़ना, अपने शत्रुओं पर धावा बोलना और बदला लेते हुए जवानों की मौत मरना, भूखों मरने से कहीं अच्छा होगा? मरना तो है ही, तो लड़ते-लड़ते क्यों न मरें, बजाय इसके कि हम तुर्कों के खून की चाहना अगले जनम तक करें।'

''वे सब समझ गए कि मैं ठीक कह रहा हूँ—इसके सिवाय कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं था, और वे मेरे प्रस्ताव को मान गए।

''मैं अपने हाथ में अपनी बंदूक लेकर कूदनेवालों में सबसे पहला था; मेरे पीछे बाकी साथी आ गए। तुर्क तेज गोलाबारी के साथ हमसे भिड़े। मैंने अपने दो साथियों को धराशायी होते देखा। ठीक है, मैंने विचार किया कि मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था और मैंने अपने आपको शत्रु पर फेंक दिया, दूसरों ने मेरा अनुकरण किया। मेरी आँखों में खून उतर आया था और मैं कुछ भी देख नहीं सकता था। मैं अपनी बंदूक को हवा में हिलाकर आगे को दौड़ा, एकाएक मुझे पीछे से भीषण चोट लगी और मैं अचेत हो गया।

''जब मैं जागा तो अपने आपको मूयागविच के घर में पाया। मैं चटाई पर लेटा हुआ था और कई तुर्क, जिनमें मूयागविच भी था, अपने सिरों को हिलाते मेरे आसपास खड़े थे। जब मैंने आँखें खोलीं तो अली मेरा हाथ थामकर मेरे ऊपर झुक गया।

'' 'अब कैसा महसूस कर रहे हो?' उसने पूछा।

''मैंने उठने का प्रयास किया, परंतु पीड़ा से बहुत दु:खी हुआ; ऐसा लगा कि मुझे पुन: चोट लगी हो और एक बार फिर अचेत हो गया।

''पूरा एक महीना मैं मृत्यु के द्वार पर लेटा रहा और अली ने एक क्षण के लिए भी मुझे अकेला नहीं छोड़ा। जितनी सेवा मेरा पिता कर सकता था, उससे अधिक ध्यानपूर्वक मेरी सेवा उसने की। मेरी पट्टियाँ अपने हाथों से बदलीं, मुझे पानी पीने के लिए दिया और जब मुझे भूख नहीं भी होती थी तो प्यार से बच्चों की तरह मुझे खिलाया। कभी-कभी वह मेरा सिर अपने घुटनों पर रखकर मुझे अंडा अथवा मांस, मेरे मुँह में डालकर, खाने के लिए जोर देता था।

''अंतत:, मैं ठीक होने लगा और ज्यों ही मैंने महसूस किया कि मैं अपने पाँव पर खड़ा हो गया हूँ, मैं उठा और दीवार को थामे कमरे में चलने लगा। अली प्राय: मेरा हाथ थाम लेता था और सेहन में ले जाता था जहाँ शहतूत के वृक्ष के नीचे आराम करता था।

''हर बीते दिन के साथ-साथ मैं शक्तिशाली होता गया और मैंने देखा कि जब अली मेरी ओर मुसकराकर देखता तो उसका चेहरा कैसे चमक जाता था।

'' 'तुम्हारा क्या विचार है, छलाँग लगा सकते हो क्या?'

'' 'नहीं, मैं नहीं लगा सकता।' मैंने उत्तर दिया—'मैं अभी दुर्बल हूँ।'

''उसने अपनी मूँछें ठोकीं और हँस दिया।

'' 'जल्दी, ओह, बहुत जल्दी! तुम ऐसा कर सकोगे।'

''कुछ दिनों के पश्चात् उसने अपना प्रश्न दोहराया।

'' 'मैं प्रयास करूँगा।' मैंने कहा।

''वह एक ओर हट गया। मैंने दौड़ना शुरू कर दिया और छलाँग लगाई। छलाँग इतनी ऊँची थी कि अली खुशी से फूला नहीं समाया।

'' 'इसका मतलब है कि तुम पूर्णतया ठीक हो।'

''उसने मुझे सेहन में छोड़ा और स्वयं घर के अंदर गया। मैंने अत्यंत व्याकुलता से उसको देखा। एक क्षण के बाद, हाथों में दो भरी बंदूकें लिये वह लौट आया। उसका चेहरा मारक रूप से पीला था और भूखी बिल्ली की तरह उसकी आँखें भयानक रूप से चमक रही थीं।

'' 'अब मैंने तुम्हें ठीक-ठाक कर दिया है और अपनी टाँगों पर खड़ा कर दिया है।' उसने मेरे सम्मुख खड़े होकर कहा, 'अब तुम उतने ही अच्छे हो जितना घायल होने से पहले थे और अब मेरा ऋण उतार सकते हो—तुम्हें

मुझे बहुत-कुछ देना है—पूरे तीन सिर, क्योंकि तुमने मेरे दो भाइयों को मार डाला।' अब उसकी आँखें और अधिक भयानक रूप से चमकने लगीं और नीचेवाला जबड़ा काँपने लगा। 'जब तुम मेरे सामने घायल लेटे हुए थे, मैं उसी समय तुम्हें मार सकता था, परंतु मैंने ऐसा करना नहीं चाहा। मैं तुम्हें भला-चंगा करके मारना चाहता था। अली मूयागविच ने कभी भी असहाय शत्रु को नहीं मारा और तुम्हारे लिए अपवाद क्यों करूँगा!'

''उसने एक बंदूक मुझे थमा दी और कहना जारी रखा—

'' 'यह बंदूक उतनी ही प्रभावशाली है जितनी मेरेवाली और यह अच्छी तरह भरी हुई है। चलो, जंगल में चलें और अपने हथियारों की शक्ति देखें।'

''मुझे कहने के लिए कोई शब्द नहीं मिला और मैं सिर झुकाए शोकाकुल आगे बढ़ा।

''इस प्रकार हम जंगल में आ गए।

'' 'जहाँ तुम हो, वहीं खड़े रहो, ' उसने कहा, 'मैं यहाँ खड़ा होता हूँ ताकि एक-दूसरे के आमने-सामने हो जाएँ। हम दोनों इकट्ठे गोली चलाएँ, इस जगह।'

''परंतु मेरे पास अपने आपको संभालने का समय था। मैंने अपनी बंदूक फेंक दी और एक तरफ हो गया।

'' 'क्या मैं तुम्हारे विरुद्ध हाथ उठाऊँ? क्या तुम सोचते हो कि मैं इतना कमीना हूँ कि दुनिया में किसी चीज के बदले में, मैं तुमपर गोली चलाऊँ?'

'' 'तुम्हें गोली चलानी होगी! मैं बलपूर्वक कहता हूँ।' उसने घृणित मुसकराहट के साथ कहा, 'मैं इस झगड़े को टाल नहीं सकता और किसी निहत्थे पर गोली चलाना नहीं चाहता। बंदूक उठाओ! मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ।'

''मैं नहीं हिला।

'' 'बंदूक उठाओ, मैं कहता हूँ, नहीं तो मैं तुम्हें खरगोश कहूँगा।'

''मैंने झुककर बंदूक उठा ली।

'' 'इस ओर घूम जाओ।'

'' मैं घूम गया।

'' 'मुझपर निराशा लगाओ।'

''उसने मुझपर निशाना जमाया और मैंने अपनी बंदूक उसकी ओर मोड़ी।'

''उसने गोली चलाई और उसकी आवाज जंगल में गूँज गई।

''मुझे याद नहीं कि मैंने बंदूक का घोड़ा दबाया था या नहीं—केवल जब मैंने उसकी ओर देखा, वह लड़खड़ाया और गिर गया। मैं दु:ख से चीख पड़ा और उसकी ओर दौड़ा, परंतु तब तक वह मर चुका था।

''तब से लेकर हर वर्ष, मैं आलू और बंदगोभी के कई बोझे उसके बच्चों को देता हूँ। उनकी सहायता के लिए मैं गाय और बकरियाँ भी लाता हूँ।''

ड्योको अपनी बात समाप्त करके सिर झुकाकर बैठ गया। उसने उन आँसुओं को रोकने की भरपूर कोशिश की जो उसके गालों पर बह रहे थे।

❑

कोसमा रकोरे

—माइकल सेंडोवीनू (रूमानिया)

कोसमा शक्तिशाली आदमी था। मैं उसका नाम लेता हूँ तो ऐसा लगता है कि मैं उसे देख रहा हूँ—चितकबरे घोड़े पर सवार काला आदमी, दो फौलादी आँखों के साथ। उसके होंठों को छिपाए हुए घनी मूँछें। एक रूक्ष आदमी था कोसमा। निरंतर अपने घोड़े पर सवार, कंधों पर बंदूक लटकाए, चमड़े की पेटी में एक गज लंबा चाकू—इस प्रकार उसकी आकृति मेरे सामने प्रकट होती है।

मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ, यही लगभग सौ वर्ष का। मैं दुनिया में काफी घूम चुका हूँ, कई चीजें और बहुत से आदमी देखे हैं, परंतु कोसमा रकोरे जैसा व्यक्ति एक ही बार देखा है! वह स्वभाव से दानव नहीं था, परंतु मध्यम आकार का था। बड़ी-बड़ी हड्डियोंवाला; कई दूसरे लोगों की तरह धूप से भूरा हुआ, परंतु वह किसी दूसरे की तरह नहीं था। केवल उसकी आँखों में देखकर ही जाना जा सकता था कि वह अलग तरह का आदमी था।

हमारे छोटे देश के लिए वह महान् विपत्ति का समय था। हमारी श्रेष्ठ रूमानिया की भूमि पर तुर्कों और यूनानियों की बाढ़ आ गई थी और लोगों में शोक और आतंक पैदा हो गए थे। क्या समय था! केवल कोसमा विश्वव्यापी संताप से अछूता रहा। वह आज यहाँ है तो कल वहाँ—चिंतारहित और शांत। तमाम लोग शत्रुओं के भय से भाग गए—शत्रु, जिन्होंने हमारी भूमि उजाड़ दी थी—वह रह गया। उन्होंने इसपर भी फंदा डाला और जंजीरों से जकड़ दिया। इसने हाथों से जंजीरों को छूआ और उनको उतार दिया; काठी में अपने आपको फेंककर घोड़े पर सवार हो, दूर निकल गया। जीवनी में लिखा था कि गोलियों के विरुद्ध उसके पास मंत्र था; केवल चाँदी की गोली ही उसे छू सकती थी। आज दिखा सकते हो मुझे ऐसा आदमी? वह वीरता का समय था! क्या तुमने किसी दूसरे शूरवीर की बाबत सुना है? वह सुंदर बालोंवाली नौकरानी का बेटा! वह भी ऐसा ही था! वह वालचिया में लूटमार करता था और कोसमा मोलडाविया में, और लूटमार का माल बाँटने के लिए दोनों मिलकोव में रात को मिलते थे। क्या सीमा रक्षक उन्हें पकड़ना चाहते थे? उन्होंने प्रयास किया, परंतु कोसमा का घोड़ा भूत की तरह उड़ता था; उनकी गोलियाँ उस तक नहीं पहुँच पाती थीं। सीमा से लगी बाकाऊ की पहाड़ियों से यह बहुत दूर था—उस फासले को रात में दो बार तय करना सरल नहीं था। कोसमा और उसके चितकबरे घोड़े के लिए यह बच्चों का खेल था।

इस प्रकार जंगलों और चौड़े मैदानों में उसका जीवन बीता। वह ध्यान, भय और प्रेम में से किसी को नहीं जानता था—जब तक प्रेम ने उसे जकड़ नहीं लिया—एक शानदार आदमी! मैं देखता हूँ जैसे वह आज की बात है।

उन दिनों वालचरस्टी के भवन में एक यूनानी रहता था और हमारी भूमि पर उजाड़ किले में एक रूमानियन महिला रहती थी जो अद्भुत सुंदर थी। यूनानी उससे प्रेम करता था और कोई भी इस पर चकित नहीं था। उसकी भौंहें कमान की तरह झुकी हुई थीं और जादूगरनी जैसी आँखें। उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह डिमित्रु कोवास से हुआ था और वह मर गया था। अब युवा विधवा सुलताना अपनी संपत्ति को अकेली संभालती थी।

अब जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, यूनानी निकोला जामफ्रीडो इस महिला के प्रेम के लिए अपना नाश कर रहा था। उसने उसे कैसे नहीं चाहा? उसने कौन से तरीकों का प्रयोग नहीं किया? उसने कितने ज्योतिषियों और जादूगरों से परामर्श नहीं किया? सब व्यर्थ रहा। महिला उसे पसंद नहीं करेगी और यहाँ मामला समाप्त हो गया। क्या वह भद्दा और विकलांग था? परमात्मा दया करे। वह गर्वीला यूनानी, भूरी आँखें, काली दाढ़ी, लंबा और देखने में अच्छा था। इससे क्या होता है। वह इसको स्वीकार नहीं करेगी!

एक दिन अपने कमरे में बैठा निकोला सोच रहा था—सोचता रहा। युवा विधवा को पाने के लिए उसमें कितनी

तीव्र अभिलाषा थी। वह उसकी चाहत से दूर क्यों थी? कुछ दिन पहले वह एक कंजरी के साथ उसकी दीवार के नीचे खड़ा हुआ था। उसके लिए इसने अत्यंत मधुर गीत गाया था। घर में खामोशी छाई रही। किया क्या जाए? निकोला ने सोचा—'मैं कुरूप नहीं हूँ। मैं मूर्ख नहीं हूँ। वह मुझे स्वीकार क्यों नहीं करेगी? क्या वह किसी दूसरे को प्यार करती है? नहीं, मैंने तो रातों तक उसकी चौकसी करवाई है।' कोई भी अंदर नहीं आया।

निकोला अति क्रुरद्ध हुआ। वह उठा और बाहर चला गया। उसके साईस बाड़ में घोड़ों को धो रहे थे। ''क्या यह रेशों से भरा घोड़ा है?'' वह चिल्लाया और उसकी चाबुक लड़के की पीठ पर पड़ी। कुछ कदम आगे चलकर अपने माली, जो धूप में आराम कर रहा था, से उसने कहा, ''तुम इस प्रकार मेरी सेवा करते हो क्या?'' और माली ने भी चाबुक की चोट को महसूस किया।

परंतु निर्दोष लोगों पर अपना गुस्सा निकालने में क्या अच्छाई है? वह बगीचे में गया और नीबू के वृक्ष के नीचे पत्थर की बेंच पर बैठ गया और सोचने लगा—सोचने लगा। पतझड़ की हवा ने पत्तियों को मुरझा दिया था। हवा बहुत उदासीन थी। दिन के मौन में शाखों पर पत्ते तितलियों की तरह काँपकर फड़फड़ा रहे थे। नाशपाती के वृक्ष के तले रक्त की बूँदों की तरह लाल पत्तों का ढेर लगा था। निकोला बैठा सोच रहा था—'इसकी क्या कीमत है यदि वह मेरी ओर देखती तक नहीं?' उसने गिरे पत्तों को देखकर आह भरी!

''वसाईल, वसाईल।'' उसने एकाएक आवाज दी।

एक तगड़ा बूढ़ा आदमी दरवाजे से अंदर आया।

''वसाईल, '' मालिक ने कहा, ''मेरी सहायता करो!'' बूढ़ा आदमी उसके सामने खड़ा हो गया, आह भरी और हिचकिचाया।

''मैं नहीं जानता, मालिक!''

''तुम जरा सोचो। तुम हमेशा अच्छी सलाह देते हो; अब मेरी सहायता करो! बूढ़ी जादूगरनी कुछ नहीं कर सकती; कंजरी भी नहीं। अब मेरा साथ दो।''

''मैं नहीं जानता, मालिक।''

''मुझे मत छोड़ो, वसाईल।''

''मैं कहना चाहता हूँ, परंतु साहस नहीं होता।''

''यह लो सोने की मोहर, बोलो!''

वसाईल ने सोने की मोहर को नहीं देखा।

''मैं जानता हूँ, मालिक, तुम मुझे दो या तीन मोहरें भी दोगे, परंतु यह काम कठिन है। सुनो, यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो फ्रासीनी के पास जाता, अपनी प्रिय के कमरे में बलपूर्वक जाता और उसको ले आता। मैं इतना ही जानता हूँ।''

''तुम्हारा यही अभिप्राय है जो तुम कहते हो, वसाईल, क्या ऐसा संभव है?''

वसाईल चुप रहा। निकोला ने अपना माथा अपने हाथों में ले लिया। फिर उसने उसने कहा, ''मैं प्रयास करूँगा।''

''मैं जानता हूँ कि मेरी सलाह दो सोने की मोहरों के बराबर है।'' वसाईल ने आह भरी।

एक रात निकोला घोड़े पर सवार हुआ, अपने पाँच शक्तिशाली साथी लिये और फ्रासीनी की ओर चल दिया। जंगल में पतझड़ की हवा दहाड़ रही थी। आदमी घोड़े पर चुपचाप चलते रहे। उन्होंने दूर से गाँव में मुरगों की बाँग सुनी। इसके अतिरिक्त और कोई आवाज नहीं थी। अंत में उन्हें महिला का किला नजर आया; रात को वह कोयले

के पहाड़ जैसा लगा।

निकोला और उसके साथी सायों की तरह चुपचाप दीवार तक पहुँचे और घोड़ों से उतरे। उन्होंने रस्सियों से बनी सीढ़ियाँ दीवार पर फेंकीं और उसपर चढ़ गए। सहायता के लिए चीखें गूँजने लगीं, परंतु निकोला निडर था। दरवाजे तोड़ दिए गए और वे बरामदों में घुस गए।

''आह!'' यूनानी ने सिसकी भरी—''अंत में मैंने उसे पा लिया।''

परंतु एकाएक दरवाजा खुला और रोशनी के प्रवाह ने रास्ते को चमका दिया। निकोला निडरता से आगे बढ़ा। वहाँ अपने कमरे की दलहीज पर लेडी सुलताना खड़ी थी। उसके बाल खुले थे और लंबी सफेद पोशाक पहने हुए थी। उसकी आँखें काली थीं और वह निकोला को देख रही थी। वह अपने आपमें था और झुककर उसके पाँव चूम सकता था; परंतु वह जानता था कि वह इसकी हँसी उड़ाएगी!

''रुक जाओ, '' वह चिल्लाई—''मैंने सोचा, कोई चोर है! परंतु यह तो केवल तुम निकले, अच्छा मास्टर निकोला।''

और एकाएक उसके हाथ में जगमगाती खड्ग चमकी और चपटी तरफ से निकोला के सिर पर पड़ी। वह निश्चल खड़ा रहा। उसके साथियों ने अंदर आने की जल्दी की, परंतु एक गिर गया। महिला के आदमी भी चारों ओर से आ गए; निकोला और उसके साथी पीछे हटे। वे सेहन में पहुँचे, घोड़ों पर सवार हुए और बलचरस्टी के लिए हवा हो गए।

''परमात्मा मुझपर दया करे, '' निकोला ने सिसकी भरी—''मैं दुरात्मा जीव हूँ! अब मैं क्या करूँ?'' और अक्टूबर की सारी रात लेटकर गहराई से सोचता रहा। ''मैं संताप हूँ, मैं ही संताप हूँ, '' वह कराहा—''मैं दुरात्मा हूँ।'' उसने अपनी भौंहों को दोनों हाथों से दबाया। ''क्या अद्‌भुत औरत है; क्या आँखें हैं! प्रभु, प्रभु, मुझे मत छोड़ो क्योंकि मैं बरबाद हो जाऊँगा।'' और उसने स्वप्न देखा...और स्वप्न देखा—क्या अद्‌भुत औरत है, क्या आँखें हैं!!

वह उठा और वसाईल को पुकारा।

''मैं शर्म से डूबा हुआ लौट आया हूँ, वसाईल! क्या औरत है! मेरी आत्मा उसे चाहती है। मेरी सहायता करो और मैं तुम्हें दो मोहरें दूँगा।''

वसाईल ने शांति से उत्तर दिया, ''मैं जानता हूँ कि तुमने क्या किया। वास्तव में वह एक गर्वीली औरत है। और मैं जानता हूँ कि मैं पाँच या छह मोहरें पाऊँगा क्योंकि मैं एक तरीका जानता हूँ।''

''बोलो वसाईल, जल्दी, क्योंकि मैं बरबाद हो रहा हूँ।''

''वास्तव में, मालिक, सात मोहरें मेरे लिए क्या हैं? परंतु तुम मुझे सात गुणा सात मोहरें दोगे जब महिला तुम्हारे दिल के पास आराम करेगी—हाँ, दिल के पास। मैं तुम्हारे पास कोसमा रेकोरे को लाऊँगा। जैसे ही तुम मेरे हाथ पर रखोगे, उसी समय वह महिला को तुम्हारी बाँहों में रख देगा और जैसे ही...''

जब निकोला ने कोसमा रेकोरे का नाम सुना तो चकित रह गया; फिर उसने सिसकी भरी और कहा—''यह ठीक रहेगा।''

तीसरे दिन कोसमा आया। निकोला नीबू के वृक्ष के नीचे पत्थर के बेंच पर बैठा सुगंधित तंबाकू पी रहा था। जब उसने कोसमा को देखा तो देर तक देखता रहा। वह धीरे-धीरे आया; उसका बायाँ हाथ घोड़े की गरदन पर था। उसने लोहे की एड़ियों के साथ लंबे बूट पहने हुए थे। उसकी वास्कट नीचे उसकी चमड़े की पेटी तक आती थी और कंधे पर बंदूक लटक रही थी। उसके सिर पर काली भेड़ की ऊन की ऊँची टोपी थी। वह धीरे-धीरे चला और घोड़े ने झुकी गरदन के साथ उसका पीछा किया।

वसाईल अपने मालिक के पास गया और बोला, ''उस आदमी को देखो, मालिक, यह तुम्हारे लिए नरक से दानव को भी ला सकता है।''

निकोला ने आदमी को घूरा। कोसमा निश्चल खड़े रहकर बोला, ''परमात्मा तुम्हारा साथ दे।''

''तुम्हारा धन्यवाद, '' वसाईल ने कहा, ''और तुम्हारा साथ भी।''

मालिक चुप ही रहा।

''तो तुम हमारे पास आ गए, भाई कोसमा?'' वसाईल बड़बड़ाया।

''मैं आ गया हूँ।'' कोसमा ने उत्तर दिया।

''हमारी योजना में हमारी सहायता के लिए?''

''हाँ।''

कोसमा का चेहरा इतना गंभीर था जैसे उसपर कभी मुसकराहट आई ही न हो!

''हाँ, हाँ, तुम आ गए हो।'' निकोला ने कहा जैसे वह गहरी नींद से जागा हो—''वसाईल, कॉफी ले आओ, जल्दी।''

''मैं कॉफी नहीं पीता।'' कोसमा ने कहा।

''तुम नहीं पीते...'' निकोला ने स्वप्न सा देखते हुए दोहराया—''विश्वस्त होने के लिए तुम मेरी सहायता के लिए ही आए हो। तुम इसके लिए कितना लोगे? पचास मोहरें?

''हाँ।''

''वसाईल, बटुआ ले आओ।''

''नहीं, '' कोसमा ने कहा, ''मुझे पैसा नहीं चाहिए।''

''क्या?'' निकोला चिल्लाया—''तुम्हें पैसा नहीं चाहिए?''

''यह सौदा है, मुझे तुम्हारे लिए फ्रासीनी से उसे लाना है, जब मैं तुम्हें महिला दूँगा, तुम ऐसे ही मुझे पैसा दे देना...।''

''छोटी और मधुर बात।'' वसाईल चिल्लाया—''यह तुम्हें औरत देगा; तुम इसे पैसा देना। मैंने नहीं कहा था कि यह नरक से दानव को भी ला सकता है। यूँ समझो कि वह औरत अब तुम्हारी है।''

कोसमा बाग में लौट आया, घोड़े को वृक्ष से बाँधा, अपना चोगा पहना और लेट गया।

जब अँधेरा हो चला तो कोसमा ने घोड़े पर काठी कसी और उसपर सवार हो गया। उसने निकोला से कहा—

''मालिक, मैदान में मेरी प्रतीक्षा करो।''

दरवाजे खुले, घोड़ा हिनहिनाया और तीर की तरह उड़ गया।

पूर्णिमा की रोशनी पतझड़ की धुंध में प्रवेश कर गई और मौन पहाड़ियों और काले जंगलों पर रोशनी का परदा बुन दिया। मौन में केवल घोड़े के खुरों की आवाज आती थी। कोसमा पतझड़ के जंगलों में छिपता हुआ चला और नीली रोशनी में भूत की तरह नजर आया।

वह फ्रासीनी पहुँच गया। हर कोई सो रहा था; दरवाजे बंद थे। कोसमा ने दरवाजा खटखटाया।

''कौन खटखटा रहा है?'' वह अंदर से चिल्लाया।

''खोलो।'' कोसमा ने कहा।

''कौन हो तुम?''

''खोलो।'' कोसमा की आवाज गरजी। अंदर से कानाफूसी और बड़बड़ाहट सुनाई दी।

''मुझे कब तक प्रतीक्षा करनी होगी?''

''हम नहीं खोल सकते।''

''खोलो, मैं कोसमा रेकोरे हूँ।''

दरवाजे पर रोशनी दिखाई दी, फिर लुप्त हो गई और चिटखनियाँ पुन: लगा दी गईं।

कोसमा सेहन में आया और घोड़े से नीचे उतरा। उसने अंदरवाले कमरे में प्रवेश किया।

''दरवाजा तो खुला है, '' उसने अपने आपसे कहा, ''औरत बहादुर है...।''

अँधेरे में उसकी एड़ियाँ झनझना रही थीं, जैसे गिरजा में होता है। एक कमरे में शोर हो रहा था। रोशनी ने रास्ते को जगमगा दिया था। सुलताना कमरे की देहली पर प्रकट हुई। उसके बाल खुले थे और सफेद पोशाक पहने हुए थी।

''तुम कौन हो? क्या चाहते हो?'' वह चिल्लाई।

''मैं तुम्हें अपने मालिक निकोला के लिए लेने आया हूँ।'' कोसमा ने शांत भाव से कहा।

''तुम्हारे आने का यही कारण है क्या?'' उसने अपना हथियार ऊपर उठाया—''मैं तुम्हें और तुम्हारे मालिक को अभी दिखाती हूँ!''

कोसमा एक कदम निकट आ गया। उसने औरत की कलाई थाम ली, खड्ग दूर गिर गई। औरत चिल्लाई—

''जिब्राईल, निकोलाई, टोडोर, सहायता!''

आदमी झपटे, परंतु दरवाजे पर ही खड़े रहे। कोसमा पुन: उसके पास गया। औरत उससे दूर हट गई और खड्ग को थामा।

''डरपोक, वहाँ क्यों खड़े हो? बाँध लो इसे।''

''लेडी!'' कोसमा ने कहा, ''शब्दों को क्यों गँवाती हो? मैं देख रहा हूँ कि तुम बहादुर हो। इसका कुछ लाभ नहीं।''

नौकरों ने कानाफूसी की—''इसे कैसे बाँध सकते हैं? मालकिन, यह कोसमा है, कोसमा रेकोरे। इसके पास मंत्र है।''

''दुरात्माओ!'' औरत चिल्लाई और कोसमा पर झपटी। उसने इसकी कलाइयाँ थाम लीं और चमड़े की रस्सी से बाँधकर उसको उठा लिया।

''रास्ता दो।'' उसने शांतिपूर्वक कहा और उन्होंने रास्ता दे दिया।

'क्या औरत है!' कोसमा ने सोचा जैसे ही वह उसके साथ बड़े कमरे में आया, 'क्या औरत है! निकोला का चुनाव अच्छा है।'

सुलताना ने घबड़ाई हुई नजरों से अपने आदमियों को घूरा, फिर उसने उस आदमी की फौलादी आँखों और भूरे चेहरे को देखा जो उसे थामे हुए था।

''तुम कौन हो?''

''कोसमा रेकोरे।''

उसने अपने डरे हुए नौकरों की तरफ देखा और चुप रही। अब वह समझ गई थी। जब वह बाहर आई तो कोसमा घोड़े पर चढ़ा, औरत को अपने आगे बैठा लिया। एक बार फिर घोड़े के खुर रात के सन्नाटे में खड़खड़ाए। 'क्या औरत है!' उसने सोचा और उसका घोड़ा हवा की तरह गतिमान हो गया।

सुलताना पीछे मुड़ी और चाँदनी में कोसमा को देखा।

''तुम मेरी ओर क्यों देख रही हो, लेडी?''

घोड़ा उड़ता जा रहा था। औरत के काले बाल हवा में उड़ रहे थे और सफेद कोहरा पतझड़ के पत्तों पर चमक रहा था। सुलताना उस आदमी को घूरती रही जिसके बाजू फौलाद के थे और आँखें ज्वाला की!

''तुम घूर क्यों रही हो, लेडी; तुम काँप क्यों रही हो; क्या सरदी लग रही है?'' घोड़े के खुर जंगल में प्रतिध्वनित हो रहे थे। चाँदी जैसे रंग के पत्ते चमक रहे थे—जब वे उड़ रहे थे। एकाएक उन्होंने एक साए को इधर-उधर घूमते देखा।

''कौन है वहाँ?'' सुलताना ने पूछा।

''निकोला, तुम्हारा मालिक, हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।''

औरत चुप हो गई, परंतु कोसमा ने महसूस किया कि वह अपने आपको बंधन से छुड़ाने के लिए कैसे-कैसे यत्न कर रही थी। बंधन खुल गए। उसके सफेद हाथ ढीले होकर चमके; दाएँ हाथ ने लगाम थामी और बाएँ हाथ ने कोसमा का गला पकड़ा। घोड़ा घूम गया। उसने अपना सिर कोसमा की छाती पर डाल दिया।

''मुझे किसी दूसरे को मत दो।'' उसने धीरे से कहा।

और घोड़ा नीली रोशनी में भूत की तरह उड़ा और उसके खुर मैदान में प्रतिध्वनित हुए, चाँदी के रंग जैसे पत्ते चमके, काले बादल हवा में तैरे और उनके साथ, उनके आगे-आगे गतिमान हुए। पहाड़ियों के संधि प्रकाश में वे चले, भूतों की तरह कोहरे और धुंध में, काली रात में चले—हाँ, काली रात में प्रातः होने तक।

❑

राजकुमारी और मोची

—नामवर मुसन्निफ (तुर्की)

गरमियों का दिन समाप्त हो रहा था। अस्त होते हुए सूर्य की अंतिम किरणें गजनी के नगर पर पिघले सोने की बाढ़ की तरह गुंबदों और मीनारों को चमकाती गिर रही थीं। देहात के आसपास खिले फूलों की सुगंध लिये ठंडी विश्रांत पवन थके कुलियों और बहिश्तियों के समुदाय को दिन भर के परिश्रम के बाद, सार्वजनिक फव्वारे के पास, विश्राम दे रही थी। भक्तजनों को प्रार्थना के लिए मीनारों से बुलाती मोअजन की आवाज बंद हो चुकी थी; शांति और खामोशी इस प्रकार छाई हुई थी कि कोई भी इसे वशीभूत किया हुआ नगर समझ सकता था, जिसपर जादूगर का डंडा फिरकर नींद का दौरा पड़ गया हो!

बड़े बाजार की दुकानों में से एक दुकान के द्वार पर चौकड़ी लगाए, जैसा पूरब में रिवाज है, अपनी चिलम पीता हुआ और ग्राहकों की प्रतीक्षा करता वह बैठा था। उसके चेहरे की छवि और दर्प आश्चर्य रूप से उसके विनीत काम के विपरीत थे; क्योंकि 'सय्यद' मोची था, जिसको कहना विचित्र होगा, वे मजाक में 'फव्वारा' कहते थे।

उसके तराशे नैन-नक्श तथा व्यक्तित्व की शिष्टता, अधिकृत महत्त्ववाले लोगों और उसकी वर्तमान स्थिति की अपेक्षा उसकी उत्तम कुलीनता का परिचय देते थे; क्योंकि पूरब में आकस्मिक और घोर क्रांति के कारण ऐसा प्राय: होता है कि किसान भी कुलीन नवाब बन जाते हैं।

सय्यद को शिक्षा की सुविधा प्राप्त हुई थी क्योंकि उसके पिता ने उसे गजनी के स्कूल में भेज दिया था जहाँ इसने पढ़ना और लिखना सीखा था—पूरब में इसकी उपेक्षा नहीं की जाती।

फिर सायंकाल को, जिसकी हम बात कर रहे थे, सय्यद अंत में अपनी दुकान बंद करने वाला था कि उसे सड़क पर एक घुमक्कड़ फकीर उसकी दुकान की ओर आता हुआ दिखाई दिया। फकीर उसके निकट पहुँच गया; उसके दयालु चेहरे में रुचि लेते हुए सय्यद ने उसका स्वागत किया और फकीर ने जूते के छिद्र की मरम्मत करने का निवेदन किया।

''धन्यवाद, मेरे बेटे, '' फकीर ने कहा, ''परमात्मा ने तुम्हें अच्छा दिल दिया है, और तुम्हारी दया के बदले में, मैं तुम्हें बताऊँगा कि दिल के टुकड़ों की मरम्मत कैसे की जाती है।''

सय्यद ने अजनबी को अंदर आने का निमंत्रण दिया, खाना पेश किया और आधी रात तक बातें करते रहे। अंत में फकीर ने कहा—

''देखो, तुम्हें सय्यद कहते हैं, परंतु तुम्हारा दिल उदास है और तुम अपने काम से संतुष्ट नहीं हो। सुनो, अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि इसकी मरम्मत कैसे की जाती है। तुमने जहाननामा और अजाब मखलूकात पढ़े हैं और विदेशों को अपनी आँखों से देखने की इच्छा करते हो। अब उठो, कल अपना सारा सामान बेच दो और दुनिया देखने के लिए निकल पड़ो, परंतु मैं तुम्हें परामर्श देता हूँ, पहला यह कि तुम अपने विश्वस्त साथी चुनो क्योंकि हजरत ने कहा है—'पहले साथी फिर सड़क'; दूसरे, ऐसी जगह मत जाना जहाँ पानी न हो और तीसरे, सायंकाल के समय किसी नगर में प्रवेश मत करना।''

अगले दिन फकीर चला गया और सय्यद ने अपना सामान बेचकर चलने की तैयारी कर ली और व्यापारियों के साथ, जो नगर से जाने वाले थे, जाने का निश्चय कर लिया।

बिना किसी साहसी कृत्य का सामना किए, वे काफी समय तक चलते रहे जब तक सायंकाल शहर के निकट

नहीं पहुँच गए। व्यापारियों ने शहर में जाने के लिए जल्दी की क्योंकि ऐसा न हो कि शहर के दरवाजे बंद हो जाएँ। शहर से कुछ दूरी पर सय्यद को फकीर के शब्द याद आ गए कि सायंकाल होने पर शहर में प्रवेश नहीं करना और अपनी इच्छा प्रकट की कि वह पीछे रहेगा और अगले प्रात:काल तक शहर में प्रवेश नहीं करेगा। पहले तो उसके साथियों ने उसके स्पष्ट भद्दे इरादे को दूर करने का भरसक प्रयास किया, परंतु अंत में यह देखते हुए कि उनके प्रयास सफल नहीं होंगे, वे उसे नदी किनारे बैठा छोड़कर, शहर में जल्दी से चले गए।

रात शीघ्र ही काली और दु:खदायी हो गई और सय्यद ने अपने विचारों के साथ अपने आपको अकेला पाया क्योंकि सितारे की मद्धिम सी किरण भी दृश्य को साफ नहीं कर पाई। वह उठा और नदी के किनारे को छोड़ता हुआ शहर में पहुँचा। यह न जानते हुए कि किधर गया था, वह अंत में शहर के कब्रिस्तान में आ पहुँचा। वह अंदर गया और कुछ समय तक मकबरों में घूमता रहा।

वह तूफान से बहुत पहले नहीं पहुँचा था—तूफान जो कुछ घंटे पहले धमकी दे रहा था, अपने सारे गुस्से के साथ फूट पड़ा। गरज के भयानक थप्पड़ आकाश को चीर देना चाहते थे और बिजली की दो नोकवाली चमक मकबरों को चमका रही थी; उन्हें विलक्षण और कुरूप बना रही थी। तूफान से बचने के लिए सय्यद एक मकबरे में चला गया और खेद कर रहा था कि उसने फकीर की बात क्यों मानी।

अंत में असंतोष पर काबू न रखते हुए वह मकबरे से बाहर खुली हवा में आया। जब मकबरे की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, वह दो आदमियों को देखकर चकित रह गया। वे शहर की दीवार से किसी चीज को नीचे गिरा रहे थे—दीवार, जो कब्रिस्तान के साथ लगी हुई थी। वह मकबरे के पीछे हो गया ताकि वे लोग इसे देख न सकें। फिर उसने आदमियों को नीचे आते और अपने बोझे को उसी मकबरे में ले जाते देखा जहाँ वह पहले था। कुछ समय बाद दोनों आदमी पुन: प्रकट हुए और सय्यद को लगभग छूते हुए उसके पास से होकर कब्रिस्तान से चले गए।

सय्यद ने मकबरे में पुन: प्रवेश किया और रोशनी करने के बाद देखा कि दो आदमियों द्वारा लाया गया, वास्तव में एक कफन था जो उलटा पड़ा हुआ था। कफन के बाहर रक्त के धब्बे पड़े थे और उसके नीचे से भी रक्त रिस रहा था। सय्यद डर से भयभीत कुछ समय तक खड़ा रहा; उसके अवयव उसे धोखा देते हुए प्रतीत होते थे और वह इतना पीला पड़ गया था कि महसूस होता था कि कब्रिस्तान में रहनेवाली किसी घुमक्कड़ आत्मा की जकड़ में आ गया हो।

उसका भय कितना बढ़ गया जब उसे कफन हिलता हुआ प्रतीत हुआ! वह किसी तरह उसके पास गया और कौतूहल से प्रेरित अपने डर पर काबू पाया। कफन को सीधा किया, ढकने को उतारा और एक सुंदर युवती को कपड़े में बँधे हुए लेटे देखा—कपड़े की सफेदी रक्त के धब्बों से बड़ा भेद पैदा कर रही थी और रक्त का रंग गाढ़ा कर रही थी। सय्यद को युवती के मरने में कोई शंका नहीं थी लेकिन वह कपड़ा उतारने लगा तो उसकी हैरानी की हद न रही; उसे लगा कि शव से आती हुई धीमी आवाज कह रही थी—'क्या तुम परमात्मा से नहीं डरते कि मुझे इस प्रकार नंगा कर रहो हो!'

अब यह आश्वस्त था कि वह जीवित शरीर था, सय्यद ने पूछा—

''ओ सुंदर युवती, क्या तुम्हें कष्ट हो रहा है? तुम्हें ऐसी स्थिति में देखकर मेरा दिल शोक कर रहा है कि मैंने तुम्हें मृतक समझा।''

''क्या तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते?'' युवती चिल्लाई—''यदि कर सकते हो तो करो, मैं तुम्हारी कृतज्ञ रहूँगी। मैं रक्त के बहाव से मर रही हूँ।''

सय्यद ने तुरंत अपनी ऊपरी ढीली पोशाक उतार दी और उसके टुकड़े करके युवती के घावों को बाँध दिया।

दिन निकलते ही युवती को लेकर सय्यद ने नगर में प्रवेश किया, पूर्व इसके कि वहाँ किसी प्रकार की हलचल हो; वह एक कारवाँ सराय में गया और वहाँ के रखवाले को यह कहते हुए कि वह उसकी बहन है जिसपर डाकुओं ने सड़क पर आक्रमण किया था, अपना सामान एक कमरे में रखा।

कुछ ही समय में युवती के घाव भर गए; और एक दिन स्नानगृह से लौटने के बाद, जहाँ वह पहली बार ही गई थी, सय्यद को कलम, स्याही और कागज लाने के लिए कहा और छोटा पत्र लिखकर यह कहते हुए सय्यद को दिया कि वह एक्सचेंज जाए जहाँ उसे बैठा हुआ एक व्यापारी मिलेगा। उसने उसका हुलिया भी बता दिया और वह छोटा पत्र उसको देने के लिए कहा।

''जो कुछ भी वह तुम्हें देगा, '' उसने कहा, ''वह लाकर मुझे दे दो।''

जब सय्यद एक्सचेंज में आया तो आश्वस्त होने के लिए उस व्यापारी को उसकी जगह बैठे देखा जहाँ युवती ने बताया था तथा जिसका हुलिया भी उससे बिलकुल मिलता था जैसाकि युवती ने बताया था और जिसको उससे पत्र देना था।

सय्यद ने उसे सलाम किया, कुशल-क्षेम पूछा और छोटा पत्र दे दिया।

व्यापारी ने पत्र ले लिया, उसे चूमा और माथे से लगाया, जैसाकि पूरब में रिवाज है; उसे पढ़कर अपनी कमर से बटुआ निकाला और सय्यद को दे दिया। सय्यद ने बटुआ ले लिया, जैसाकि युवती ने कहा था और कारवाँ सराय को लौट आया।

''अब जाओ, '' युवती ने कहा, ''एक छोटा सा मकान खरीद लो और जो बाकी बचे, उससे अपने और मेरे लिए कपड़े खरीद लो।''

सय्यद ने युवती की प्रार्थना स्वीकार करने में समय नहीं गँवाया और शीघ्र ही मकान और कपड़े खरीद लिये और वे अपने मकान में चले गए।

अपने नए घर में बसने के तुरंत बाद, युवती पुनः पत्र लिखने बैठ गई और सय्यद को पत्र देती हुई कहने लगी कि वह फिर वहाँ जाए और पत्र को युवा व्यापारी के हाथ में दे।

पहले की भाँति सय्यद वहाँ गया और व्यापारी को पत्र दिया। व्यापारी ने पत्र पढ़ा और इस बार दो बटुए सय्यद को दिए।

सय्यद युवती के पास लौट आया; उसने कहा, ''अब जाओ और कुछ घोड़े, कपड़े और गुलाम खरीदकर यहाँ ले आओ।''

सय्यद ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था और जब यह सब हो गया तो युवती ने एक और पत्र लिखा और सय्यद को दिया। वह पहले की तरह व्यापारी के पास गया और सोने से भरे तीन बटुए लेकर लौट आया।

''अब, '' युवती ने कहा, ''एक बटुआ लेकर तुम ऐसे बाजार में जाओ जहाँ तुम्हें एक दूसरा व्यापारी मिलेगा; उसका माल देखो और जो कीमत वह माँगता है, वही उसे दे दो।''

युवा आदमी गया और वैसा ही किया, हालाँकि वह समझ नहीं पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा था।

कुछ दिनों के बाद युवती ने सोने से भरे बाकी बटुए देते हुए व्यापारी से कुछ और माल खरीद लेने के लिए कहा, परंतु यह भी कहा कि माँगी हुई कीमत देने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

सय्यद व्यापारी के पास गया और उसका कुछ माल खरीदने की इच्छा प्रकट की। कई चीजें देखने के बाद उसने व्यापारी से भारी कीमतों में एक पैसा भी कम करवाए बिना, अत्यंत बहुमूल्य माल खरीद लिया और उसी समय तुरंत भुगतान कर दिया।

व्यापारी ऐसे ग्राहक से अति प्रसन्न हुआ और सय्यद को अगली शाम अपने साथ गुजारने के लिए आमंत्रित कर दिया।

सय्यद युवती के पास लौट आया और सारा वृत्तांत कह सुनाया।

''जाओ, '' युवती ने कहा, ''परंतु इस बात का ध्यान रखना कि तुम्हें अपने सामने ही देखना है, इधर-उधर नहीं।''

अगली शाम सय्यद व्यापारी के घर गया; व्यापारी ने उसकी बहुत खातिरदारी की और उसने अत्यंत आनंदमयी शाम गुजारी, परंतु इधर-उधर देखने से ध्यानपूर्वक बचते हुए, जैसाकि युवती ने कहा था।

जब वह लौटा तो युवती को वह सब बताया जो वहाँ हुआ था; युवती ने कहा, ''कल तुम जाओ और उसे अपने यहाँ आने का निमंत्रण दे आओ।''

तदनुसार जब अगला दिन आया तो सय्यद व्यापारी के यहाँ गया और शाम को उसके साथ गुजारने के लिए आमंत्रित कर आया। व्यापारी ने बिस्मिल्लाह करते हुए उत्तर दिया—''मैं आऊँगा।''

सय्यद घर लौटा और युवती को सूचित किया। उसने तुरंत घर को साफ-सुथरा बनाना शुरू कर दिया; शराब तैयार की, भुना मांस और फलों को तैयार किया तथा संगीतवालों को भी तैयार रहने के लिए आदेश दे दिया।

जब शाम का समय हुआ तो व्यापारी आना नहीं भूला। वह और सय्यद लगभग आधी रात तक खाते-पीते रहे।

अंत में व्यापारी उठा और जाने के लिए आज्ञा माँगी, परंतु सय्यद ने, जिसको युवती ने समझा दिया था कि व्यापारी को जाने न दे, उसे रुक जाने पर जोर दिया; जाने के लिए उसके हठ करने पर सय्यद ने कहा—आज की रात आप यहाँ से न जाएँ और यहीं सो जाएँ; उसी समय उसने गद्दे लगाने और लेटने के लिए कहा।

व्यापारी के पास दूसरा उपाय नहीं था। अत: उसे सय्यद की बात माननी पड़ी। वह वहीं उसकी बगल में लेट गया।

आधी रात के समय जब व्यापारी गहरी नींद सो रहा था तो युवती कमरे में आई। ज्यों ही वह पास से गुजरी तो उसके कपड़ों की खड़खड़ाहट ने सय्यद को जगा दिया, वह उठ बैठा और उसकी चौकसी करने लगा। वह व्यापारी के पास गई और उसके ऊपर झुककर उसके दिल में कटार घोंप दी। एक छोटी सी कराह के साथ, बिना कोई शब्द बोले, व्यापारी चल बसा।

युवती मुड़ी और यह देखकर कि सय्यद जाग रहा था, उससे बोली, ''देखो अब वह समय है जब मैं अपनी कहानी तुम्हें सुनाऊँ क्योंकि मेरे सब काम तुम्हें अद्‌भुत लगते होंगे। अब सुनो, ओ नौजवान! पूरी कहानी सुने बिना कोई परिणाम निकालने का प्रयास न करना।

''मैं इस नगर के राजा की बेटी हूँ। पराक्रमी सम्राटों के लंबे वंश, जिसने इस राज्य पर राज किया, का अंतिम वंशज यह चांडाल जिसको मारते हुए तुमने मुझे अभी देखा, इस नगर के एक कसाई का बेटा है।

''एक दिन बुरे समय में, जब मैं स्नानगृह में गई तो इसकी सुंदर आकृति से मैं आकर्षित हो गई; इसकी आकृति इतनी सुंदर थी जितना काला इसका दिल; यह दुश्चरित्र था। मैं इससे प्रेम करने लगी। इसे यह जानने में देर नहीं लगी कि इसके प्रति मैं कितनी उत्तेजित थी; अत: पत्र-व्यवहार आरंभ हो गया। अंत में वह लड़की के वेश में मुझे मिला और मैं भी प्राय: वेश बदलकर उससे मिलती रही। मैंने उसे पैसा दिया और एक अच्छे व्यापारी के रूप में स्थापित किया और वह, जैसा तुमने देखा, नगर का अत्यंत धनी आदमी बन गया।

''एक दिन मैं अचानक उससे मिलने गई और सामान्य रूप से बिना बताए उसके कमरे में गई तो मेरी घृणा, मेरे क्रोध की हद न रही—मैंने उसके लिए क्या कुछ नहीं किया था लेकिन क्या देखती हूँ कि वह किसी दूसरी औरत

को लिये बैठा था। वह उसमें इतना खोया हुआ था कि कई मिनटों तक उसे कमरे में मेरे आने का पता ही नहीं चला। उसकी कृतघ्नता और विश्वासघात के लिए मैंने उसे डाँटा और उस औरत को पीटा जिसके साथ वह बैठा हुआ था। वह एक शब्द भी नहीं बोला, परंतु कमरे से बाहर निकल गया। फिर वह दो आदमियों को साथ लेकर लौटा जिन्होंने मुझे तुरंत पकड़ लिया और शरीर पर कई घाव किए। यह सोचकर कि मैं मर चुकी थी, मुझे कफन में डाला और नगर से बाहर ले गए, फिर दीवार से कब्रिस्तान ले जाकर मकबरे में रख दिया जहाँ परमात्मा ने मुझे बचाने के लिए तुम्हें भेजा। अब उठो, मेरे पिता के पास जाओ और मेरे प्रकट होने की सूचना देकर उन्हें खुश कर दो, वह तुम्हें अच्छा इनाम देने में पीछे नहीं रहेंगे।''

उस प्रात:काल जब राजकुमारी अपने व्यभिचारी प्रेमी से मिलने गई थी, राजा अपनी बेटी के लिए उदास हो गया था; उसने इसे नगर और उसके आसपास ढुँढवाया, परंतु व्यर्थ। यह समझते हुए कि वह स्वेच्छा से महल छोड़कर चली गई होगी; राजा ने प्रण किया कि उसके मिल जाने पर वह उसका विवाह एक मोची से कर देगा ताकि उसे दंड मिल जाए।

जब सय्यद महल में पहुँचा तो उसने मुख्यमंत्री से राजा के सामने पेश होने की इच्छा जाहिर की और जो कुछ वह राजा को उसकी बेटी के बारे में कहना चाहता था, वह सब मुख्यमंत्री को बता दिया। मुख्यमंत्री उसको राजा के पास ले गया जो बेटी की सुरक्षा के बारे में सुनकर अत्यंत खुश हुआ और उसको लाने के लिए तुरंत प्रबंध किया। इस बात की संतुष्टि हो जाने पर कि वह निर्दोष थी, राजा ने उसकी दोनों आँखों को चूमा और महल में लौट आने के लिए स्वागत किया तथा उसका विवाह मोची के साथ करने के अपने विवेकहीन प्रण पर खेद किया।

प्रसन्नता के पहले फुटाव के पश्चात् राजा उदास होकर बैठ गया, जैसे दु:खी हो कि अब किया क्या जाए!

मुख्यमंत्री ने उसकी उदासी का कारण पूछा और जब उसने बताया तो मुख्यमंत्री ने उसे खुश होने के लिए कहा कि परमात्मा की इच्छा थी कि उनकी बेटी का विवाह सय्यद से हो क्योंकि वह अपने नगर गजनी में मोची का काम करता था।

फिर राजा की प्रसन्नता की सीमा न रही और उसने अपनी बेटी सय्यद को सौंप दी; भारी दहेज दिया और अपने राज्य के एक प्रदेश का राज्यपाल बना दिया।

इस प्रकार सय्यद राजा का दामाद बन गया और फकीर के साथ की गई भलाई और उसके परामर्श का पालन करने के लिए उसे उचित इनाम मिल गया!

❑

प्रतिज्ञा

—समरसेट मॉम (इंगलैंड)

मेरी पत्नी वक्त की पाबंदी नहीं समझती, इसलिए जब मैंने क्लेरिजज में उसके साथ दिन के खाने का निश्चय किया तो मैं दस मिनट देर से पहुँचा और उसे वहाँ न पाकर मैं चकित नहीं हुआ। मैंने कॉकटेल का आदेश दे दिया। ऋतु अपने यौवन पर थी। लाउंज में दो-तीन मेजें खाली थीं। कुछ लोग खाने के बाद कॉफी पी रहे थे, दूसरे मेरी तरह मार्टीनी से खेल रहे थे। गरमियों के फ्रॉक पहने औरतें प्रसन्न और मनोहर लग रही थीं और मर्द सुशील; परंतु मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नजर नहीं आया जिसकी आकृति मेरी प्रतीक्षा के पंद्रह मिनटों तक मुझे व्यस्त रखने में पर्याप्त रुचिकर होती। वह पतले, दिखने में प्रसन्न, ठीक पोशाक पहने, चिंतारहित शांत थे, परंतु उनमें से बहुत ऐसे आकार के थे जिनको मैंने हैरानी की अपेक्षा धैर्य से देखा। दो बज चुके थे और मुझे भूख लग रही थी। मेरी पत्नी ने मुझे बताया था कि वह न तो फिरोजा और न ही घड़ी पहन सकती थी क्योंकि फिरोजा हरा हो जाता है और घड़ी रुक जाती है; वह इसका कारण भाग्य का बड़ा दोष मानती थी। मुझे फिरोजे के बारे में कुछ नहीं कहना, परंतु कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि वह चाबी दे देती तो घड़ी चल सकती थी। मैं यही सोच रहा था कि एक अनुचर आया और उसने शांत भाव से, जिससे होटल के अनुचर प्राय: प्रभावित करते हैं, मुझे बताया कि एक महिला ने यह कहने के लिए फोन किया है कि उसे रुक जाना पड़ा है और मेरे साथ दिन का खाना नहीं खा सकती।

मैं हिचकिचाया। यह बहुत मनोरंजक नहीं लगा कि भीड़-भाड़वाले जलपानगृह में कोई अकेला खाए, परंतु क्लब जाने के लिए देर हो चुकी थी, इसलिए मैंने फैसला किया कि जहाँ हूँ वहीं रहूँ। मैं खाने के कमरे में चला गया। इससे मुझे कभी भी संतोष नहीं हुआ (जैसाकि बहुत सुंदर व्यक्तियों के साथ होता देखा जाता है) कि लोकाचारी जलपानगृहों के मुख्य वेटर मुझे नाम से जानें, परंतु इस अवसर पर मैं वास्तव में कम पथरीली आँखों से स्वागत करवाने में खुश होता। लड़ाकू और स्थिर चेहरेवाले होटल के मैनेजर ने मुझे बताया कि मेज पहले से रुकी हुई थी। मैंने असहाय होकर बड़े और वैभवयुक्त कमरे के चारों ओर देखा और अपने जाननेवाले को अचानक देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। लेडी एलेजाबिथ वर्मोंट एक पुरानी मित्र थी। वह मुसकराई और यह देखकर कि वह अकेली है, मैं उसके पास पहुँचा।

''क्या एक भूखे आदमी पर दया करोगी और मुझे अपने पास बैठने दोगी?'' मैंने पूछा।

''ओह, क्यों नहीं, लेकिन मैं लगभग समाप्त कर चुकी हूँ।''

वह एक बड़े खंभे के पास छोटी मेज पर बैठी थी और जब मैं बैठा तो भीड़ का ध्यान न करते हुए मैंने महसूस किया कि हम लगभग एकांत में बैठे थे।

''यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है, '' मैंने कहा, ''मैं भूख के कारण बेहोश सा हो रहा था।''

उसकी मुसकराहट सुहावनी थी; इससे उसका चेहरा अचानक ही देदीप्यमान नहीं होता था अपितु धीरे-धीरे प्रसन्नता से फैलता था। वह क्षण भर के लिए अपने होंठों में हिचकिचाती थी जो हौले-हौले उसकी बड़ी चमकदार आँखों तक चलती थी और वहाँ कोमलता से सुस्ताती थी। कोई भी विश्वास से यह नहीं कह सकता था कि एलेजाबिथ वर्मोंट को सामान्य साँचे में ढाला गया था। जब वह लड़की थी, मैंने उसे कभी नहीं जाना था, परंतु कई लोगों ने मुझे बताया कि वह इतनी प्यारी थी कि व्यक्ति की आँखों में आँसू ले आती थी, वह अब भी अद्‌वितीय थी। उसका हत्यारा रूप, जवानी की ताजा और खिलती हुई सुंदरता को धुँधला बनाता था। मुझे रंगे हुए चेहरे अच्छे नहीं लगते क्योंकि सभी एक जैसे नजर आते हैं; मेरा विचार है कि औरत पाउडर, रुज और लिपस्टिक से अपनी आकृति

और व्यक्तित्व को धुँधला बनाकर मूर्खता करती है, परंतु एलेजाबिथ वर्मोंट प्रकृति की नकल करने के लिए नहीं अपितु उसे उन्नत करने के लिए चेहरा रंगती थी; तुम साधनों के बारे में प्रश्न नहीं करते बल्कि परिणामों को सराहते हो। अकड़ाऊ उत्साह, जिसके साथ वह प्रसाधनों का प्रयोग करती थी, उसके संपूर्ण चेहरे के लक्षणों को घटाने की बजाय बढ़ाता था। मेरा विचार है कि वह बालों को रंगती थी, वे काले, चिकने और चमकीले थे। वह अपने आपको सीधा रखती थी जैसे उसने इधर-उधर झुकना कभी सीखा ही न हो और वह पतली थी। वह काली साटन की पोशाक पहने हुए थी जिसकी धारियाँ और सादगी प्रशंसनीय थीं। उसके गले में मोतियों की लंबी माला थी। उसका केवल दूसरा रत्न बड़ा पन्ना था जो उसकी विवाह की अंगूठी की रक्षा कर रहा था और उसकी धुँधली ज्योति उसके हाथ की सफेदी को पक्का बना रही थी लेकिन लाल नाखूनोंवाले उसके हाथ स्पष्ट रूप से उसकी आयु के साथ विश्वासघात कर रहे थे। उनमें लड़की की कोमलता और गड्ढेवाली गोलाई नहीं थी और तुम उसको बिना डरे देख नहीं सकते थे। शिकारी पंछी के पंजों की तरह तत्काल दिखाई दे जाते थे।

एलेजाबिथ वर्मोंट स्मरणीय महिला थी। वह उच्च परिवार में जनमी थी और सातवें ड्यूक ऑफ सेंटअर्थ की बेटी थी; उसने अठारह वर्ष की आयु में एक बहुत धनी पुरुष से विवाह किया था और तुरंत ही चकित करनेवाली फिजूलखर्ची, लंपटता और नाश का जीवन आरंभ कर दिया था। वह सावधानी के प्रति अधिक अभिमानी, परिणामों को सोचने में धृष्ट थी और दो वर्षों में ही भयानक कलंक के हालात में उसके पति ने उसे तालाक दे दिया था। फिर उसने मुकदमे के तीन प्रतिवादियों में से एक के साथ विवाह कर लिया था और अठारह महीनों के बाद उसे भी छोड़कर भाग गई थी। फिर प्रेमियों की लाइन लग गई। वह अपनी लंपटता के कारण बदनाम हो गई। उसकी चौंका देनेवाली सुंदरता और कलंकित व्यवहार उसे जनता की दृष्टि में ले आए और लोगों को उसके बारे में बातें बनाने में देर नहीं लगी। अच्छे लोगों के नथुनों में उसका नाम सड़ने लगा। वह जूआ खेलती थी, वृथा व्ययी और मर्यादाहीन औरत थी। वह भले ही अपने प्रेमियों के प्रति ईमानदार नहीं थी तो भी अपने मित्रों के साथ अचल थी और कुछ हमेशा उसके साथ रहे जो उसे कभी आज्ञा नहीं देते थे। जो कुछ वह करती थी, जैसी भी थी, वह एक बड़ी अच्छी औरत थी। उसके पास खरापन था, उत्तम चित्तवृत्ति और साहस था। वह कभी भी पाखंडी नहीं रही थी और उदार एवं सच्ची थी। यह उसके जीवन का वह समय था जब उससे मेरी जान-पहचान हुई थी। क्योंकि महान् महिलाओं के लिए धर्म फैशन के बाहर की चीज है, जब उनकी भरसक निंदा होती है तो वह कला में मिथ्या रुचि लेने लगती है। जब वह अपनी श्रेणी के सदस्यों से शीतल व्यवहार पाती है तो कभी-कभी लेखकों, चित्रकारों और गायकों की समिति की ओर उसका झुकाव हो जाता है। मुझे एक प्रिय साथी मिला। वह उन धन्य व्यक्तियों में से एक थी जो जैसा सोचते हैं, उसे वैसा ही निडरता से कहते हैं (इस प्रकार उपयोगी समय बचाते हुए), वह हँसमुख थी और हमेशा अंधकारमय अतीत की बात करना चाहती थी (रसिकता को बदलते हुए)। उसकी बातचीत उपदेशहीन होते हुए भी अच्छी थी क्योंकि सबकुछ न जानते हुए भी वह सच्ची औरत थी।

फिर उसने बहुत ही अद्‌भुत बात की। चालीस वर्ष की आयु में उसने एक इक्कीस वर्ष के लड़के से विवाह कर लिया। उसके मित्रों ने कहा कि यह उसके जीवन का अत्यंत पागलपन का काम था; और जो थोड़े-बहुत उसके अधिक निकट रहे थे, यह सोचकर कि लड़के की अनुभवहीनता से लाभ उठाना लज्जाजनक था, उन्होंने अपने संबंधों को जारी रखना बंद कर दिया। यह वास्तव में सीमा थी। उन्होंने एलेजाबिथ वर्मोंट के लिए विपत्ति की भविष्यवाणी की, क्योंकि वह एक आदमी के साथ छह महीनों से अधिक रहने योग्य नहीं थी; न ही वह इसकी आशा करते थे क्योंकि लगता था कि उस अभागे युवक के लिए केवल अवसर था कि उसकी पत्नी इस प्रकार षड्‌यंत्र का व्यवहार करे कि वह इसे छोड़ जाए। वे सभी गलत सोच रहे थे। मैं जानता था कि उसके हृदय-परिवर्तन

के लिए समय उत्तरदायी था या पीटर वर्मोंट की सरलता और सादे प्यार ने उसके दिल को छू लिया था, परंतु सचाई यह थी कि उसने अपने आपको सराहने योग्य पत्नी बना लिया था। वे निर्धन थे और यह फिजूलखर्च होते हुए भी अल्पव्ययी घरेलू पत्नी बन गई थी और अपने स्वाभिमान के लिए इतनी सजग हो गई कि षड्यंत्र करनेवालों की जुबान बंद हो गई। केवल उसकी प्रसन्नता ही उसका ध्येय थी। कोई भी संदेह नहीं कर सकता था कि वह उसे खूब प्यार करती थी। इतने दिनों तक लोगों की बातों का विषय बनने के बाद एलेजाबिथ वर्मोंट के बारे में बातें बंद हो गईं। ऐसा लगता था जैसे उसकी कहानी सुनाई जाती हो। वह बदली हुई औरत थी और मैंने इस विचार से अपना मन बहलाया कि अपने पूरे सम्मान के लंबे वर्षों के साथ जब यह काफी बूढ़ी हो जाएगी तो अतीत, अंधकारमय अतीत, इसका न रहकर किसी और का होगा जो बहुत पहले मर चुका था और जिसको यह संदिग्ध रूप से जानती थी क्योंकि औरतों के पास भूलने की ईर्ष्यालु शक्ति होती है।

परंतु कौन जानता है कि भाग्य में क्या लिखा है? आँखें झपकते ही सबकुछ बदल गया था। दस वर्ष के आदर्श विवाह के बाद पीटर वर्मोंट एक बारबारा फेंटोन नाम की लड़की के प्रेम में बुरी तरह फँस गया। वह अच्छी लड़की थी और लॉर्ड रॉबर्ट कंटोन, जो कभी विदेशी मामलों का अवर-सचिव था, की सबसे छोटी बेटी थी और स्वच्छ एवं कोमल रूप से सुंदर थी। वास्तव में एक क्षण के लिए भी उसकी तुलना एलेजाबिथ से नहीं की जा सकती थी। बहुत लोग जानते थे कि क्या हुआ था, परंतु यह कोई नहीं बता सकता था कि एलेजाबिथ वर्मोंट को इसका पूर्वाभास था और वे चकित थे कि इस स्थिति से वह कैसे निपट पाएगी जो उसके अनुभव में एक प्रकार से विदेशी थी। वही हमेशा प्रेमियों को छोड़ती थी, किसी ने उसे नहीं छोड़ा था। अपनी तरफ से मैंने सोचा कि वह विनीत मिस केंटोन का छोटा सा काम कर देगी। मैं उसे साहस और निपुणता की मूर्ति समझता था, यह सब मेरे मन में था जब हम दिन के खाने के समय गपें लगा रहे थे। उसके व्यवहार में आनंदी, मनोहारी और सामान्य उदारता जैसी कोई चीज नहीं थी जो उसके कष्ट का प्रतीक हो। वह उसी प्रकार बातें करती रही जैसे हमेशा करती थी—सहज में, परंतु अच्छे ढंग और बातचीत के विषयों के भद्देपन के रोचक अनुभव से। मैंने आनंद लिया और इस निर्णय पर पहुँचा कि किसी चमत्कार से उसको पीटर के परिवर्तित भावों का आभास नहीं था और मैंने अपने आपमें यह मानकर व्याख्या की कि उसके प्रति उसका प्यार इतना गहरा था कि वह समझ नहीं सकी कि उसका इसके प्रति कम प्यार था।

हमने कॉफी पी और सिगरेट पीते हुए उसने मुझसे समय पूछा।

''पौने तीन।''

''मुझे अपने बिल के लिए कहना चाहिए।''

''क्या यह दिन का खाना मेरी ओर से नहीं?''

''वास्तव में...'' वह मुसकराई।

''क्या जल्दी में हो?''

''मैं पीटर को तीन बजे मिलने जा रही हूँ।''

''ओह, वह कैसा है?''

''बहुत अच्छा है।''

वह थोड़ी मुसकराई—धीमी और आनंदमयी मुसकराहट—परंतु मुझे लगा कि इसमें मजाक का पुट था। क्षण भर के लिए वह हिचकिचाई, फिर उसने सावधानी से मेरी ओर देखा—

''तुम विलक्षण स्थिति को पसंद करते हो?'' उसने कहा, ''तुम उस संदेह का अंदाजा नहीं लगा सकते जिससे मैं

बँधी हुई हूँ। मैंने आज पीटर को फोन किया और तीन बजे मुझे मिलने के लिए कहा। मैं उसे कहने जा रही हूँ कि वह मुझे तलाक दे दे।''

''नहीं, तुम नहीं, '' मैं चिल्लाया। मेरा चेहरा लाल हो गया और स्मरण नहीं रहा कि मैं क्या कहूँ। ''मेरा खयाल था कि तुम आपस में ठीक-ठाक चल रहे हो।''

''तुम्हारा क्या खयाल है? क्या यह हो सकता है कि वह सब जो दुनिया जानती है, उसका पता मुझे न हो? वास्तव में मैं मूर्ख नहीं हूँ।''

वह इस प्रकार की औरत नहीं थी जिसके लिए यह कहना संभव हो जिसमें किसी को विश्वास न हो और मैं बहाना नहीं बना सका कि जो उसका अभिप्राय था—मैं नहीं जानता था। मैं एक-दो सेकेंड मौन रहा।

''तुम क्यों चाहती हो कि तुम्हें तलाक दिया जाए?''

''रॉबर्ट केंटन गला घोंटनेवाली पुरानी वस्तु है। मुझे शंका है कि वह बारबारा को पीटर से विवाह करने देगा यदि मैं उसे तलाक देती हूँ और मेरे लिए तुम जानते हो, उससे जरा भी फर्क नहीं पड़ता, या पड़ेगा—न्यूनाधिक एक तलाक...।''

उसने अपने कंधे झटकाए।

''तुम कैसे जानती हो कि वह उससे विवाह करना चाहता है?''

''वह सिर से पाँव तक उसके प्रेम में फँसा है।''

''क्या तुमने उससे ऐसा कहा है?''

''नहीं, वह तो यह भी नहीं जानता कि मैं यह सब जानती हूँ। वह सदैव दुर्भाग्यपूर्ण विनीत और प्यारा रहा है। वह प्रयत्न करता रहा है कि मेरी भावनाओं को कष्ट न पहुँचे।''

''शायद यह केवल अस्थायी मूर्खता है, '' मैंने आपत्ति की—''परंतु दूर हो जाएगी।''

''वह दूर क्यों हो? बारबारा युवा है, सुंदर है। वह बहुत अच्छी है। वे एक-दूसरे के योग्य हैं और इसके अतिरिक्त यदि मैं चली जाऊँ तो बुराई क्या होगी? वे दोनों परस्पर प्यार करते हैं और प्रेम में वर्तमान ही महत्त्वपूर्ण होता है। मैं पीटर से उन्नीस वर्ष बड़ी हूँ। यदि कोई आदमी अपनी माँ की आयुवाली औरत से प्यार करना बंद कर दे तो क्या तुम जानते हो कि पुन: उससे प्यार करेगा? तुम उपन्यासकार हो, तुम्हें इससे अधिक मानव स्वभाव को जानना है।''

''तुम यह बलिदान क्यों दे रही हो?''

''दस वर्ष पूर्व जब उसने मुझसे विवाह किया था तो मैंने प्रतिज्ञा की थी कि वह जब चाहे मुझसे छुटकारा पा सकता है। तुम जानते हो, हमारी अवस्थाओं में बहुत अंतर था; मेरे विचार में यही उचित होगा।''

''और तुम प्रतिज्ञा निभाना चाहती हो जिसके लिए उसने नहीं कहा।''

उसने अपने लंबे पतले हाथों को फड़फड़ाया और तब मैंने महसूस किया कि पन्ने की काली चमक में अपशकुन था।

''ओह! मुझे निभाना होगा, तुम जानते हो। व्यक्ति को भद्र आदमी की भाँति व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें सचाई बताने के लिए ही मैं यहाँ दिन का खाना खा रही हूँ। इसी मेज पर उसने मेरे साथ विवाह के लिए इच्छा प्रकट की थी; हम साथ-साथ खाना खाते थे। जानते हो, मैं इसी स्थान पर बैठती थी जहाँ अब बैठी हूँ। क्लेश की बात यह है कि मैं अब भी उसे उतना ही प्यार करती हूँ जितना तब करती थी।'' वह एक मिनट के लिए रुक गई और मैंने देखा, उसने अपने दाँतों को कसा—''ठीक है, मैं सोचती हूँ, मुझे जाना चाहिए। पीटर प्रतीक्षा करवानेवाले मनुष्यों से घृणा करता है।''

उसने मुझे थोड़ी असहाय नजर से देखा और मुझे लगा कि अपनी कुरसी से उठने में कठिनाई महसूस कर रही है, परंतु वह मुसकराई और आकस्मिक चेष्टा के साथ अपने पाँव पर खड़ी हो गई।

''क्या तुम चाहोगी कि मैं तुम्हारे साथ चलूँ?''

''होटल के दरवाजे तक।'' वह मुसकराई।

हम रेस्टोरेंट और लॉज में से गुजरे और जब हम प्रवेश-द्वार पर पहुँचे तो एक द्वारपाल ने चक्रदार दरवाजे को हिलाया। मैंने उससे पूछा, ''क्या उसे टैक्सी चाहिए?''

''नहीं, मैं जल्दी से पैदल ही चली जाऊँगी, आज कैसा प्यारा दिन है!''

उसने अपना हाथ मेरे हाथ में दिया—''तुमसे मिलकर कितना अच्छा लगा। मैं कल विदेश चली जाऊँगी, परंतु मस्त शरद् ऋतु में लंदन में ही रहने की आशा करती हूँ। मुझे फोन जरूर करना।''

वह मुसकराई, सिर हिलाया और चली गई। मैं उसे डेविड स्ट्रीट तक जाते हुए देखता रहा। वायु अभी भी वसंत ऋतु जैसी कोमल थी और छतों के ऊपर छोटे सफेद बादल नीले आकाश में आराम से तैर रहे थे। मैंने अपने आपको बहुत सीधा रखा; उसके सिर का भाग श्रेष्ठ था। उसकी आकृति पतली और लुभावनी थी और आते-जाते लोग उसे देखते थे। मैंने उसे किसी जान-पहचानवाले के सामने सुशोभित रूप से झुकते देखा था जो अपनी टोपी उठाता था और सोचता था कि हजारों वर्षों में भी उसे नहीं सूझेगा कि वह दिल तोड़नेवाली महिला थी। मैं पुनः कहता हूँ कि वह बहुत ही ईमानदार औरत थी...प्रतिज्ञा पूरी करनेवाली!

❑

मनकों की डोरी

—समरसेट मॉम (इंगलैंड)

''**क्या** शुभ संयोग है कि मैं तुम्हारे पास बैठाई गई हूँ।'' जैसे ही हम खाने की मेज पर बैठे—लौरा बोली।

''मेरे लिए।'' मैंने विनीत भाव से उत्तर दिया।

''यह तो देखा जाएगा। मैं तुमसे बात करने का विशेष अवसर ढूँढ़ रही थी। तुम्हें एक कहानी सुनानी है।''

यह सुनकर मेरा दिल थोड़ा बैठ गया।

''मैं चाहूँगा कि तुम अपने बारे में शीघ्र बात करो।'' मैंने उत्तर दिया—''या मेरे बारे में भी।''

''ओह, परंतु मुझे तुमको कहानी सुनानी है। मेरा विचार है कि तुम उसका उपयोग कर सकोगे।''

''यदि तुम्हें कहानी सुनानी है तो ठीक है, परंतु पहले हम मीनू देख लें।''

''क्या तुम नहीं चाहते कि मैं कहानी सुनाऊँ?'' उसने कुछ दु:खी होकर कहा, ''मेरा खयाल है कि तुम प्रसन्न होगे।''

''मैं हूँ। तुमने एक नाटक लिखा है जो मुझे सुनाना चाहती हो।''

''यह मेरे कुछ मित्रों के साथ घटा। यह पूर्णतया सत्य है।''

''यह कोई अनुशंसा नहीं है। एक सच्ची कहानी कभी-कभी इतनी सच्ची नहीं होती जितनी काल्पनिक।''

''इसका क्या अर्थ हुआ?''

''अधिक कुछ नहीं, '' मैंने माना, ''परंतु मैंने सोचा, यह कहानी ठीक है।''

''मैं चाहती थी कि तुम मुझे सुनाने देते।''

''मेरा पूरा ध्यान है। मैं सूप नहीं लूँगा। यह मोटा बनाता है।''

उसने मुझे चिकोटी भरी नजर से देखा और फिर मीनू पर निगाह डाली और हलकी आह भरी।

''ओह, यदि तुम इनकार करोगे तो मैं भी नहीं...। परमात्मा जानता है, मैं अपनी आकृति से खिलवाड़ नहीं कर सकती।''

''और फिर भी क्या कोई इस प्रकार का दिव्य सूप है जिसमें तुम बहुत निराकार क्रीम नहीं डालती?''

''बोर्च, '' उसने आह भरी—''यही एक सूप है जिसको मैं पसंद करती हूँ।''

''चलो छोड़ो, अपनी कहानी सुनाओ और जब तक मछली नहीं आती, खाने को भूल जाओ।''

''अच्छा, मैं वास्तव में वहीं थीं जब यह घटना घटी। मैं लिविंगस्टन परिवार के साथ खाना खा रही थी। क्या तुम लिविंगस्टन परिवार को जानते हो?''

''नहीं, मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं जानता हूँ।''

''ठीक है, तुम उनसे पूछ सकते हो और जो भी कहूँगी, वे हर शब्द की पुष्टि करेंगे। उन्होंने अपनी अध्यापिका को भी खाने पर बुलाया था क्योंकि किसी महिला ने अंतिम क्षणों में इसका प्रबंध किया था। तुम जानते हो, लोग कितने विचारशून्य—और वे तेरह व्यक्ति मेज के इर्द-गिर्द बैठे थे। उनकी अध्यापिका का नाम मिस रोबिंसन था, बड़ी ही भली लड़की, युवती—कोई बीस-इक्कीस वर्ष की और सुंदर। व्यक्तिगत रूप से मैं कभी भी युवा और सुंदर अध्यापिका नहीं रखती। कोई नहीं जानता।''

''परंतु कोई भी अच्छाई की आशा करता है।''

लौरा ने मेरी टिप्पणी पर ध्यान नहीं दिया।

''संभावनाएँ हैं कि वह अपना कर्तव्य निभाने की बजाय, युवा पुरुषों की बाबत सोचने लगे और जब अपने काम में अभ्यस्त हो जाए तो छोड़ जाना चाहे और विवाह कर ले, परंतु रोबिंसन के अच्छे संकेत थे और मुझे कहना होगा कि वह अत्यंत अच्छी और आदरणीय महिला थी। मैं तथ्य-बिंदु से विश्वास रखती हूँ, वह पादरी की बेटी थी।

''खाने पर एक व्यक्ति था, जिसका नाम, मेरा अनुमान है, तुमने कभी नहीं सुना होगा, परंतु जो अपने तरीके से काफी प्रसिद्ध है। वह है काउंट बोर्सेली और वह संसार में सबसे अधिक रत्नों की जानकारी रखता है। वह मैरी लिंगटे, जिसको अपने मोतियों की बड़ी चाहत थी, के निकट बैठा था और बातचीत के दौरान उसने पूछा, जो डोरी वह पहने हुए है, उसके बारे में उसका क्या विचार है। उसने बताया कि वह सुंदर है। इसपर वह उत्तेजित हो गई। उसने बताया कि उसका मूल्य आठ हजार पाउंड है।

'' 'हाँ, इतनी कीमत का होगा।' उसने कहा।

''मिस रोबिंसन उसके सामने बैठी थी। उस सायंकाल वह अच्छी लग रही थी। वास्तव में, मैंने उसकी पोशाक पहचानी, वह सोफिया की पुरानी पोशाकों में से एक थी, परंतु यदि तुम यह नहीं जानते कि मिस रोबिंसन अध्यापिका है तो तुम्हें कभी भी संदेह न होता।

'' 'वह बड़ा सुंदर हार है जो उस युवती ने पहन रखा है।' बोर्सेली ने कहा।

'' 'ओह, वह तो मिसिज लिविंगस्टन की अध्यापिका है।' मैरी लिंगेट ने कहा।

'' 'इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता', उसने कहा, 'वह अति उत्तम मोतियों की डोरी पहने हुए है। इतने बड़े मोती तो मैंने जीवन भर में नहीं देखे। इसका मूल्य पचास हजार पाउंड अवश्य होगा।'

'' 'झूठ।'

'' 'मैं तुम्हें वचन देता हूँ, यह है।'

''मैरी लिंगेट ऊपर झुकी। उसकी आवाज कर्कश थी।

'' 'मिस रोबिंसन, जानते हो, काउंट बोर्सेली क्या कह रहे हैं?' वह चिल्लाई—'वह कह रहे हैं कि मोतियों की डोरी जो तुम पहने हुए हो, पचास हजार पाउंड मूल्य की है।'

''ठीक है, उस समय बातचीत रुक गई ताकि हम सब सुन सकें। हम सबने घूमकर मिस रोबिंसन की ओर देखा। वह थोड़ा शरमाई और हँसी।

'' 'मैंने बहुत अच्छा सौदा किया' उसने कहा, 'क्योंकि मैंने केवल पंद्रह शिलिंग दिए।'

'' 'वास्तव में अच्छा सौदा किया।'

''हम सब हँस दिए, वैसे यह भद्दी बात थी। हमने उन पत्नियों की बात सुनी है जो अपने पतियों को बनावटी मोतियों की डोरी को असली और महँगी बताकर धोखा देती हैं। यह कहानी इतनी पुरानी है जितनी पहाड़ियाँ।

'' 'धन्यवाद।' अपने कथन पर थोड़ा विचार करते हुए मैंने कहा।

''लेकिन यह अनुमान लगाना अति हास्यप्रद होगा कि जिसके पास पचास हजार पाउंड मूल्य के मोतियों की डोरी हो, वह औरत अध्यापिका का काम करते रहना पसंद करेगी? यह स्पष्ट था कि काउंट ने बहुत बड़ी गलती की थी। फिर एक विलक्षण बात हुई। अनुरूपता के लंबे हाथ बीच में आए!

'' 'ऐसा नहीं होगा।' मैंने प्रत्युत्तर दिया—'इसका अधिक अभ्यास हो चुका है। क्या तुमने वह मनोहर पुस्तक नहीं देखी जिसका नाम है—'ए डिक्शनरी ऑफ इंगलिश यूजेज'?'

'' 'मैं चाहता हूँ कि आप उसी समय नहीं टोकेंगे, जब मैं वास्तव में उत्तेजित बिंदु पर पहुँच रहा होऊँ।'

''परंतु मुझे फिर उसी तरह करना पड़ा क्योंकि उसी समय एक ताजा भुनी हुई मछली मेरी बाँईं कोहनी को धीरे-

धीरे उकसाने लगी।

''मिसेज लिविंगस्टन, हमें दिव्य रात्रिभोज दे रही हो?'' मैंने पूछा।

''क्या मछली मोटा करती है?'' लौरा ने पूछा।

''बहुत।'' मैंने एक बड़ा टुकड़ा लेते हुए कहा।

''निरर्थक।'' वह बोली।

''खाओ, खाओ।'' मैंने प्रार्थना की—''अनुरूपता का लंबा हाथ चेष्टा करना चाहता है।''

''ठीक है, उस समय बटलर मिस रॉबिंसन के ऊपर झुका, उसके कान में कुछ कहा। मैंने देखा, वह कुछ-कुछ पीली पड़ गई थी। गालों और होंठों पर रंग न लगाना ऐसी गलती है कि तुम कभी नहीं जान सकते कि प्रकृति तुमसे क्या छल कर जाए। वास्तव में वह चौकन्नी हो गई और आगे की तरफ झुक गई।

'' 'मिसेज लिविंगस्टन, डासन कहता है कि बड़े कमरे में दो आदमी मुझसे तुरंत मिलकर बात करना चाहते हैं।'

'' 'ठीक है, तुम जाओ।' सोफी विलिंगस्टन बोली।

''मिस रोबिंसन उठी और कमरे के बाहर चली गई। वास्तव में हम सबके मन में एक ही विचार उठा, परंतु सबसे पहले मैंने कहा।

'' 'लगता है कि वे कहीं इसको गिरफ्तार करने तो नहीं आए।' मैंने सोफी से कहा, 'मेरी प्यारी, यह तुम्हारे लिए अति भयंकर होगा।'

'' 'बोर्सेली, तुम्हें विश्वास है कि वह असली हार था?' उसने पूछा।

'' 'ओह, बिलकुल।'

'' 'यदि वह चोरी किया हुआ होता तो आज रात उसे पहनने का साहस न करती।' मैंने कहा।

''सोफी अपने शृंगार से दबी मृत्यु की तरह पीली पड़ गई और मैंने देखा कि वह हैरान हो रही थी कि क्या उसके गहनों के डिब्बे में सबकुछ ठीक-ठाक है। मैं केवल हीरों की एक छोटी सी चेन पहने हुए थी तो स्वाभाविक रूप से मेरा हाथ यह देखने के लिए गले तक गया कि वह वहाँ है या नहीं।

'' 'निरर्थक बात मत करो।' मिस्टर विलिंगस्टन ने कहा, 'समझ में नहीं आता कि मिस रोबिंसन को बहुमूल्य मोतियों की डोरी चुराने का मौका कैसे मिला होगा?'

'' 'हो सकता है, उसको किसी ने दिया हो।' मैंने कहा।

'' 'ओह, उसके इतने विलक्षण संकेत थे।' सोफी ने कहा।

''वे हमेशा ऐसे ही होते हैं।'' मैं बोला।

मुझे लौरा को एक बार फिर विवश होकर रोकना पड़ा।

'' 'नहीं लगता कि मामले को स्पष्ट रूप से समझने का तुम्हारा कोई इरादा है।

''वास्तव में मुझे मिस रॉबिंसन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और यह सोचने के लिए मेरे पास कई कारण थे कि वह एक बहुत अच्छी लड़की थी लेकिन यह जानकर सनसनी पैदा होगी कि वह एक कुख्यात चोर और अंतरराष्ट्रीय अप्रतिष्ठित व्यक्तियों की मंडली की सदस्या थी।

''मुझे भयानक रूप से डर है कि फिल्मों में ही इस प्रकार होनेवाली बातें दिखाई जाती हैं।

''अच्छा, हमने हाँफते अनिश्चय से प्रतीक्षा की। कोई सूचना नहीं मिली। मैंने कमरे में हाथापाई की आशा की थी या फिर कम-से-कम एक दबी-दबी चीख! मुझे मौन अपशकुन लगा। फिर द्वार खुला और मिस रॉबिंसन अंदर आई। मैंने तुरंत देखा, गले में डोरी नहीं थी। मैं देख सकती थी कि वह पीली और उत्तेजित थी। वह मेज की ओर

लौटी और मुसकराती हुई उसपर गिर गई।

''किसपर?''

''ओ मूर्ख, मेज पर। मोतियों की डोरी...

'' 'यह डोरी मेरी है।' वह बोली।

''काउंट बोर्सेली आगे को झुका। 'ओह, यह तो नकली है।' वह बोला।

'' 'मैंने तुम्हें बताया था, वह नकली थी।' वह हँस दी। 'यह वही डोरी नहीं है, जो कुछ क्षण पहले मैं पहने हुए थी।' उसने कहा।

''उसने अपना सिर हिलाया और रहस्यमय ढंग से हँसी। हम सब षड्यंत्र में फँस गए। मैं नहीं जानती कि सोफी लिविंगस्टन क्यों अपनी अध्यापिका को इस प्रकार रुचि का केंद्र बनाने में इतनी प्रसन्न थी और मैंने सोचा कि उसके व्यवहार में चरपरेपन की शंका थी, जब उसने सुझाव दिया कि अच्छा होगा कि मिस रॉबिंसन इसकी व्याख्या करे। अच्छा, मिस रॉबिंसन ने बताया कि जब वह बड़े कमरे में गई तो उसने दो आदमी देखे; उन्होंने बताया कि वे जरोट स्टोर से आए थे। उसने अपनी डोरी वहाँ से खरीदी थी, जैसे पहले बताया था—पंद्रह शिलिंग में—और वह इसे वापस ले गई थी क्योंकि उसका कुंदा ढीला था और वह उसी दोपहर में उसे लाई थी। उन्होंने कहा कि मुझे गलत डोरी दे दी गई थी। कोई व्यक्ति असली मोतियों की डोरी को पुनः पिरोने के लिए दे गया था और दुकान के सहायक ने गलती कर दी। मेरी समझ में नहीं आता कि कोई इतना मूर्ख हो सकता है कि वास्तव में बहुमूल्य डोरी को जरोटवालों के पास ले जाए जो इस प्रकार की वस्तु का व्यापार नहीं करते और जिनको असली और नकली मोतियों की पहचान नहीं है लेकिन तुम जानते हो, कुछ औरतें कितनी मूर्ख होती हैं। कुछ भी हो, जो डोरी मिस रॉबिंसन पहने हुए थी, उसका मूल्य पचास हजार पाउंड ही था। उसने स्वभाव से उन्हें लौटा दी—इसके अतिरिक्त वह कर भी क्या सकती थी! मेरा खयाल है कि उसके लिए यह दुखदायी जुदाई होगी—और उन्होंने इसे इसकी डोरी लौटा दी। फिर उन्होंने कहा कि यद्यपि वे वास्तव में किसी प्रकार का उपकार नहीं मानते—तुम जानते हो कि लोग जब व्यावहारिक बनने का प्रयत्न करते हैं तो किस तरह की अनाड़ी और आडंबरपूर्ण बातें करते हैं—उसे शांत करने के लिए या जो भी आप समझें, तीन सौ पाउंड का चेक देने का निर्देश दिया गया था। मिस रॉबिंसन ने वास्तव में हमें चेक दिखाया। वह पंच की तरह प्रसन्न थी।

'' 'ठीक है, यह सौभाग्य की बात थी, नहीं क्या?'

'' 'तुमने ऐसा सोचा होगा। जैसे यह पता चला, वह उसके विनाश का कारण बन गया।'

'' 'ओह, यह कैसे हुआ?'

''हाँ, तो जब उसका छुट्टी पर जाने का समय आया तो उसने सोफी लिविंगस्टन को बताया कि उसने एक महीने के लिए ड्योविले जाने और तमाम तीन सौ पाउंड उड़ा देने का निश्चय किया था। वास्तव में सोफी उसे रोकना चाहती थी और कहा था कि रकम को बचत खाते में जमा करवा दे, परंतु वह नहीं मानी। उसने कहा—उसे ऐसा मौका न पहले मिला था और न फिर दोबारा मिलेगा। वह चाहती थी कि कम-से-कम चार सप्ताह वह राजकुमारी की तरह गुजारे। सोफी कुछ नहीं कर पाई और मामले को जाने दिया। उसने अपने सारे कपड़े, जिन्हें वह नहीं चाहती थी, जिनको सारे ऋतु काल में पहनती थी और जिनसे तंग आ चुकी थी, मिस रॉबिंसन को बेच दिए। उसने कहा कि उसे दे दिए थे, परंतु मेरा अनुमान है कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया था—मैं ललकारकर कह सकती हूँ कि उसने उन्हें सस्ते दामों में बेचा था—और मिस रॉबिंसन बिलकुल अकेली ड्यूविले के लिए चल दी। तुम सोचते होओगे कि फिर क्या हुआ!''

''मैं सोच नहीं सकता।'' मैंने उत्तर दिया—''आशा करता हूँ कि उसे जीवन का अच्छा समय मिला।''

''ठीक है, जब वह लौटने वाली थी तो एक सप्ताह पहले उसने सोफी को लिखा कि उसने अपना इरादा बदल दिया था और दूसरा व्यवसाय अपना लिया था और आशा करती थी कि यदि वह न लौटी तो मिसिज लिविंगस्टन उसे क्षमा कर देगी। वास्तव में विनीत सोफी अति क्रुद्ध हो गई। हुआ यह कि मिस रॉबिंसन ने ड्यूविले में एक अर्जेंटीना निवास को चुन लिया था और उसके साथ पेरिस चली गई थी। तब से वह पेरिस में ही है। मैंने स्वयं उसको फ्लोरेंस में कोहनियों तक कंगन पहने, गले में मोतियों के रस्से लटकाए देखा है। मैंने उसे न देखने का बहाना किया। लोगों का कहना है कि बोएस-दे-बौलोगने में उसका मकान है और मैं जानती हूँ कि उसके पास रॉल्सरॉयस कार है। उसने अर्जेंटीना निवासी को कुछ महीनों में फेंककर एक यूनानी का गला थाम लिया था; मैं नहीं जानती कि आजकल वह किसके साथ है लेकिन सारांश यह है कि वह पेरिस की चतुरतम लोकाचारी वेश्या को भी मात कर रही है।''

''जब तुमने कहा कि उसका विनाश हो गया, तो मैं अनुमान लगाता हूँ कि तुमने इस शब्द का प्रयोग तकनीकी तौर पर किया था।'' मैंने कहा।

''मैं नहीं जानती कि इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है।'' लौरा ने कहा, ''परंतु क्या तुम नहीं सोचते कि तुम इससे कहानी बना सकते हो?''

''दुर्भाग्य से मैं मोतियों की डोरी के बारे में एक कहानी पहले ही लिख चुका हूँ। मोतियों की डोरी के बारे में ही और कहानियाँ कैसे लिखता हूँ?''

''मेरा विचार है कि मैं स्वयं इसको लिखूँ। वास्तव में, मुझे केवल इसके अंत को बदलना होगा।''

''और तुम इसे समाप्त कैसे करोगी?''

''इस तरह, मैं उसकी सगाई एक बैंक लिपिक से करवा दूँगी जो लड़ाई में बुरी तरह से मार गिराया गया था; एक टाँग के साथ या फिर उसका आधा चेहरा उड़ गया था और वह भयानक रूप से निर्धन था और कई वर्षों तक उसके विवाह की आशा नहीं थी और वह नगर के बाहर मकान खरीदने के लिए रकम जमा कर रहा था; वह विवाह तब करता, जब वह मकान की अंतिम किस्त अदा कर देता। फिर वह उसे तीन सौ पाउंड देती और वह विश्वास नहीं करता। वह इतना प्रसन्न होता कि उसके कंधे पर सिर रखकर बच्चों की तरह रोता। वे दोनों नगर के बाहरवाले मकान में जाते और विवाह कर लेते तथा उसकी बूढ़ी माँ उसके पास रहने को आती। वह प्रतिदिन बैंक जाता और यदि वह बच्चे न चाहती तो भी दैनिक अध्यापिका का काम कर लेती। वह बहुधा अपने घावों के साथ बीमार रहता; वह उसकी देखभाल करती और यह सबकुछ हृदयस्पर्शी, मधुर और प्रेममय होता।''

''यह मुझे कुछ भोथरा सा लगता है।'' मैंने कहा।

''हाँ, परंतु कर्तव्यपरायण, न्यायसम्मत।'' लौरा ने कहा।

❑

ठग का ग्रास

—गुमनाम— 15वीं शताब्दी (स्पेन)

मक्का शरीफ की तीर्थयात्रा के लिए जब दो शहरी चलने लगे तो एक देहाती भी उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। चलते समय तीनों ने परस्पर समझौता किया कि मक्का पहुँचने तक खाने-पीने के सामान को बाँटकर खाएँगे। शनैः-शनैः खाद्य-सामग्री कम होती चली गई और अंत में इतनी कम पड़ गई कि उनके पास थोड़े से आटे के अतिरिक्त कुछ न बचा।

यह देखकर शहरियों ने एक-दूसरे से कहा—

''हमारे पास बहुत कम आटा बचा है। हम देख रहे हैं कि हमारा देहाती साथी अधिक खाता है। हम ऐसा क्या करें कि वह आगे कोई रोटी न खा सके।''

उन्होंने परामर्श किया कि आटे की रोटी बना लेते हैं और फिर सो जाते हैं और जो भी उस समय की अद्‌भुत चीज का स्वप्न देखेगा, वह ही रोटी खा लेगा।

उन्होंने भोले-भाले देहाती को धोखा देने के लिए ऐसा सोचा था, परंतु यह भी सत्य था कि देहाती की भूख उन दोनों की भूख से भी अधिक थी और बँटवारे में मिले अपने हिस्से का भोजन उदरस्थ करने के बाद भी वह भूखा ही रहता था, किंतु समझौते के अनुसार वह बाध्य था।

दोनों शहरियों ने एक मोटी रोटी बनाई और पकने के लिए रखकर वे गहरी नींद में सो गए।

भोले-भाले देहाती ने उनके विश्वासघात को भाँप लिया था। वह आधी रात को उठा और आधी पकी रोटी खाकर सो गया।

एक शहरी जगा, जैसे वह स्वप्न में डर गया हो, और उसने दूसरे साथी को आवाज दी। दूसरे ने जगकर पूछा, ''क्या हुआ?''

''मुझे एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया; ऐसा लगा कि दो फरिश्तों ने स्वर्ग के द्‌वार खोले और मुझे ले जाकर परमात्मा के चेहरे के सामने खड़ा कर दिया।''

और उसके साथी ने कहा—

''यह दृश्य वास्तव में अद्‌भुत है, परंतु मैंने देखा कि दो फरिश्तों ने मुझे पकड़ लिया और पृथ्वी को तोड़ते हुए मुझे नरक में ले गए।''

देहाती ने दोनों की बातें सुनी, परंतु सोने का बहाना किए लेटा रहा। शहरियों ने उसे जगाने के लिए आवाज दी। उसने हैरानी से, परंतु सावधानी से पूछा, ''तुम कौन हो जो मुझे आवाज दे रहे हो?''

''हम तुम्हारे साथी हैं।'' उन्होंने उत्तर दिया।

''क्या तुम लौट आए हो?'' देहाती ने पूछा।

''तुम कहाँ से हमारे लौटने की बात कर रहे हो?'' उन्होंने पूछा।

देहाती ने उत्तर दिया, ''मैंने तो देखा कि दो फरिश्ते तुममें से एक को स्वर्ग में ले गए और एक को नरक में। यह देखकर कि तुम दोनों अब नहीं लौटोगे, मैं उठा और रोटी खा गया।''

जो दूसरे को दबाने की सोचता है, वह कभी-कभी स्वयं ही दब जाता है।

❑❑❑